Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म

३४।

जनज्ञान

मासिक

आर्य जनता का प्रतिनिधि प्रकाशन

जनवरी १९७१
माघ संवत् २०२७

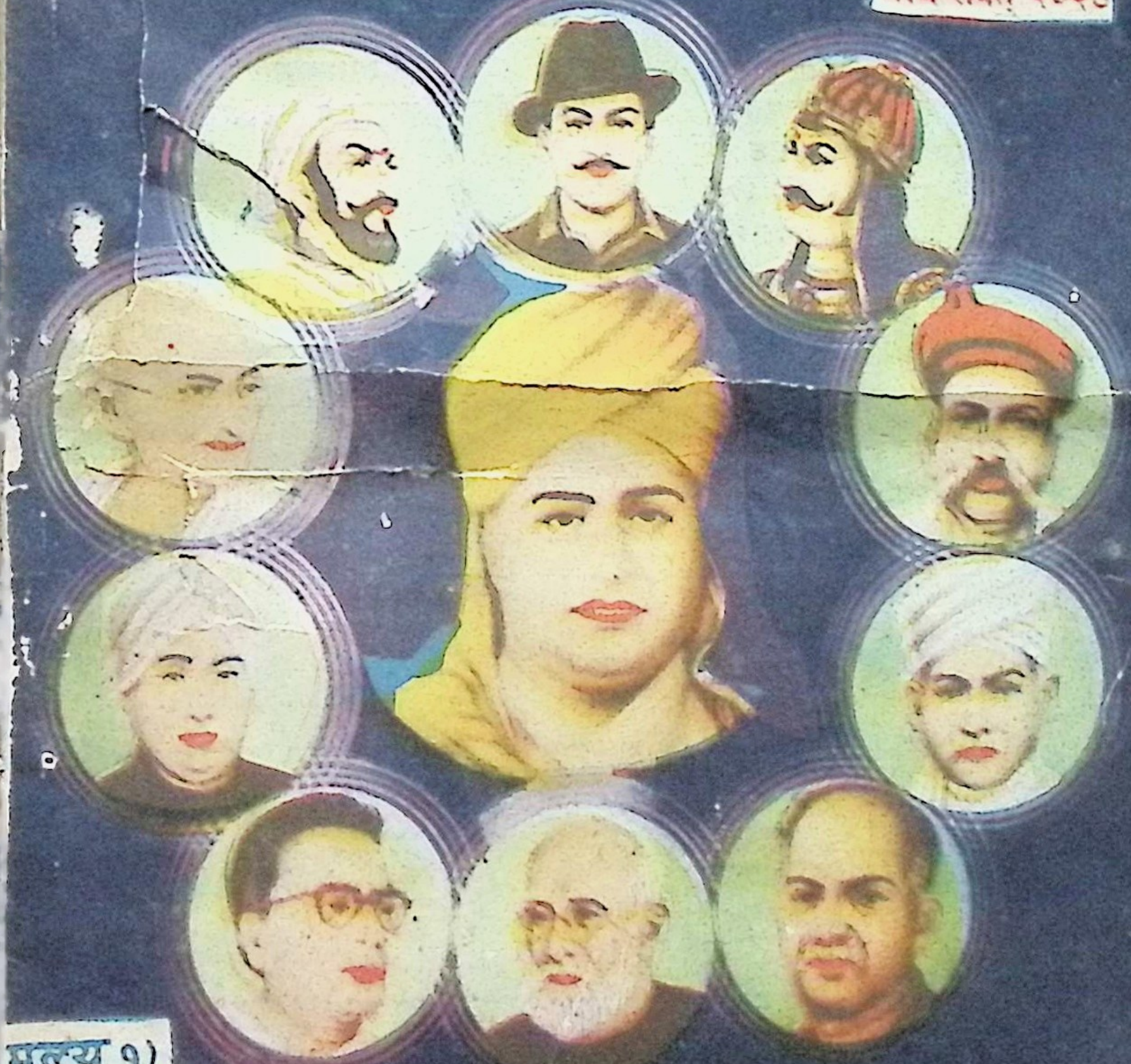

मूल्य १।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

१. ओ मेरे प्रभु ... [कविता] ... ...
२. मन की बात ... ,, ...
३. वेद विचार ... ...
४. संपादकीय
५. मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूं ... —भारतेन्द्र नाथ
६. अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश का उद्घाटन (सचित्र) ...
७. महात्मा आनन्द भिक्षु —(रंगीन चित्र व श्रद्धांजलि) ...
८. सत्यार्थ प्रकाश ... —प्रकाशन की कहानी ...
९. शान्ति का मार्ग —ओम्प्रकाश त्यागी ...
१०. धर्म और विज्ञान —स्व० योगीराज जगन्नाथ "पथिक" ...
११. विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार कैसे हो ? —भेंट श्री दिलीप वेदालंकार से ...
१२. अध्यात्म प्रश्नोत्तर ... ...
१३. पांच महाभय ... —दीनानाथ सिद्धांतालंकार ...
१४. इतिहास को निर्मल रहने दो —कृष्ण चन्द्र विद्यालंकार ... ५०
१५. स्वतंत्रता रक्षा के लिए हम क्या करें ? —नेताओं के मार्ग दर्शक विचार ... ५६
१६. जन्मनाजायते आर्य: —पृथ्वी चन्द एम. ए. ... ६१
१७. नारी जगत ६८
१८. शिशु संसार ७४
१९. भारत के लाल बहादुर ... —रंगीन चित्र ... ८२
२०. धर्मग्रंथावलोकन के कुछ पृष्ठ
२१. अंग्रेजी का एक ओजपूर्ण लेख

अंग्रेजी में महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र छपवाने के लिए अपनी आहुति आज ही भेजें

२५०) देने वालों के नाम ग्रंथ में प्रकाशित होंगे !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—संरक्षक—
चौ० प्रताप सिंह

★

संचालक
भारतेन्द्र नाथ

★

—संपादक—
—राकेश रानी—

★

रती के प्रत्येक मानव के हृदय
न्दिर पर 'वेद-ज्ञान' की पावन पताका
हराने के लिए

आर्य जनता का
अपना
प्रतिनिधि प्रकाशन

'जन-ज्ञान'
(मासिक)

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग
(निकट ३१ नाईवाला)
करोलबाग, नई दिल्ली-५

फोन : ५६६६३९

वार्षिक मूल्य	१०)
एक प्रति	१)
विदेश में	एक पौण्ड
वर्ष ३	अंक ९

मूल्य

ओ मेरे प्रभु !

अंधेरे में प्रकाश दो,
उजाले में, राह दो !
भटकूं नहीं, अटकूं नहीं,
बढ़ता जाऊं, आगे आगे,
ओ मेरे भगवान !
मुझे बुद्धि दो, विकास दो !

मैं तुम्हारा हूँ,
तुम्हारा ही सदा रहूँ,
तुम्हें जानूं, मानूं
तुम्हारा ही पुजारी रहूँ,
भटकूं न कभी
ऐसे प्रभु भाव दो !

तुम मेरे जीवन हो,
माता हो, पिता हो,
बंधु, प्रियतम हो
तुम्हें भूलूं न कभी
ओ जीवन धन,
ऐसी गति, प्राण दो !

प्रकाश मिलता रहे,
विकास होता रहे,
बढ़ता रहूँ, चलता रहूँ
झंकृति दो, ज्ञान दो !
ओ मेरे प्रभु !

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन की बात

दूर तक दिखती नहीं आशा किरण है,
जिन्दगी अभिशाप बन कर रो उठी है,
बह रहे हैं सब विषैली बाढ़ में,
स्वप्न सारे सुखद सुन्दर खो गये हैं।

प्रश्न जीवन का नहीं, आनन्द का है,
धर्म है अभिशाप सारे स्वर बिखरते,
घूमते हैं काल चक्कर की धुरी पर,
लग रहा जैसे जनाज़ा उठ रहा हो।

मौत मेरे द्वार पर है आ विराजी,
किन्तु मुझ को कुछ खबर इस की नहीं है।
आंख मूँदे, मौन बैठा सोचता हूँ,
मैं अजर हूँ, मैं अमर हूँ, मैं सदा यूँ ही रहूँगा।

काल की गति कब रुकी है, जो रुकेगी,
मौत आयी, कब टली है जो टलेगी,
सब जलेगा, राख होगा, बच न पाएगा,
हम न जागे तो यहाँ कुछ रह न जाएगा,

आत्म वंचन छोड़ कर हम सत्य को समझें अगर,
दोष अपने देख कर, स्वयं को बदलें अगर,
जो कहें वह ही करें, राह पर अपनी चलें,
तो देश मेरा, धर्म मेरा, काल पर जय पाएगा

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद विचार

राज्य आदि ऐश्वर्य प्राप्त हों !

इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयिः वः कामधरणं भूयात्।।

यजु : ३।२७।।

पदार्थः—हे परमेश्वर ! आपकी कृपा से (इडे) यह पृथिवी मुझको राज्य करने के लिये (आ इहि) अवश्य प्राप्त हो तथा (अदिते) सब सुखों को प्राप्त कराने वाली नाश रहित राजनीति (आ इहि) प्राप्त हो। इसी प्रकार से हे भगवन् ! पृथिवी और राजनीति के द्वारा मुझे (काम्या) इष्ट-इष्ट समस्त पदार्थ (आ इत) प्राप्त हों तथा (मयि) मेरे में (वः) उन पदार्थों की (काम धरणम्) स्थिरता (भूयात्) यथावत् हो।

भावान्.—मनुष्यों को उत्तम-उत्तम पदार्थों की कामना निरन्तर करनी चाहिये तथा उनकी प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना पुरूषार्थ सदा करना चाहिये।

—ऋषि दयानन्द

टिप्पणी—हम पृथ्वी के पदार्थों के स्वामी बनें, दास नहीं। स्वामी बनने पर सभी पदार्थ हमारे लिए कल्याणकारी होंगे। राज्य द्वारा हम सुख और आनन्द को पाएं और हमारे राज्य में सब सुखी रहें। हम प्रभु की सब संतान प्रेम से सब पदार्थों का मिलकर उपयोग करें। हम सारी पृथ्वी पर प्रेम का साम्राज्य स्थापित करें। प्रभो, हमें शक्ति दो कि हम सबको तुम्हारी राह पर चला सकें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२५ जनवरी तक दिया जा रहा है—

एक और अवसर
आजीवन सदस्य बनने का

"जन-ज्ञान" के सदस्यों को आजीवन सदस्य बनने का एक और अवसर २५ जनवरी १९७१ तक दिया जा रहा है।

इसलिए आज ही १०१) भेजकर
"जन ज्ञान" के आजीवन सदस्य बनें

- "जन ज्ञान" के प्रसार में हाथ बटाएं
- ऋषि दयानन्द-सन्देश फैलाने का पुण्य कमाएं
- संसार को आर्य बनाने में सहयोग दें।

देरी न करें : आपका सहयोग
ऋषि दयानन्द का काम पूरा कराएगा

श्रद्धा, विश्वास और उदारता से आज ही १०१) भेजिए :

—भारतेन्द्र नाथ
संचालक

कृपया चैक न भेजें। ड्राफ्ट या मनिआर्डर जन-ज्ञान-प्रकाशन के नाम भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादकीय

संघर्ष करो ! संघर्ष !!

स्वतन्त्रता और संघर्ष दोनों एक साथ चलते हैं जो संघर्ष नहीं कर सकता वह स्वतन्त्र नहीं रह सकता, वस्तुतः संघर्ष ही जीवन है।

जीना है तो शान से जियो, कायरों की भाँति जीने का क्या लाभ ? संसार तुम्हारे पीछे चले, तुम्हारे चरणों में झुके, तुम्हारे गीत गाए, ऐसा जीवन जीने के लिए संघर्ष ही एक मात्र मार्ग है।

आत्मोन्नति के लिए भी संघर्ष आवश्यक है। तुम स्वतन्त्र रहना चाहते हो ? पर क्या तुम स्वतन्त्र हो ? क्या तुम्हारी देह पर भी तुम्हारा शासन है ? देखो, ध्यान से, कहीं तुम इन्द्रियों के शासन में परतंत्रता का जीवन तो नहीं बिता रहे!

स्वतंत्रता का प्रथम दर्शन व्यक्ति अपने से आरम्भ करता है। जो अपने पर राज्य नहीं कर सकता वह औरों पर क्या करेगा ? इसलिए पहले अपनी देह के स्वामी बनो। अपने पर अपना राज्य स्थापित करो ! तब देखो विश्व विजय कितनी आसान है ?

मेरे भाई !

स्वतत्रता का मूल्य है संघर्ष ! स्वतंत्रता की रक्षा इष्ट है तो संघर्ष करना होगा। कायर स्वतन्त्र नहीं रह सकते । सर्वस्व त्याग की भावना के बिना वीरता नहीं आ सकती।

तुम कायर क्यों बन रहे हो ? क्यों तुमने हाथों में चूड़ियां पहन ली हैं। तुम्हारी स्वतन्त्रता पर संकट है। भीतर भी बाहर भी सर्वत्र शत्रु तुम्हें मिटाने की तैयारी कर रहे हैं ! और तुम मौन हो .....

स्वन्तत्रता की मांग है संघर्ष करो। दुश्मन को जीवित न रहने दो। जो तुम्हारी मां को ललचायी निगाहों से देखे, उस की आंखें फोड़ दो। जो हाथ उठाए उन्हें काट दो। वीर बनो, वीर !

वीर देश के सपूतो !

रंगरेलियों में पड़े रहे तो तुम्हारा सर्वस्व समाप्त हो जाएगा। आज फिर शिवा प्रताप की भांति शत्रु से जूझने के लिए रण निमंत्रण मिल रहे हैं क्या इन्हें अस्वीकार करके तुम मां की रक्षा कर सकोगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संघर्ष का पहला पाठ त्याग से आरम्भ करो। रिश्वत, भ्रष्टाचरण और आत्मघाती प्रवृत्तियाँ बन्द होनी चाहिएं। फैशन और विलासिता की बाढ़ बन्द होनी चाहिए। घर में, बाहर सादगी ही हमारा आभूषण बने। धन संग्रह हम करें, पर ईमानदारी से। अनैतिक धन मनुष्य का ईमान बेच देता है। यह राष्ट्र द्रोह है।

विशाल धरती पर मनुष्य पशु बन रहा है। उसकी पशुता तुम्हें रोकनी है तुम्हें मनुष्य को मनुष्य बनाना है। सबसे प्यार भी करना है पर, प्यार की सीमा इतनी रहे कि तुम आततायी को सुधार सको।

शान्ति का उपदेश निर्बल को शोभा नहीं देता। शक्ति संपन्न ही शान्ति स्थापित कर सकता है। इसलिए शक्ति संचय करो। बहादुर बनो, हथियार उठाओ। संघर्ष करो। विजय वरो.....

देखो लहराते झंडे की शान झुकने न पाए.....

क्या आप १०१) नहीं भेज सकते ?

मुझे ज्ञात नहीं कि आप की आर्थिक स्थिति कैसी है किन्तु इतना अवश्य कह सकती हूँ कि हमारे मान्य सदस्यों में सैकड़ों ऐसे अवश्य होंगे जिनके लिए १०१) भेजना कठिन नहीं है।

'जन-ज्ञान' ने जो कार्य आरम्भ किया है उसके लिए लाखों रुपया चाहिए। धन कहां से आए ? यह समस्या सदा रहती है। धन के अभाव में सारा कार्य रुका है इस समय भारी बोझ सिर पर है। अंग्रेजी में ऋषि जीवन छपाने के लिए ही हजारों रुपया चाहिए।

हम किस से कहें ? और आप ही नहीं देंगे तो फिर और कौन देगा ? इसलिए मेरी प्रार्थना है कि जैसे भी हो थोड़ा कष्ट उठा कर भी आज ही १०१) भेजकर 'जन-ज्ञान' के आजीवन सदस्य बन जाइए। (यह सुविधा केवल २५ जनवरी १९७१ तक है।)

आप द्वारा भेजी इस राशि से जहां हमें आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा वहाँ आप को भी 'जन-ज्ञान' जीवन भर मिलता रहेगा।

अपने भाइयों और बहनों से मैं ऋषि का कार्य पूरा करने के लिए सहयोग मांग रही हूँ। इस विश्वास से कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे—

आप की बहन

राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

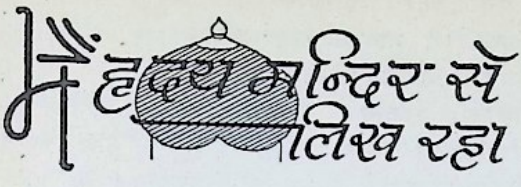

स्वतंत्रता जा रही है.....

१९४७ से १९७० तक, आजादी के २४ वर्ष, राष्ट्र की बर्बादी का महत्व-पूर्ण कलंकित अध्याय हैं। जिन सुनहले स्वप्नों को देखकर भारत के सपूतों ने स्वतंत्रता संग्राम लड़ा था, गोलियाँ खायीं थीं, फांसी के फंदों को हँसते-हँसते चूमा था, उन सुखद स्वप्नों को आजादी के बाद देश के ही कपूतों ने नष्ट कर दिया।

भारत को मिटाने का जो काम औरंगज़ेब की तलवार और अंग्रेजों की मशीनगन न कर सकीं थी उसे हमने स्वयं अपने हाथों बरबाद कर दिया। आजादी मिली थी तो हम आजाद हुए थे उठने के लिए या मरने के लिए। हमें कोई रोकने वाला न था, किन्तु काल की यह विचित्र विडम्बना थी कि हमने आत्म हत्या का मार्ग चुना और सचमुच आज़ादी का वरदान अभिशाप बन गया, हम ने अपने को मिटा दिया। पिछले २४ वर्षों की कहानी हमारी बरबादी की वह कहानी है जिसे पढ़कर इतिहासकार कभी हमें क्षमा न करेंगे। धीरे-धीरे, एक के बाद एक, हम ने वह पग उठाए कि देश पिटता गया, मिटता गया और आजादी का नक्शा गुलामी से भी भयावह रूप धारण करता गया।

स्वतंत्रता ने हमें दिया

१—देश का बंटवारा, लाखों मां-बहनों का अपहरण और मातृभूमि का अंग-भंग,

२—स्वार्थ, भ्रष्टाचार, कुनबा परवरी, और देश भक्ति के स्थान पर "परिवार भक्ति"

३—अंग्रेजी वातावरण, वेश, भाषा और सभ्यता के प्रति असीम मोह,

४—नग्नता, उच्छृंखलता, गुन्डागर्दी और फैशन,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५—शराब, रिश्वत, व्यभिचार, और विलासिता
६—प्रांतीयता, सांप्रदायिकता और भाषावाद के अनेक रोग
७—नक्सलवाद, ईसाइयत और देशद्रोही प्रवृत्तियों की बाढ़
८—विद्यार्थियों में निराशा और उद्दंडता
९—राजनीतिज्ञों में देश भक्ति का अभाव
१०—और संपूर्ण देश में आत्म हीनता और निराशा की भावना।

आजादी का कल्प वृक्ष विष-वृक्ष बन जाएगा, यह कौन जानता था ? और यह भी किसे ज्ञात था कि स्वतंत्रता पाकर इस तरह हम भ्रष्ट हो जाएँगे कि देश के प्रति हमारा प्यार गहराइयों में सो जाएगा और हम भटक कर अपने हाथों अपना घर जलाएंगे।

इस बरबादी के कारणों के विश्लेषण हेतु, पूरे इतिहास को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। किन्तु संक्षेप में भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि जिन हाथों ने शासन संभाला वे सत्ता के मद में कर्तव्य भूल गए। मस्तिष्क इतने बहके कि लक्ष्य भी विस्मृत हो गया। भाषण और नारे बाजी ने कर्म का स्थान लिया। संसद् और विधान सभा के सदस्य घर बनाने में लग गए। राजनीतिज्ञ नाम का एक ऐसा नया वर्ग पैदा हो गया जो केवल कहने में विश्वास रखता है करने में नहीं।

परिणाम स्वरूप आज हमारे देश पर, लहराते हुए तिरंगे पर संकट मंडरा रहा है, भीतर से भी और बाहर से भी। संसार की सारी शक्तियां 'भारत' को मिटाने के लिए योजनाबद्ध ढंग से बढ़ती हुयी चली आ रही हैं। आग जोरों से लगी है, घर जल रहा है फिर भी सबसे विचित्र विडंबना यह है कि घर वालों को पता ही नहीं है कि आग लगी हुयी है।

और यह भी सच है कि इस देश की जनता न जागी तो और कुछ हो न हो भारत से "भारत" मिट जाएगा। राम-कृष्ण, वेद-शास्त्र, ऋषि मुनियों की परंपरा मिट जाएगी। इस देश का महान् गौरव धू-धू कर जलाने के लिए चिता तैयार हो चुकी है, और हम सो रहे हैं।

स्वार्थ हमारा धर्म, धन संग्रह लक्ष्य बन गया है। यदि यह न बदला तो देश नहीं बचेगा। हम इन पंक्तियों द्वारा देश की सोयी आत्मा को जगाने चाहते हैं। भारत के उन वीरों के हाथ में जिन्होंने आज चूड़ियाँ पहन ली हैं तलवार पकड़ाना चाहते हैं। कायरता के स्थान पर शौर्य की धारा बहाना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चाहते हैं। गंगा की अमृत धारा में स्नान करने वाले करोड़ों भारत पुत्रों को हम गंगा की पवित्रता रक्षा के लिए जगाना चाहते हैं।

प्रथम कर्त्तव्य

आज हमारा सब से पहला धर्म है विदेशी संस्कृति के विरुद्ध युद्ध घोषणा। हम यह कार्य अपने घर से आरंभ करें! विदेशी वेश भूषा, भाषा और रहन सहन के ढंग को बदलें। टाई-पैंट पहन अंग्रेजी में बातें कर गौरवान्वित होने वाले वाले व्यक्ति स्वयं सोचें कि क्या उन्हें देश से प्यार है? यदि उत्तर हाँ में हो तो क्या उन का रहन सहन देश की परंपराओं के अनुकूल है? यदि नहीं तो क्या वे इसे छोड़ नहीं सकते?

दूसरा संकट

हमें बढ़ती हुई विदेशी ईसाइयत से है। इस समय तक भारत की २७-२८ हज़ार वर्ग मील भूमि पर व्यवहार रूप में ईसाइयत का साम्राज्य स्थापित हो चुका है। नागालैंड—मेघालय और अनेकों भूखंडों पर आज ईसा का झंडा फहरा रहा है। यह विदेशी शक्तियों का भारत को ईसालैंड बनाने का षड़यन्त्र भारत की स्वतंत्रता पर मंडराता दूसरा संकट है।

और यह प्रांतीयता

तीसरी समस्या हमारे सामने है प्रदेश वाद की। हमारे मस्तिष्क से भारत राष्ट्र का रेखा चित्र मिट रहा है और उभर रहा है प्रदेशवाद। हम पंजाबी, तमिल, बंगाली आदि के रूप में समस्याओं पर सोचते हैं। एक भारतीय के नाते नहीं। देश को बचाना है तो प्रांत मिटाने होंगे। देश का पुनर्गठन करना होगा और सारे देश को प्रशासनिक दृष्टि से ५ भागों में बांट कर समस्त प्रांतीय और विधान सभाओं के सफेद हाथी से छुटकारा पाना होगा। शासन को दृढ़ता से देश की एकता को अक्षुण रखने के लिए सारे देश पर समान नियम और कानून लागू करने होंगे।

सांप्रदायिकता का विषधर

फिर सिर उठा रहा है। दुर्भाग्य से शासन अपने स्वार्थ के लिए केवल हिन्दुओं को सांप्रदायिक घोषित करता रहता है। इस नीति ने देश के टुकड़े कराए और यदि यह न बदली तो आगे भी निश्चित भयावह परिणाम होंगे। कौन इन्कार कर सकता है कि मेरी माँ के टुकड़े कराने के लिए मुसलमान अपराधी हैं। उन्होंने पाकिस्तान बनवाया है, उन्होंने देश में सांप्रदायिकता फैलायी है। उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
मजहब उन्हें प्यार नहीं द्वेष सिखाता है। वे पाकिस्तान की जय से प्रसन्न होते हैं।

हम मानते हैं कि सांप्रदायिकता अपराध है। किन्तु हमें सांप्रदायिकता की परिभाषा करनी होगी और समझना होगा कि जो भारत की परंपराओं का, भारत की भाषा का, भारत की राष्ट्रीयता का विरोधी है, वह सांप्रदायिक है। हम तो मनुष्य मात्र में किसी भी भेद को नहीं मानते। जो मजहब की आड़ में जहरीला प्रचार करते है वे कोई भी हों, उनका फुंकारता फन राष्ट्र रक्षा के लिए कुचलना ही होगा।

और यह नक्सली.....

जिन्होंने बंगाल को बेहाल कर दिया है एक नया सिर दर्द बन गए हैं। पर इनके कई मूल कारण हैं। यह लहर परिणाम है हमारे भटकाव का, हमारी कुशिक्षा का, हमारी अदूरदर्शिता का। नक्सलवाद को हमने और हमारी नीतियों ने जन्म दिया है। दुर्बल हाथों से, बहके दिमागों से और डगमगाते पैरों से शासन करने वाले इस रोग के लिए जिम्मेदार हैं। नक्सलवाद को जन्म उन नेताओं ने दिया है, जो महलों में रहकर समाजवाद के गीत गाते हैं। जो भ्रामक नारे लगाते हैं। जो कहते हुए यह भी नहीं जानते कि वह कह क्या रहे हैं ?

कम्यूनिस्ट, द्रमुक और सारे देश द्रोह पूर्ण तत्व आज अनेक क्षेत्रों में सिर उठाकर दनदना रहे हैं। शासन उनका सिर कुचलने के स्थान पर उन्हें प्रोत्साहित कर रहा है। इसका परिणाम नक्सलवाद नहीं होगा और तो क्या होगा ?

नक्सलवाद का जवाब गोलियो से नहीं त्यागवाद से दिया जाएगा। जिस दिन शासक सेवक बनकर राज्य संभालगें उस दिन नक्सलवाद मिट जाएगा। बेकारी, भूख और गरीबी, का इलाज नारों से करने वाले अपराधी हैं नक्सलवाद को जन्म देने के।

चुनाव की राजनीति

चुनाव अब होंगे मार्च ७१ में ? यह चुनाव राजनीतिज्ञों के मन मस्तिष्क पर छाया है। दुर्भाग्य वश भारत में राजनीति का अर्थ बन गया है निर्वाचनों में भाग लेना। राजनीति और निर्वाचन एक हो गए हैं। कोई सेवा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
नहीं करना चाहता। सब विधान सभा या संसद् के सदस्य बन कर मेवा चाहते हैं।

कम्युनिस्ट हों या जनसंघी द्रमुक हों या अकाली, नई कांग्रेस हो या पुरानी, आर्य राज्य का नारा हो या अनार्य राज्य का, लक्ष्य सब का एक है चुनाव लड़ना। इस चुनाव की घिनौनी बीमारी ने भारत को मृत प्रायः स्थिति तक पहुंचा दिया है।

देश सेवा क्या होती है ? कैसे होती है, सुधार और रचनात्मक काम कैसे किए जाते हैं यह किसी को भी तो मालूम नहीं। जनता को कैसे बहकाया जाए यह सब जानते हैं। नए नारे, नए ढंग जनता से नोट और वोट प्राप्त करने की कला का नाम है अब राजनीति।

राजनीति के इस कुचक्र ने धार्मिक संस्थाओं को भी नहीं छोड़ा। वह हवा बही है कि स्वस्थ सांस लेना भी दूभर है। जनता का धन राजनीतिज्ञों के काम आता है और आएगा। देश मिटता जाएगा, राजनीतिज्ञ उभरते जाएंगे।

भारत की सेवा का मार्ग है रचनात्मक काम। जो राजनैतिक दल सेवा करेगा वह जनता का प्रिय बनेगा। ग्राम और नगरों में फैलते विष प्रवाहों को जो रोके, जनता की कठिनाइयां जो हल करे। घर को फूंके देश को बचाए तो सब का प्यार स्वयं मिले।

नारों से किसी का मूल्यांकन मत करो। सब से पूछो तुम ने क्या किया और क्या कर रहे हो ? वोट और नोट सोच समझ कर देने की आदत जनता में पड़ तो यह रंगे सियार मैदान छोड़ जाएँ। कल तक भूखे फिरने वाले राजनीति में लखपति कैसे बन गए ? यह कारें, कोठियां कहां से आ गयीं ?

सेवा राजनीति का आधार और त्याग धर्म बने तो देश सब समस्याओं से एक वर्ष में मुक्ति पा सकता है।

आर्य समाज के अधिकारियों से !

बहुत सोचने पर भी हम नहीं समझ पा रहे कि आर्य समाज के अधिकारियों को क्या हो गया है कि वे ऋषि दयानन्द के मार्ग से भटक कर पता नहीं कहाँ जा रहे हैं ? बड़े-बड़े भवनों में बैठे प्रधान और मंत्रियों के मस्तिष्क इतने विकृत हो चुके हैं कि उन्हें यह ज्ञात ही नहीं कि आखिर उनका कर्तव्य क्या था ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज की स्थापना जिस पवित्र उद्देश्य से हुयी थी, उस उद्देश्य को हमने सर्वथा भुला दिया है। हमारे पास और सब कामों के लिए समय है यदि नहीं है तो केवल ऋषि उद्देश्य के लिए।

- हम वेद प्रचार नहीं करते
- हम महर्षि दयानन्द के मंतव्य नहीं फैलाते।
- आस पास तक भी वैदिक विचारधारा फैलाने के लिए हमारे पास समय नहीं।
- वैदिक साहित्य न हम पढ़ते हैं न पढ़ाते हैं ?

हमने आर्य समाज को अपनी इच्छा के अनुसार बना लिया है। इस पथ भ्रष्टता को कैसे बदला जाए, यह हम नहीं समझ पा रहे क्योंकि नीचे से ऊपर तक सब बिगड़ चुके हैं। कहीं आर्य समाज के लक्ष्य के प्रति प्यार नहीं दीखता। सब आर्य समाज से अपने को बना रहे दीखते हैं।

यह भवन, यह पूंजी, यह संपत्ति और पद नहीं रहेंगे। सब कुछ मिटने वाला है। जो तूफान आ रहा है उस में सब उड़ जाएगा, जीना है तो सब कुछ स्वाहा कर तूफान से टकराने की तैयारी करो। आर्य समाजों के पास जो भी साधन हैं वह वेद प्रचार में लगाएं। ऋषि के मंत्र को फैलाएँ। सब को यह बताएँ तो सही कि हमारा गुरू क्या चाहता था।

धर्म के नाम पर अधर्म को बढ़ते देख कर हमारा मन व्याकुल है। हम दयानन्द की सेना का अभियान देखना चाहते हैं। नगर-नगर में आर्य समाज को युद्ध शिविर के रूप में देखने की हमारी इच्छा है। पर आर्य समाज के कर्णधार ही प्रगति के मार्ग की बाधा बन गए, बाड़ खेत को खा रही है तो रक्षा कौन करे ?

ऋषि दयानन्द की दिव्य ज्योति से अन्धकार मिटाने का व्रत लेकर तूफ़ानों से टकराने को कौन तैयार है ? कौन लेता है संकल्प पाखंड—खंडिनी उठाकर धर्म, को बचाने का। 'आर्य' संसार को बनाने के लिए कौन उद्यत है सर्वस्व देकर ? भाषण, लेख और प्रस्तावों से काम नहीं चलेगा, अब तो हमें जागरण की शंख ध्वनि के साथ वेद—संदेश फैलाने का निश्चय करना होगा, या फिर मरना होगा ! आर्य बन्धु !

अपने स्वार्थों को जला दो, रूढ़ि परंपराएं तोड़ कर, देखो आंखें खोलकर और चलो गुरू दयानन्द के बताए मार्ग पर, मेरे गुरू का महान् लक्ष्य तुम्हें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुला रहा है, आखिर तुम कब तक सोते रहोगे, भटकते रहोगे, अपने को और अपने साथियों को छलते रहोगे,

अपने साधनों से काम में लगो आगे बढ़ो। देखो दयानन्द की अमर पताका "ओ३म्" की ध्वजा तुम्हें बुला रही है।

स्थान की खोज

प्रभु कृपा और आर्य जन-मानस के मंगल आशीर्वाद से 'जन-ज्ञान' का कार्य इतना बढ़ गया है कि नगर के व्यस्त वातावरण में उस का विकास और अधिक करना कठिन अनुभव हो रहा है। वेद-प्रचार की अनेक रचनात्मक योजनाएं प्रगट होने के लिए उत्सुक हैं।

इसी दृष्टि से उचित स्थान की खोज जारी है। गत सप्ताह आचार्य जगदीश विद्यार्थी व दिल्ली के प्रसिद्ध श्रेष्ठी वैद्य मुरारीलाल जी के साथ दिल्ली के ६०-७० मील के क्षेत्र में स्थान देखने गए। स्थान आकर्षक, उत्तम और प्राकृतिक शोभा से पूर्ण थे। किन्तु वहाँ विकास के लिए भारी मात्रा में धन राशि की आवश्यकता है।

प्रभु कृपा पर सब कुछ निर्भर है। हम अपनी शक्ति भर देव दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को मूर्त रूप देने में लगे हैं और रहेंगे। कोई क्या करता या कहता है इसकी चिन्ता नहीं। हमें जो कहना है वह कर्म से कहें यह हमारी भावना है।

अभी तो हमारे आस-पास भी दयानन्द की जय नहीं हो रही। "हमारा देश ही अनार्य मार्गों का पथिक बन रहा है। मन-मस्तिष्क और बुद्धि का प्रेरक स्वार्थ बन गया है। हम उस क्रान्तियज्ञ का प्रसार करना चाहते हैं जो हृदय मन्दिर को पावन करे।

मन-मन्दिर में आसीन शैतान के स्थान पर प्रभु को विठाने का कार्य आर्य समाज के अतिरिक्त और कौन कर सकता है ? पर करेगा ऋषि दयानन्द का आर्य समाज। वर्तमान आर्य समाज भवन—विद्यालय और आंदोलन— राजा-नीति के चक्र में भटका देव दयानन्द के मार्ग से बहुत दूर जा रहा है। प्रभु हमें शक्ति और प्रेरणा दो कि हमें स्वयं तुम्हारी राह पर चलते रहें—आर्य पथ प्रशस्त हो, सभी तुम्हारे पुत्र बन तुम्हारे ज्ञान के प्रसारक बनें

हमारा प्रभु जब चाहेगा स्थान भी मिलेगा और साधन भी, हमारा कार्य कर्म करते जाना है उसमें शिथिलता न आयी है न आएगी। मंजिल की ओर बढ़ते चरण बढ़ते जाएं, रु कें नहीं, हम तो बस प्रभु से यही मांगते हैं।

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

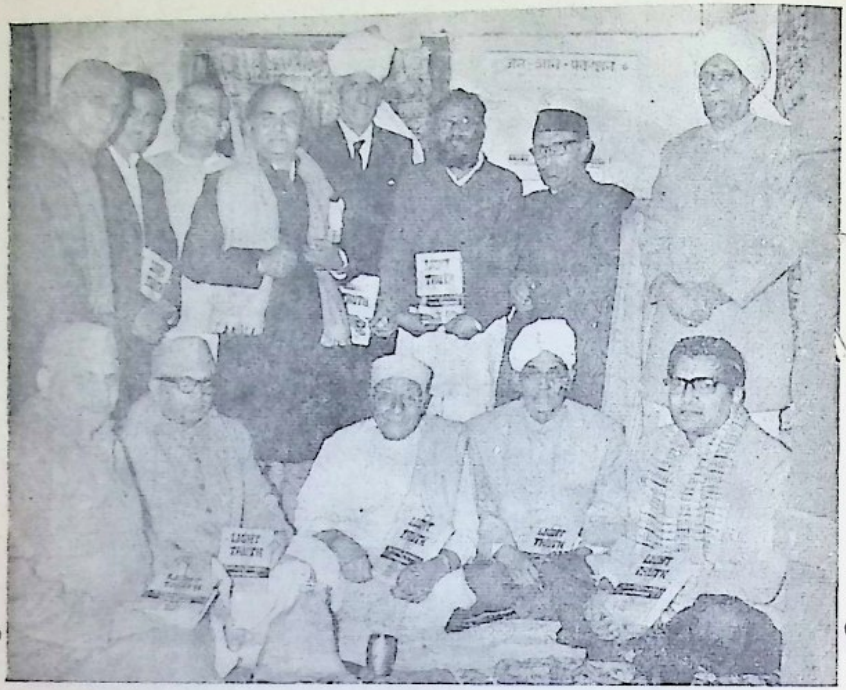

अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश का उद्घाटन

१८ दिसंबर को अत्यन्त सादगी पूर्ण वातावरण में हुआ। यज्ञ के पश्चात् 'जन-ज्ञान' के संरक्षक माननीय चौ० प्रतापसिंह जी ने प्रथम प्रति श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी जी को अर्पित की।

महान् संन्यासी का महान ग्रंथ एक संन्यासी को अर्पित कर 'जन ज्ञान' ने ऋषि के कार्य की पूर्ति में लघु आहुति अर्पित की। इस अवसर पर दाएँ से बाएँ बैठे हैं—पं० भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज, लाला दीवानचन्द जी, व दिल्ली के न्यायधीश माननीय श्री एस० आर० गोयल।

खड़े हुए हैं—श्री पं० विद्याभास्कर शास्त्री, श्री विशम्भर एम० ए० और श्री आनन्द, श्री ओमप्रकाश जी त्यागी संसद् सदस्य राय साहब चौ० प्रतापसिंह जी, आचार्य जगदीश विद्यार्थी एम० ए०, सार्वदेशिक सभा के मंत्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले और पात्र के चतुरसेन जी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा जी ने अपने हाथों से सभी को एक-एक प्रति अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश भेंट में दिया।

यज्ञोपरान्त महात्माजी ने वैदिक विचारधारा भूमंडल पर फहराने के 'जन-ज्ञान' के प्रयत्न की सराहना करते हुए प्रभु से प्रार्थना की कि वह दिन शीघ्र आए जब सारी धरती ऋषि दयानन्द के गीत गाए।

अँग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश के सम्पादक मण्डल के साथ—महात्मा आनन्द स्वामी जी

जन ज्ञान की संपादक श्रीमती राकेश रानी। संचालक—पं० भारतेन्द्र नाथ, संरक्षक—राय साहब चौधरी प्रताप सिंह। महात्मा आनन्द स्वामी जी, सार्वदेशिक अनुसंधान-विभाग के अध्यक्ष आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री व आचार्य जगदीश विद्यार्थी एम० ए०।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा आनन्द भिक्षु

सब जा रहे हैं, नए आते नहीं, स्थान रिक्त हो रहे हैं, इसलिये मन डूब रहा है कि पता नहीं कहाँ जा कर रुकेगा अभियान इस अंत का ?

बाहर से लौटा था ६ दिसबंर को कि बस अड्डे पर ही पता लग गया कि वे चले गए। विश्वास नहीं हुआ, शमशान पहुंचा, उन के अंतिम दर्शन किए, और लगा कि वे अभी अभी प्यार से मुझे बुलाएंगे। पर विधाता के आगे किस का बस है, उनकी देह को भस्मीभूत कर हम सब लौट आए।

आज से १६ वर्ष पूर्व नाभा में उन के प्रथम दर्शन हुए थे। मेरी कथा हो रही थी। रात्रि में ११-१२ बजे किसी ने द्वार खटखटाया। उठा, देखा तो एक महात्मा खड़े थे। परिचय हुआ तो अंतिम समय तक गाढ़ा होता गया, उनका स्नेह सदा मिलता रहा। कभी-कभी मतभेद हुए पर उनका आशीर्वाद तब भी मिलता रहा। ऐसा शायद ही कोई अवसर हो जब वे मिले हों और कुछ न कुछ दिया न हो उन्होंने।

अंतिम बार जब जैन मंदिर मार्ग पर उनसे मिला। तब वे रुग्ण थे। फिर भी अपनी मधुर मुस्कान से प्रेरणा और सहायता देना नहीं भूले। "दहला पागल हो गया" के प्रकाशन ने उनके मन में हर्ष की लहर दौड़ा दी थी। सोचता हूँ ऐसा ऋषि भक्ति अब कहाँ खोजूँगा ?

शब्द नहीं हैं कि उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकूं। वे महान् थे, इसलिए कि स्पष्ट वक्ता थे। कटु सत्य कह सकते थे, सुनकर मुस्करा सकते थे। प्यार उनका मंत्र था और यज्ञ उनका जीवन.....

प्रभु हमें शक्ति दो कि हम यज्ञमय बन उनके चरण में श्रद्धा-पुष्प अर्पित कर सकें।

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

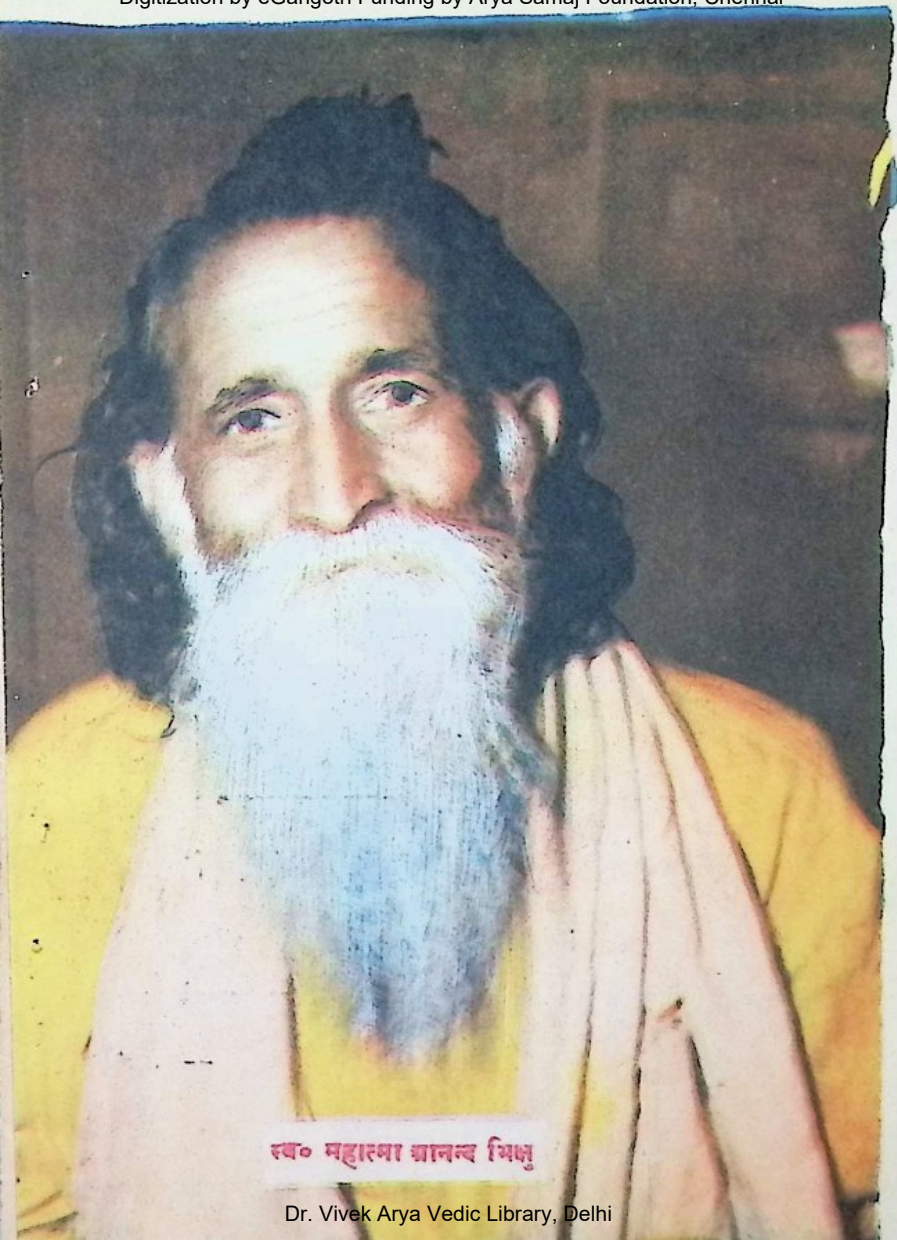

स्व० महात्मा आनन्द भिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वतंत्रता संग्राम की महान् सेनानी

वीरता : त्याग और बलिदान की प्रतीक

धर्म और राष्ट्रीयता की प्रसारक

स्व० पं० विद्यावती जी शारदा

की पावन स्मृति में

स्वतंत्रता दिवस पर 'जन ज्ञान' की हार्दिक श्रद्धाँजलि

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब कह रहा हूँ कहानी
अंग्रेज़ी सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन की

जब ये पक्तियाँ पढ़ेंगे तो सत्यार्थप्रकाश आप देख चुके होंगे। इसलिए अब लिख रहा हूँ अपनी सफ़ाई २ मास की देरी की। पहले इस लिए नहीं लिखी कि आप कहीं कुछ और ही न समझ बैठें।

जब प्रेस में दिया तो एक भी पैसा पास नहीं था। अपील पर कुछ दान आया, कुछ अगाऊ आया, कुछ उधार लिया और तब काम बढ़ता गया। धीरे-धीरे मंजिल पास आयी तो काग़ज समाप्त। एक-दो स्थानों से ऋण लिया पर अपर्याप्त। लगता था भगवान् परीक्षा ले रहे हैं। रातों की नींद उड़ गयी...पता नहीं क्या होगा। एक दिन घर का कुछ सामान भी बेचना पड़ा...और तब गाड़ी किसी तरह मंज़िल पर पहुँची।

धन्यवाद उस प्रभु का कि ग्रंथ आप तक पहुंच गया। कितनी बड़ी उलझन थी, कितनी परेशानी थी, मैं जानता हूँ या मेरा भगवान्। प्रभु ने लाज रखी, कभी-कभी सोचता हूँ कि कहीं मैं भटक तो नहीं रहा? क्योंकि आज साहित्य का महत्त्व कोई नहीं मानता। जिन के पास शक्ति है उन की दृष्टि में तो यह व्यर्थ का काम है। कई साथी मुझे मूर्ख भी कहते हैं। सब की सुन लेता हूँ पर कभी भी अपनी मूर्खता पर मुझे ग्लानि नहीं होती। मेरा बस चलता तो इसे २) में देता, १ लाख छापता। मन तो दयानन्द की बात दुनियाँ तक पहुँचाने के लिए विह्वल हो उठता है। पर साधन कहाँ से लाएँ.....

और अब चिन्ता लगी है ऋषि दयानन्द का जीवन छपाने की। यह सत्यार्थ प्रकाश से भी सुन्दर छपाना चाहता हूँ। हजारों का व्यय है और जेब खाली है। प्रेस में ऋषि जीवन छप रहा है। सोचता हूँ शायद ऋषि दयानन्द के अनुयायियों तक मेरी पुकार पहुंच सके और वे भूखे रह कर भी साधन जुटा दें और मेरे गुरु का जीवन अच्छे रूप में फैल सके।

चाह बहुत है। राह प्रभु और ऋषि के भक्त बनाएँगे.....काश कि हम साहित्य का महत्त्व समझ सकते?

हाँ, अब आप यह देख लें कि आप की आहुति का सदुपयोग हुआ या नहीं। सत्यार्थप्रकाश आपके पास पहुंच गया। अगर यह काम ठीक हुआ हो तो मैं यह प्रार्थना करने का अधिकारी हूँ कि—

जैसे भी हो ऋषि जीवन छपाने के लिए आहुति भेजें—

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—: जन-ज्ञान-प्रकाशन सगर्व भेंट करता है :—

महर्षि दयानन्द का अपूर्व अंग्रेजी जीवन चरित्र

Life & Teachings of Swami Dayananda Saraswati

By

Late Bawa Chhajju Singh

अनेकों रंगीन व आकर्षक चित्रों सहित

मूल्य सजिल्द १०)

किन्तु २५ जनवरी १९७१ तक

केवल ५) प्रति : डाक व्यय अलग

कृपया आदेश के साथ धन अवश्य भेजें

— आपने अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश देखा, यह प्रकाशन उससे भी सुन्दर होगा —

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोकसभा भंग हो गई···अब चुनाव होंगे—आपका कर्तव्य

२७ दिसम्बर को भारत के राष्ट्रपति ने मंत्रिमण्डल की सलाह पर सर्वोच्च सत्ता लोकसभा को भंग कर दिया। ठीक किया या ग़लत इसकी विवेचना का अब समय नहीं। अ तोब मार्च के प्रथम सप्ताह में निर्वाचन होंगे।

निर्वाचन वरदान हैं यदि मतदाता शिक्षित हों तो, पर अशिक्षित और भटके मतदाताओं के देश में ये अभिशाप हैं। फिर भी वे होंगे, वोट पड़ेंगे और फिर जनता के प्रतिनिधि देश का शासन संभालेंगे।

हमारी प्रधान मन्त्री देश को जो कुछ बनाना चाहती हैं उसकी रूप रेखा सब जानते हैं। अब तो यह निर्णय करने का अवसर आ गया है कि हम भारत को क्या बनाना चाहते हैं? इन्दिरा फ़िरोज़ गांधी का भारत या गांधी का भारत, राम-कृष्ण ऋषि-मुनियों की परंपरा स्थापित रखनी है, वेद-धर्म और गौ-गंगा को बचाना है तो वोट की चोट से देश-द्रोही तत्त्वों को समाप्त करने की पावन वेला आ गयी।

चुनाव को एक पवित्र यज्ञ समझो। इसमें वह सब जला दो, जो देश को जला रहा है। शहीदों के पावन बलिदानों का मोल चुकाने का अवसर आ गया है। हजारों गाएँ प्रति दिन कट रही हैं। अराष्ट्रीय ईसाई-मुसलमान, देश-द्रोही बढ़ रहे हैं। बढ़ रहा है व्यभिचार-गुंडा-गर्दी और भ्रष्टाचार। वोट ही वह अस्त्र है जो ठीक इस्तेमाल किया जाय तो सारी समस्याएँ सुलझ सकती हैं।

अपना वोट उस व्यक्ति को दो जो भारत का भक्त है। जो भारत की परंपराओं का पुजारी है

यह परीक्षा है हम सब की—हमारी देश-भक्ति की। देखना यह है कि विजय देश-द्रोहियों की होती है या देश-भक्तों की।

"आर्य" व्यक्ति जहाँ जो भी खड़े हों उनका समर्थन सभी पूरी शक्ति से करें। जहाँ आर्य न हों वहाँ देखें, ध्यान से, कि कौन भारतीयता की—भारत की रक्षा कर सकता है। आपका वोट उसी को मिलना चाहिए। यदि कहीं आर्य और आर्य में ही टकराव हो तो अपनी बुद्धि से योग्यतर व्यक्ति का समर्थन करें।

वोट की शक्ति पहचानिये और उसका प्रयोग कीजिए।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप 'जन ज्ञान' की सहायता इस तरह भी कर सकते हैं

१. जब भी आप को चन्दा समाप्ति की सूचना मिले, आप अपना शुल्क तुरन्त भेज दें।

२. वी. पी. पी. की प्रतीक्षा न करें। वी. पी. पी. में आपको १) अधिक देना पड़ता है जो न हमें मिलता है न आपको। इसलिए धन मनिआर्डर से ही भेजें।

३. यदि किसी कारणवश आप सदस्य न रहना चाहें तो हमें सूचित तो कर ही सकते हैं। आपके १० पैसे का कार्ड हमारे धन और समय की रक्षा कर सकता है।

४. मनीआर्डर के कूपन पर अपना पूरा नाम और पता अवश्य लिखें। सदस्य संख्या या "नया सदस्य" शब्द भी लिख दें।

५. 'जन ज्ञान' आप का अपना पत्र है। इसमें जो भी कमी नज़र आए वह हमें बताएं। हम आपके बल पर इसके द्वारा संसार में आर्य समाज का संदेश फैलाना चाहते हैं। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।—व्यवस्थापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्ति का मार्ग

आज नास्तिक अध्यापक पुनः सक्रिय दिखलाई दे रहा है, और स्कूल के कुछ विद्यार्थियों को लेकर एकान्त में कुछ समझा रहा है। परन्तु विद्यार्थियों की उसके प्रति पहले वाली श्रद्धा समाप्त हो चुकी है। घण्टी बजते ही सब को सभा-स्थल पर जाना पड़ा, अध्यापक मन मसोस कर रह गया। महात्मा जी ने ठीक समय पर अपनी स्वाभाविक मुस्कराहट के साथ अपने विषय को उपस्थित करते हुए कहा—विद्यार्थियो, आपने अब सुख तथा शान्ति के भेद को जानने की इच्छा प्रकट कर प्रवचनों के प्रति अपनी जागरूकता का परिचय दिया है। जिज्ञासा ही ज्ञानवृद्धि का मूलाधार है। आपने जिस महत्त्वपूर्ण विषय की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है वह मानव जीवन से सीधा सम्बन्ध रखता है। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि जीवन क्षेत्र में उतरने से पूर्व वह सुख, शान्ति आदि के स्वरूप से परिचय प्राप्त कर ले ताकि वह इन्हें सरलता से प्राप्त कर सके।

स्थिति यह है कि संसार में अधिकतर लोग अपने जीवन में केवल सुख के ही दर्शन कर पाते हैं उन्हें शान्ति व आनन्द के दर्शन हो ही नहीं पाते। यह बात नहीं है कि वे इन्हें चाहते नहीं या इनकी उपेक्षा करते हैं, परन्तु सच यह है कि उनका आत्मा इनके लिये प्रत्येक क्षण तड़पता रहता है। इच्छा व तड़पन मात्र से किसी वस्तु की प्राप्ति होना कठिन है। किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये शास्त्रकारों ने ज्ञान, गमन और प्रयत्न को सीढ़ी अथवा सही मार्ग माना है। ज्ञान के बिना गमन और प्रयत्न दोनों ही अधूरे हैं। ज्ञान के अभाव से ही लोग शान्ति व आनन्द के दर्शन नहीं कर पाते।

शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा मानव के प्रधान अंग हैं। इन चारों तत्त्वों का एक भाव ही व्यक्ति को पूर्ण बनाता है। इन चारों के ही अलग-अलग स्वभाव व गुण हैं। इनके स्वभाव व गुण की भिन्नता ही सुख, शान्ति व आनन्द की भिन्नता का मूलाधार है। सुख का आधार शरीर, शान्ति का आधार मन व बुद्धि एवं आनन्द तथा परमानन्द का आधार एक मात्र आत्मा है। इस प्रकार जो व्यक्ति अपने को शरीर पूजा तक ही सीमित रखते हैं उन्हें सुख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के बावजूद शान्ति व आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। इन चारों तत्त्वों को समान रूप से साथ लेकर चलने में सुख, शान्ति, आनन्द व परमानन्द की प्राप्ति की आशा की जा सकती है। दुर्भाग्यवश आज संसार के अधिकतर लोग भौतिक वाद एवं भोगवाद के वशीभूत हो अपने को मात्र शरीर मानकर इच्छाओं की पूर्ति में ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा रहे हैं। यही कारण है कि संसार से शान्ति व आनन्द-दिन-प्रति-दिन कूच करते चले जा रहे हैं।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! हमारी तो अब तक यही धारणा रही है कि जो व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से सुखी है वही शान्त भी है, परन्तु आप ने सुख के अतिरिक्त शान्ति, आनन्द, परमानन्द की लम्बी शृंखला उपस्थित कर दी है।

महात्मा—बच्चे ! यह आवश्यक नहीं है कि सुखी व्यक्ति शान्त भी हो। शान्ति का सम्बन्ध मन एवं बुद्धि से है। मन-बुद्धि का स्वभाव व गुण सर्वथा पृथक् है। अतः जब तक ये दोनों संतुष्ट नहीं होते तब तक शान्ति की आशा करना भूल है। एक व्यक्ति स्वस्थ तथा सब प्रकार से सम्पन्न है, परन्तु किसी अन्य व्यक्ति ने उसका अपमान कर दिया। तो फिर वह सब कुछ रहते हुए भी मानसिक दृष्टि से शान्त नहीं रह पाता।

विद्यार्थी—महात्मा जी ! आज संसार का समूचा प्रगतिशील वर्ग क्रान्ति का पुजारी है शान्ति का नहीं। फिर आप शान्ति का प्रचार कर लोगों को प्रगति करने से क्यों रोकते हैं ? क्यों आप उन्हें शान्ति के नाम पर आलसी, प्रमादी व निकम्मा बनाने का प्रयत्न करते हैं ?

महात्मा—अज्ञानी लोग ही शान्ति और क्रान्ति को एक दूसरे का विरोधी मानते हैं। वास्तव में शान्ति और क्रान्ति दोनों का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। क्रान्ति के बिना शान्ति और शान्ति के बिना क्रान्ति अधूरी है। दुर्भाग्यवश मूर्ख लोगों ने शान्ति तथा क्रान्ति दोनों के अर्थों का अनर्थ किया हुआ है। आजकल प्रायः शान्ति का अर्थ किया जाता है प्रगति का अभाव तथा क्रान्ति का अर्थ तोड़-फोड़। परन्तु ये दोनों ही धारणाएं असत्य हैं।

शान्ति शब्द शम् धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से बनता है जिसका अर्थ है उपशमन या समन्वित होना। क्रान्ति शब्द क्रम धातु में क्तिन प्रत्यय लगाने से बनता है जिसका अर्थ है आगे बढ़ना या प्रगति करना। परन्तु लक्ष्य के बिना प्रगति का होना सर्वथा असम्भव है। लक्ष्य के बिना तोड़-फोड़ होना तो सम्भव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
है परन्तु प्रगति नहीं। प्रगति का एक मात्र उद्देश्य मानव समाज में सुख-शान्ति का प्रसार है। इस प्रकार क्रान्ति का लक्ष्य शान्ति है। ठीक इसके विपरीत प्रगति के बिना शान्ति की प्राप्ति कठिन है। शान्ति फल है क्रान्ति का।

शान्ति के स्वरूप को समझाने के लिए लोहे के टुकड़े को लीजिये। एक साधारण लोहे के टुकड़े और चुम्बक लोहे में यही अन्तर है कि साधारण लोहे के अवयव अव्यवस्थित होते हैं और चुम्बकीय लोहे के समस्त अवयव पूर्ण व्यवस्थित होते हैं। साधारण लोहा जब चुम्बकीय लोहे से बार-बार नियमानुसार रगड़ खाता है तो उसके भी अवयव व्यवस्थित हो जाते हैं और वह भी चुम्बकीय लोहा बन जाता है। यदि हम साधारण लोहे को अशान्त तथा चुम्बकीय लोहे को शान्त कहें तो अत्युक्ति न होगी। ठीक इसी प्रकार जब इन्द्रियों, मन और बुद्धि का संयोग होता है तो शान्ति और समन्वय न हो तो अशान्ति होती है। दुर्भाग्यवश लोग इन्द्रियों की इच्छाओं की ही पूर्ति में लगे रहते हैं; परन्तु बुद्धि और मन की उन्हें चिन्ता ही नहीं होती। परिणाम यह होता है कि इन्द्रियों की इच्छायें ज्यों-ज्यों पूर्ण होती जाती हैं त्यों-त्यों मन अशान्त बनता जाता है; और उसकी चंचलता समस्त इन्द्रियों को चंचल व बेलगाम बना देती है।

शरीर रूपी रथ में दश इन्द्रियां दस घोड़ों के समान हैं और मन उनमें लगाम का कार्य करता है। इन्द्रियों की संतुष्टि मन पर ही आधारित होती है। जब तक मन शान्त व संतुष्ट नहीं होता तब तक इन्द्रियों का संतुष्ट होना असम्भव है। इसीलिये सुख-शांति दोनों की ही प्राप्ति के लिये मन को शान्त बनाना परमावश्यक है।

विद्यार्थी—मानसिक शान्ति के शत्रु क्या हैं अर्थात् मानसिक शान्ति क्यों कर भंग हो जाती है ?

महात्मा—मन के अशान्त होने के मुख्य कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, अहंकार आदि हैं। इनके रहते मन को शान्त बनाना सर्वथा असम्भव है।

विद्यार्थी—काम, क्रोधादि उपरिलिखित शान्ति के शत्रुओं की उत्पत्ति का कारण क्या है ?

महात्मा—काम, क्रोधादि गुण मनुष्य शरीर के स्वाभाविक गुण हैं ; और किसी सीमा तक मानव की प्रगति में सहायक भी हैं ; परन्तु जब ये सहायक होते हैं तो इसका रूप दूसरा ही होता है। जैसे अन्याय का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

दमन करने के लिये क्रोध मन्यु बन जाता है, सन्तानोत्पत्ति के लिये काम विषय-भोग के स्थान पर कर्त्तव्य बन जाता है।

काम, क्रोध, लोभ आदि की उत्पत्ति कैसे होती है इसका चित्रण योगीराज कृष्ण महाराज ने गीता में बड़े ही सुन्दर शब्दों में इस प्रकार किया है—

भोगैश्वर्य प्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ।। १२-४४

जो व्यक्ति भोग एवं ऐश्वर्य को ही ध्येय मानकर चलता है उसकी चेतना तथा निर्णायक बुद्धि समाप्त होकर मन को अशान्त कर रहे हैं।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभि जायते ।। २-६२
क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः ।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धि नाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।। २-८३-६३

जब व्यक्ति भौतिक पदार्थों का चिन्तन करता है तो उनके प्रति उसके मन में खिचाव हो जाता है, खिचाव से उनकी प्राप्ति की इच्छा होती है। इच्छा पूर्ति में जब बाधा उत्पन्न होती है तो क्रोध उत्पन्न हो जाता है, क्रोध उत्पन्न हो जाने पर भ्रम का जन्म होकर बुद्धि की स्मृतिशक्ति समाप्त हो जाती है। स्मृति के समाप्त होने से बुद्धि अर्थात् विवेक के नाश हो जाने पर मनुष्य नाश को प्राप्त होता है।

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ।। २।६७ ।।

जो इन्द्रियों के पीछे ही दौड़ता रहता है उसकी विवेक बुद्धि इस प्रकार क्षीण हो जाती है जैसे हवा नाव को अन्य दिशा में बहा ले जाती है।

विद्यार्थी—क्या गीता में इसका उपचार भी बतलाया है ?

महात्मा—हाँ ! उपचार इस प्रकार बतलाया गया है

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थे भ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। २ । ५८ ।।

जो व्यक्ति कछुए की भाँति अपनी इन्द्रियों को अपने अन्दर समेट लेता है अथवा अपनी इच्छाओं को भोग पदार्थों से हटा लेता है उसकी बुद्धि व मन दोनों शान्त हो जाते हैं ?

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।। २ । ५६ ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस व्यक्ति को राग-द्वेष से ऊँचा उठकर निष्काम कर्मों द्वारा दुःख और सुख दोनों में स्थिर भाव से रहने का अभ्यास बन जाय तो फिर शान्ति सदैव उसके पास रहती है।

विद्यार्थी—भौतिक पदार्थों के पीछे दौड़ने तथा राग-द्वेष से प्रभावित होकर कार्य करने का कारण क्या है।

महात्मा—अज्ञान के ही कारण राग-द्वेष उत्पन्न होता है, और मनुष्य शरीर पूजा करता है। शरीर और आत्मा का सही स्वरूप समझ लेने पर भौतिक पदार्थ एवं इन्द्रिय सुखों के प्रति अन्धा मोह समाप्त हो जाता है। इसलिये ज्ञान की प्राप्ति मानसिक तथा बौद्धिक शान्ति के लिये परमावश्यक है। सत्य ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् मानसिक आवेग या तो उठते ही नहीं, यदि कभी उठते भी हैं तो फिर शीघ्र ही शान्त हो जाते हैं क्योंकि राग-द्वेष ही इन आवेगों को बढ़ावा देते हैं; और राग-द्वेष न होने पर इनका बने रहना कठिन होता है।

विद्यार्थी—क्या मन को शान्त बनाने में अन्य का भी कोई हाथ होता है ?

महात्मा—हाँ, अन्न और मन का सीधा सम्बन्ध होता है। मनुष्य जैसा अन्न-ग्रहण करता है वैसा ही मन बनता है। उत्तेजक पदार्थ मन में उत्तेजना तथा सात्त्विक पदार्थ मन में सात्त्विक भावना उत्पन्न करते हैं। ये सात्विक भावनाएँ मन को शान्त रखने में बड़ी सहायक होती हैं।

विद्यार्थी—आप ने व्यक्तिगत शान्ति की प्राप्ति का उपाय तो बतला दिया, परन्तु पारिवारिक शान्ति की प्राप्ति का उपाय नहीं बतलाया। पारिवारिक शान्ति के बिना व्यक्तिगत शान्ति का बना रहना कैसे सम्भव होगा।

महात्मा—आप का प्रश्न बड़ा ही महत्त्वपूर्ण एवं सामयिक है। साधारणतः परिवार या समाज का आधार व्यक्ति ही होता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति शांति प्राप्त कर ले तो फिर परिवार व समाज में स्वतः शान्ति स्थापित हो जाती है। फिर भी परिवार को सुखी व शान्त बनाने के लिए वेद ने ही बड़ा ही सुन्दर उपाय बतलाया है। वेद कहता है—

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्॥

अथर्व ३-३०-२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि परिवार में सन्तान पिता के व्रत का पालन करने वाली हो और माता के मन के अनुकूल आचरण करने वाली हो; और पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के प्रति मधुर तथा शान्तिमय वचन बोलने वाले हो तो उस परिवार में सुख तथा शान्ति आ ही जाते हैं।

विद्यार्थी—आपने पिता, पुत्र, पति-पत्नी के बारे बतलाया है, परन्तु बहुधा संघर्ष सास-बहू में होता है। उसका आपने कोई उपाय नहीं बतलाया है।

महात्मा—भाई सास-बहू का संघर्ष अधिकार का संघर्ष होता है। जब माता-पिता अपनी सतान के विवाह के बाद घर की चाबियां अपने लड़के व बहू को नहीं सौंपते और मरते दम तक चाबियों को अपनी बगल में दबाकर रखना चाहते हैं तो फिर मनमुटाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त जो लड़का परिवार में अपने माता-पिता का उचित आदर व सेवा नहीं करता उसके माता पिता उससे दुःखी रहते हैं। इसीलिये वैदिक धर्म में कहा हैं कि पचास वर्ष की आयु के पश्चात् अपने बच्चों के समर्थ होने पर उन्हें घर का समस्त भार सौंपकर अपना शेष जीवन वानप्रस्थी के रूप में जन-सेवा करते हुए व्यतीत करना चाहिये; और बच्चों को नित्य जो माता-पिता की श्रद्धा-तप अर्थात अन्न-वस्त्रादि से करते रहना चाहिए। ऐसा करने पर परिवार में आपसी संघर्ष के स्थान पर प्रेम की स्थापना होती है।

विद्यार्थी—क्या समाज में सुख शान्ति की स्थापना के लिये भी यही मार्ग है या अन्य मार्ग है ?

महात्मा—समाज में सुख-शान्ति की स्थापनार्थ वेद ने बड़ा ही प्रशंसनीय उपदेश दिया है—

सहृदयं साम्मनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥ अ०—३-३०-१

हे मनुष्यो ! यदि तुम समाज में सुख, शान्ति चाहते हो तो अच्छे हृदय वाले अच्छे मनवाले और द्वेष रहित बनो और एक दूसरे से इस प्रकार प्यार करो जैसे गाय अपने नवजात शिशु से प्यार करती है।

दृते दृ॑ह मा मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे
यजु : ३६-१८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समस्त प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें, और मैं भी सबको मित्र की दृष्टि से देखूं। हम सब एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

सामवेद के अन्तिम संगठन सूक्त के अनुसार

संगच्छध्वं संवदध्वं संवोमनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।

अर्थ—प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।

विद्यार्थी—महात्मा जी! समाज में विषमता हो अर्थात् योग्यता, स्वास्थ्य, प्रगति, सम्पन्नता आदि में विषमता हो। तब अन्यों की अपेक्षा दुःखी, निर्धन, अस्वस्थ व्यक्ति अपने से अच्छे व्यक्तियों को देखकर अशान्त हो जाता है? इसे वह कैसे दूर करे?

महात्मा—भाई दृष्टिकोण का भेद है। अपने से अच्छी अवस्था वालों को देख मनुष्य के आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिये न कि अशान्ति। यदि कोई अपने से अधिक अच्छे लोगों को देखकर अशान्ति लेने का ही आदी हो तो फिर उसे अपने से अधिक दुःखी अस्वस्थ, निर्धन को देखकर अशान्ति को शान्त कर देना चाहिये।

विद्धार्थी—महात्मा जी! शान्ति प्राप्ति का रहस्य हमारी समझ में आ गया है। अब कृपया आनन्द का स्वरूप व उसकी प्राप्ति का उपाय बतलाइए।

महात्मा—मैं क्या करूँ, समय समाप्त हो गया। अब कल ही इस पर प्रकाश डाला जायेगा। इस पर शान्ति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

●

अब समय आ गया है कि हम जागें और वोट की चोट से भारत से अभारतीय तत्त्वों को समाप्त कर दें। देश-द्रोही सिर उठा रहे हैं। उनका फुंकारता फन कुचलने और स्वतन्त्रता देवी की रक्षा के लिए आज भारत माता के सभी पुत्रों को कमर कस कर कर्तव्य का पालन करना होगा।

भोगवाद-फैशन, विलासिता और गुंडागर्दी की समाप्ति के लिए देश को बचाने के लिए भारत के प्रत्येक सपूत को कर्म करना होगा। देरी का समय नहीं, अपना कर्त्तव्य पहचान राष्ट्र की रक्षा कीजिए।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब में आर्य समाज को फैलाने में जीवन
खपाने वाले

यशस्वी विद्वान्-विचारक
स्व० पं० यशःपाल सिद्धान्तालंकार लिखित
प्रचार के लिए उपयोगी महान् ग्रन्थ

वैदिक सिद्धान्त

जन-ज्ञान (मासिक) शिवरात्रि पर सादर भेंट कर रहा है !

मूल्य २) : किन्तु प्रचार के लिए
१५) की १० प्रति : ३०) की २५ प्रति
५५) की ५० प्रति : १००) की १०० प्रति

ग्रंथ प्रत्येक दृष्टि से अनुपम और महान् होगा।

कृपया २० जनवरी तक अपना आदेश धनसहित भेज दें।
२० जनवरी के बाद यह रेट नहीं रहेगा

व्यवस्थापक
जन-ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म और विज्ञान

स्व० योगिराज ने मृत्यु से पूर्व अपने कुछ महत्त्वपूर्ण लेख जन-ज्ञान, को दिए थे। हम क्रमशः उन्हें पाठकों की सेवा में अर्पित करेंगे।

परमेष्ठ्यधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धोऽच्छेतः
सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्याम्। यजुः ८—५४।

वह परमेष्ठी प्रजापति भूर्भुवःस्वः—सच्चिदानन्दस्वरूप, उत्पादक, विश्वरचयिता, (न विद्यते ध्यानं यत्र सः अन्धः) स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया युक्त, गतिदाता, दीक्षा में पोषण करनेवाला, योगाभ्यास द्वारा निर्मल रूप प्राप्त होता है।

भूः सत्तायां से सत्
भुवः अवचिन्तने से चित्
स्वः—आनन्द

प्राकृतिक विकास किस प्रकार होता है यह बतलाना विज्ञान का कार्य है, और आत्मिक विकास कैसे होता है यह बतलाना धर्म का कार्य है। इन दोनों में Harmony (मेल) रखने वाला ईश्वर है। इसीलिए ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है।

विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी नहीं, ये परस्पर एक-दूसरे के आश्रित भी नहीं। अपेक्षा भी नहीं रखते; परन्तु ये एक दूसरे के अनुपूरक हैं। अर्थात् जगत् कैसे बना? इसका उत्तर तो देगा विज्ञान, परन्तु यह जगत् क्यों बना? इसका उत्तर देगा धर्म। विज्ञान का कार्य है कैसे का उत्तर देना, क्यों—का नहीं। यों भी कह सकते हैं कि विज्ञान और धर्म दोनों एक-दूसरी से जुड़ी बहनें हैं—उनमें से किसी का दूसरे से पृथक् होने का अर्थ है दोनों की मृत्यु। विज्ञान तो धर्म के साथ सम्बन्धित रहकर ही फल-फूल सकता है और विज्ञान की जड़ जितनी जमती जायेगी, धर्म की अभिवृद्धि उतनी ही होती जायेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान की परिभाषा—कोष में विज्ञान को नियम और श्रेणीबद्ध ज्ञान कहा है। दूसरे ने विज्ञान को शिक्षित और संगठित विवेक कहा है। तीसरे ने विज्ञान को अग्र निरूपक और सत्यकारी कहा है। यह विज्ञान हमारे ज्ञान-भण्डार की क्रमशः वृद्धि करता है।

धर्म की वैदिक परिभाषा है—विज्ञान को इस उद्देश्य से उपलब्ध करना कि उसे आवरण में लाकर मृत्यु-पाश को शिथिल कर सके। यही धर्म कर्त्तव्य है। यथा—विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया ऽमृतमश्नुते।"

किसी ने धर्म को अपौरुषेय परम नियामक शक्ति का स्वीकृत रूप कहा है।

मनु ने धर्म के दस लक्षण किए हैं—

धृतिः क्षमा दमोऽ स्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या, सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।
तथा—वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।
महाभारत—जिन कर्मों का करना अनिवार्य है वही धर्म है।
धारणाद्धर्मइत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः—कर्ण पर्व।
धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः

जिसके आचरण से जीवन बना रहे और जिसके विपरीत आचरण से जीवन नष्ट हो जाए वही धर्म है—मनु। इन उपरोक्त धर्म और विज्ञान के लक्षणों में विरोध तो है नहीं परन्तु भिन्नता अवश्य है जो स्वाभाविक है।

धर्म और विज्ञान में विरोध तब हुआ जब अबोध धर्मान्धों ने धर्म के नाम पर भ्रष्टाचार तथा अत्याचार किए, जिससे वैज्ञानिकों को विशेषतः धर्म से घृणा होने लगी—बढ़ती गई और दृढ़ हो गई। इन धर्मान्धों में स्वार्थवृद्धि होकर लुटेरापन आ गया और अन्ध विश्वास ने ईश्वरेतर—मनुष्य-पशु-पक्षी-वृक्ष-मूर्ति तथा कब्रों—की पूजा तक का समावेश कर लिया। इससे शिक्षित वर्ग में धर्म का मान घट गया—निरादर भी होने लगा।

परिणामस्वरूप विज्ञान ने नास्तिकता को अपना लिया, नास्तिकता का ही प्रचार किया—कि सर्वेसर्वा हैं विज्ञान और प्रकृति ही, जीव और ईश्वर तो काल्पनिक हैं, फलतः डार्विन का विकासवाद भी एक नास्तिकवाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनकर रह गया।

डारविन ने अपने एक ग्रन्थ के प्रथम संस्करण में लिखा कि यह बात सादृश्य के आधार पर कही जानी चाहिए कि—समस्त सेन्द्रिय—जीव जगत् जिसमें जीवन फूंका गया था, प्रायः एक आदिम आकार से बनता चला आया है। परन्तु जब उसे आर्यसमाज का यह प्रबल विचार मिला कि प्रारम्भ में एक ही प्राणी नहीं वरन् अनेक प्राणी उत्पन्न हुए थे, तो डारविन ने उसी ग्रन्थ के दूसरे संस्करण में यह संशोधित वाक्य लिखा कि यह बात प्रबलता के साथ कही जा रही है कि प्रारम्भ में रचयिता ने जीवन अनेकों में फूंका न कि केवल एक देह में। डारविन के आस्तिकवाद-विकासवाद को पीछे से हक्सले और हैगल आदि नास्तिक वैज्ञानिकों ने नास्तिकवाद बना दिया।

उद्देश्य शून्यता ने ही विज्ञान को धर्म विरोधी मार्ग पर डाला, अर्थात् वैदिक धर्म के अंगभूत ज्ञान और कर्म का एक उद्देश्य है—सर्व बन्धनों तथा बृहत्तर मृत्यु बन्धन को काट देना; परन्तु पाश्चात्य विज्ञान और कर्म सांसारिक भोग विलास के उद्देश्य से प्रवृत्त हैं जिससे अन्त में परमाणु बम के द्वारा सृष्टि का सर्वनाश होता दीखता है।

परन्तु एक ग्रीक वैज्ञानिक ने जो परमाणुवाद का आविष्कर्त्ता समझा जाता है, ने अपने छटे नियम में कहा है कि जीवात्मा बना है—सूक्ष्म, चिकने गोल परमाणुओं से, जो आग्नेय परमाणुओं के सदृश हैं। दूसरे का मत है—परमाणुओं के भीतर इच्छा और द्वेष होता है तथा परमाणुओं में सबसे बलिष्ठतम परमाणु ही अवशिष्ट रहता है।

अन्त में एक वैज्ञानिक कैल्विन ने यह घोषणा की कि १—निश्चित रूप से विज्ञान ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करता है। २—ऐसा कोई प्रबल हेतु यह विश्वास दिलाने वाला नहीं कि रसायन शालाओं में जड़ प्रकृति से चेतना उत्पन्न हो सकेगी। (शेस्टन—१९०६ में)

● ●

हम सभी प्रभु से मिलने के लिए भटकते हैं। पर मेल तो वहीं होगा जहां मैं भी रहूँ और मेरा "प्रभु भी। ऐसा स्थान मन-मन्दिर के अतिरिक्त और क्या होगा? प्रभु से मिलना जो भी चाहे वह मन-मन्दिर में बैठे। सब ओर से ध्यान हटा, अपने को देखे, तब प्रभु हमसे दूर नहीं होगा।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार कैसे हो?

विदेश प्रचार से भारत वापस आये श्री दिलीप कुमार वेदालंकार एम. ए. से विशेष भेंट-वार्त्ता

भेंट-वार्त्ता कर्त्ता—श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

□□

जीवन का समस्त बोध तुम अपने ही सिर उठाने की चेष्टा न करो, कुछ प्रभु के जिम्मे भी उस पर अविचल आस्था के रूप में छोड़ दो, फिर देखो, सफलता तुम्हें कैसे प्राप्त होती है—

चार वर्ष तक अफ्रीका, अमेरिका, कनाडा, योरुप, ब्रिटेन आदि विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार करने के बाद हाल ही में भारत वापस आये श्री दिलीप कुमार वेदालंकार एम. ए. स्वर्गीय आचार्य स्वामी अभय देव जी के इन शब्दों को अपने जीवन के प्रेरणा स्रोत और अमूल्य सम्बल के रूप में सादर स्मरण करते हुए हमारे इस प्रश्न के उत्तर में कि साधन विहीन होते हुए भी आप किस प्रकार इतने देशों की यात्रा कर सके "—तब कहे जब हम "जन-ज्ञान" के विशेष संवादाता के रूप में उन से 'जन-ज्ञान' कार्यालय में भेंट की।

अफ्रीकियों की आर्य समाज से शिकायत

युवक दिलीप कुमार के हृदय में वैदिक धर्म, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तों को सार्वभौम रूप देने के लिए एक प्रबल तड़प है, जोरदार आकांक्षा है और प्रदीप्त अग्नि ज्वालाएं हैं। हमारे प्रश्न के उत्तर में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" के विशेष प्रतिनिधि पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार पं० दलीप जी वेदालंकार से भेंट में प्रश्न पूछते हुए।
जन-ज्ञान की संपादिका श्रीमती राकेश रानी भी वेदेश प्रचार वार्ता सुन रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशों में वैदिक विचारधारा फैलाने के लिए

संसार के

पुस्तकालयों को अधिक से अधिक

अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश

भेंट में भिजवाइए

एक बढ़िया कपड़े की जिल्द का सत्यार्थ प्रकाश भेजने पर २०)– व्यय होता है।

आप हमें २०)– भेज दें या हम से पता मंगा कर स्वयं भेजें पर भेजें अवश्य

अमरीका, इंगलैंड–जर्मनी जापान के पुस्तकालयों आदि में भेजिए।

विनीत

भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने बड़े खेदपूर्ण शब्दों में कहा—भारत से विदेश जाने वाले आर्य समाज के उपदेशक, प्रचारक, संन्यासी अधिकतर अपनी जेवें भरने में ही अधिक व्यस्त रहे। वहाँ की स्थिति को दृष्टि में रखते हुए वैदिक धर्म प्रचार की ओर कम ही ध्यान देते रहे। यही कारण है कि अफ्रीका के नवोदित, विदेशी बन्धन से मुक्त, समय के साथ अंगड़ाई ले रहे राष्ट्र—जैसे पूर्व अफ्रीका, केन्या, तंजानिया, जाम्बिया, मलावी, यूगांडा इत्यादि—जहाँ मैं प्रचारार्थ गया, कई मास तक रहा, वहाँ के सब वर्गों के अफ्रीकियों से सघन सम्पर्क किया, तो उन्हें या तो वैदिक धर्म और आर्य समाज से सर्वथा अपरिचित पाया अथवा उनकी यह दर्द भरी शिकायत सुनी कि—

> हम लोग घड़ाघड़ ईसाई और मुसलमान बन रहे हैं किन्तु कोई अफ्रीकी हिन्दू नहीं बनता। यह नहीं कि ईसाइयत और इस्लाम के सिद्धान्त हमें अपील करते और हमारी धार्मिक प्यास बुझाने में वैदिक धर्म की अपेक्षा अधिक सशक्त हैं। किन्तु इसका मूलभूत कारण यह है कि ईसाइयत और इस्लाम ने गिरजाघर और मस्जिदें बनाकर हमें अपनी ओर आकृष्ट किया, हमें उधर चलने का मार्ग दिखाया। इसके विपरीत हिन्दुओं ने जो मन्दिर बनवाये, उनमें उन्होंने अफ्रीकियों को घुसने तक नहीं दिया और न कभी हमारे भीतर वे स्वयं भी घुसे। हम तो हिन्दुओं को अपने देशों में केवल शोषक और धन बटोरकों के रूप में ही जानते हैं। "यद्यपि कुछ दूरदर्शी भिक्षुओं एवं आर्य समाज की संस्थाओं की ओर से अफ्रीकी लोगों को अपने समीप लाने के हार्दिक यत्न किये गये।

श्री दिलीप वेदालंकार १९६५ जनवरी में पूर्वी अफ्रीका (केन्या) में वहाँ की आर्य प्रतिनिधि सभा के निमंत्रण पर उपदेशक के रूप में गये। प्रचार के साथ साथ वे नैरोबी की आर्य संस्थाओं में धर्म शिक्षा भी पढ़ाते थे।

विदेश प्रचार में तीन साधनों की कमी

हमारे इस प्रश्न पर कि विदेश प्रचार के लिए आपने किन साधनों की कमी अनुभव की—आपने तीन बातें बताईं : संगठन की न्यूनता, समुचित दृष्टिकोण का अभाव और दोष युक्त प्रचार पद्धति। इस सम्बन्ध में आपने कहा कि जिस प्रकार भारत के आर्य समाज परस्पर कलह के शिकार हैं इसी प्रकार वहाँ की प्रतिनिधि सभा में भी खींचतान बनी रहती है। हमारा वहाँ के हिन्दुओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में भी विशेष प्रभाव नहीं है। इसका विशद वर्णन करते हुए दिलीपजी ने कहा कि विदेशों में "आर्य" व "आर्य समाज" की अपेक्षा अगर हिन्दुत्व के नाम पर प्रचार करें और हमारा यह प्रचार वेद, वैदिक सिद्धान्तों और ऋषि दयानन्द के सर्वथा अनुकूल हो, तो वह अधिक प्रभावकारी और आकर्षक हो सकता है। इसी प्रसंग में आपने सुझाव दिया कि आर्य समाज के समारोहों में जहाँ हम "वैदिक धर्म की जय" और "ऋषि दयानन्द की जय" के नारे लगाते हैं, वहाँ "मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र की जय" और "राष्ट्र रक्षक कृष्ण की जय" के नारे भी लगाने चाहिए। अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा कि इससे उन सनातनधर्मियों के जो आर्य समाज को राम और कृष्ण का निन्दक कह कर इसके विरुद्ध मिथ्या प्रचार करते हैं मुंह बन्द हो जाएंगे। दिलीप जी ने कहा कि अपने विदेश प्रचार में मेरे इस प्रयोग ने पर्याप्त सफलता दी।

विदेश प्रचार के लिए साहित्य

हमारा अगला प्रश्न था "विदेश प्रचार के लिए किस प्रकार के साहित्य का आवश्यकता है ?

दिलीप जी ने कहा—प्रचार की दृष्टि से साहित्य का बड़ा महत्त्व है। जहाँ प्रचारक नहीं पहुंच पाता, वहां साहित्य अपना अद्भुत प्रभाव दिखाता है। आपने कहा—विदेशों में तीन भाषाओं में साहित्य होना चाहिए—हिन्दी, अंग्रेजी और वहां की स्थानीय भाषा में। यह साहित्य छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में हो, परिचायक अधिक हो, सैद्धान्तिक और गहनतत्त्व ज्ञान का न हो। आम जनता के लिए ट्रैक्ट, पैम्फलेट इत्यादि अधिक उपयोगी हो सकते हैं।

अफ्रीका में ८० प्रतिशत भारतीय गुजराती

दिलीप जी ने बताया कि उन्होंने अफ्रीका में रहते ५ पुस्तिकाएं गुजराती में लिखीं और ३ हजार से अधिक वितरित कीं। हमारी इस शंका पर कि गुजराती में क्यों, हिन्दी में क्यों नहीं, आपने उत्तर दिया कि अफ्रीका के जिन आधे दर्जन से अधिक देशों में मैं गया, वहाँ की भारतीय जनता में ८० प्रतिशत गुजराती हैं। उनका "अफ्रीका समाचार" नामक पत्र गुजराती भाषा में प्रकाशित होता है जिसके २० हजार ग्राहक हैं। दिलीप जी ने बताया कि इस पत्र में उनके एक वर्ष तक लगातार "हमारी सांस्कृतिक विरासत" शीर्षक से लेखमाला प्रकाशित हुई। रेडियो पर भी उनकी कई वार्ताएं प्रसारित हुईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रसंगवश हम यहां स्पष्ट कर दें कि दिलीप जी यद्यपि गुजरात प्रांत वासी हैं, पर गुरुकुल विश्व विद्यालय काँगड़ी के स्नातक होने के कारण आपका हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी पर एक-सा अधिकार है।

प्रचार शैली का स्वरूप

हमारा अगला प्रश्न था "आपकी दृष्टि में अब आर्य समाज की प्रचार शैली कैसी होनी चाहिए ?"

दिलीप जी ने इस सम्बन्ध में जो योजना रखी वह एकदम अनोखी और नयी थी। आपने कहा कि हमारे विदेश प्रचार का मुख्य केन्द्र भारत में ही हो किसी अन्य देश में नहीं। इस केन्द्र के द्वारा ही विदेशों में विद्वान् प्रचारक और उपदेशक जाएं। इस केन्द्र की आर्थिक व्यवस्था ऐसी हो कि विद्वान् आर्थिक और पारिवारिक चिन्ताओं से मुक्त हो बाहर प्रचार कर सकें। उनका पूरा सम्मान और आदर हो। उन्हें अपना वैतनिक कर्मचारी न समझ आदरणीय और पूज्य समझा जाए। इन विद्वानों में भी त्याग, सेवा और प्रचार की लगन हो। इस केन्द्र के अन्तर्गत शिक्षित युवकों को विदेश प्रचार के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जाए।

विदेश स्थित भारतीयों में जात-पात, प्रान्तीयता के दोष

हमारे इस प्रश्न का कि "विदेशों में भारतीयों की स्थिति कैसी है ?" आप ने कहा कि यह बड़े दुःख की बात है कि विदेशों में रहने वाले भारतीय भी प्रायः जात-पात, प्रान्तीयता, बिरादरी के दूषित चक्र के भयकर रूप से शिकार हैं। वहाँ जाकर भी उन्होंने अपने नाम के आगे "शर्मा", "वर्मा" "गुप्त' इत्यादि उप जाति और गोत्र सूचक उपाधि का प्रयोग नहीं छोड़ा। प्रान्तीयता के सम्बन्ध में आपने बताया कि जब दो भारतीय आपस में मिलते हैं, तो पहला प्रश्न यही होता है "आप किस प्रांत से आये हैं ?" अगर प्रश्नकर्ता के अपने प्रांत के ही हों, तब दोनों में अधिक समीपता आ जाती है और विभिन्न प्रांत होने पर तत्काल निकटता का भाव पैदा नहीं होता। अपने देश से हजारों मील दूर रहने पर भी "मैं भारतीय ही हूँ"—यह भावना बहुत कम पायी जाती है।

विदेश स्थित वे भारतीय जिनका सम्बन्ध सरकारी राजदूतावासों से है वे तो एकदम, भीतर से, अभारतीय हैं, अपने देश की संस्कृति से सर्वदा अपरिचित और पश्चिम के अंध अनुयायी हैं। जो भारतीय वहां किसी धन्धे व डाक्टरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इत्यादि पेशे में हैं, उनमें अधिकतर भारत हितैषी हैं, अपने को भारतीय रखने का प्रयत्न करते हैं और धर्म-संस्कृति के जिज्ञासु हैं। तीसरा वर्ग छात्रों का है। इनमें अधिकतर ऐसे हैं जिन्हें अपने देश की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, इतिहास और गौरव का कम ही ज्ञान होता है। ये हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। इस वर्ग में प्रचार की विशेष आवश्यकता है।

लंदन में "वैदिक मिशन" की स्थापना

इसी प्रसंग में दिलीपजी ने बताया कि वह लंदन में लगभग छः मास रहे और वहाँ सब से पहले उनके प्रयास से "वैदिक मिशन" के नाम से आर्य समाज की स्थापना हुई, जिसमें, अभी तक, १३४ सदस्य बन चुके हैं। इस मिशन का उद्घाटन ब्रिटेन में भारत के हाई कमिश्नर श्री अप्पा पन्त द्वारा हुआ था। दिलीपजी ने लंदन में रहते हुए बी० बी० सी० पर भी दो बार वेद के सम्बन्ध में वार्ताएँ प्रसारित कीं।

पश्चिम की आध्यात्मिक भूख-भारत पूरी करें

दिलीपजी ने अपनी नोरुप यात्रा के कई संस्मरण सुनाते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि आर्यसमाज की भावनाएँ दृढता से रखते हुए हमें विदेशों—विशेषतः ब्रिटेन, योरुप, कनाडा, अमेरिका—में "हिन्दुत्व" का व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इस "हिन्दुत्व" की पृष्ठभूमि ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों और सिद्धान्तों पर आधारित हो। पश्चिम की जनता भारतीय दर्शन, शास्त्र और आध्यत्मिक ज्ञान की भूखी है। धन, सम्पत्ति और भौतिकता की कोई बात उन्हें अपील नहीं करती, क्योंकि वे स्वयं इसके चरम बिन्दु तक पहुंचे हुए हैं। उन्हें तो इस समय "आध्यात्मिक ज्ञान" और "योग द्वारा शान्ति प्राप्ति के साधन"—इसी की भूख है। इसकी आड़ में पश्चिम में बड़े पैमाने पर छल, कपट धोखा और गुरुडम का भी खूब प्रचार हो रहा है। यह समय है जब आर्यसमाज के मिशनरी "हिन्दुत्व" के व्यापक दृष्टिकोण से पश्चिमी देशों की आध्यात्मिक भूख को वेद के अनुसार शान्त करने का सच्चा प्रयत्न करें।

अफ्रीकी शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी-संस्कृत

दिलीपजी ने बताया कि अफ्रीकी शिक्षण संस्थाओं में धर्म शिक्षा अनिवार्य है और इसका उल्लंघन करने पर दंड दिया जाता है। आपने सुझाव दिया कि भारत सरकार इन अफ्रीकी देशों पर यह जोर डाले कि उनकी शिक्षण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

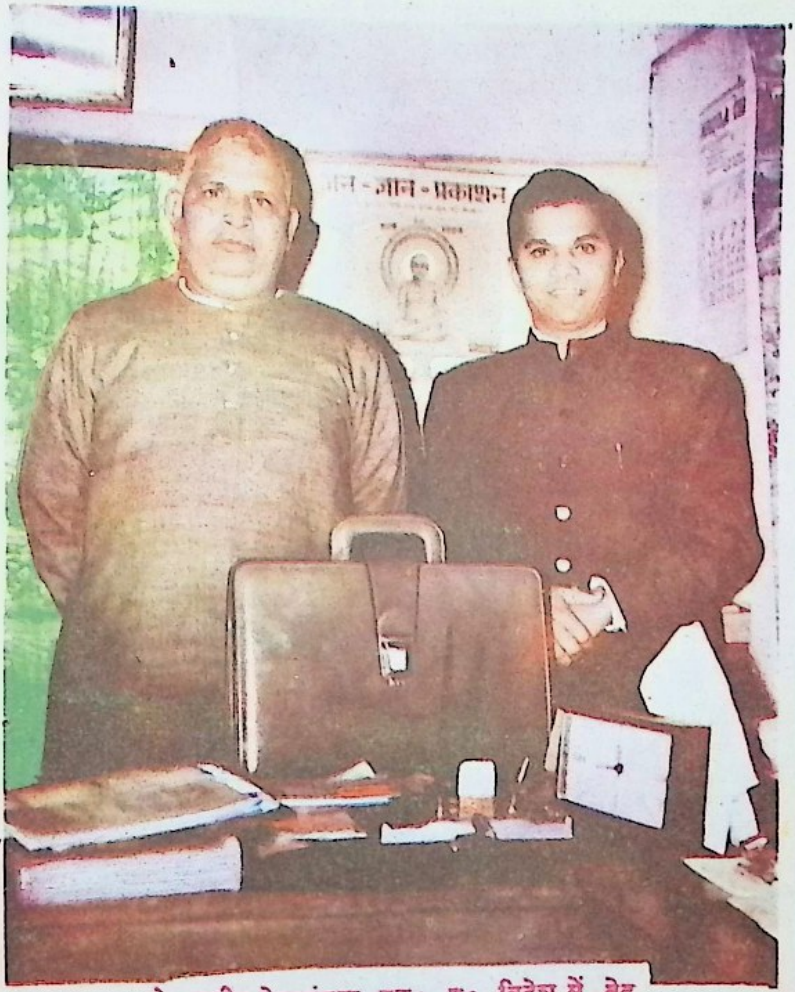

प्रो० दलीप वेदालंकार एम० ए० विदेश में वेद पताका फहरा कर जब भारत आए तो 'जन-ज्ञान' कार्यालय में पधारे। चित्र में वे 'जन-ज्ञान' के संचालक पं० भारतेन्द्र नाथ [illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत का बूढ़ा किसान

सोच रहा है कि—

—अब चुनाव होंगे

—घोषणाएं होंगी

पर मेरा भाग्य

कब सुधरेगा ?

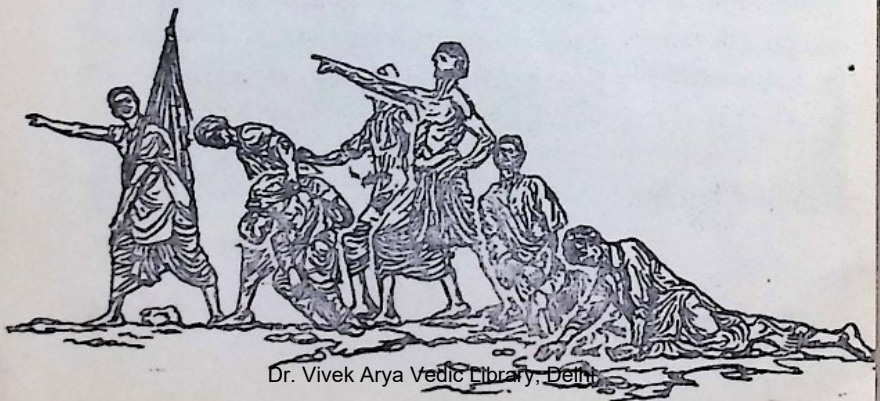

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्थाओं में हिन्दी की शिक्षण का पूरा प्रबन्ध हो। जिस प्रकार भारत के विश्व विद्यालयों में अफ्रीका की "स्वेत" भाषा की पढ़ाई का प्रबन्ध है—दिल्ली विश्वविद्यालय में कई भारतीय छात्र इसे पढ़ते हैं, इसी प्रकार वहाँ उनकी शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी-संस्कृत का प्रबन्ध हो। ऐसा होने से अफ्रीकी छात्र भारत की सभ्यता और संस्कृति से परिचित होंगे। उस समय उनमें वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करने में सुविधा रहेगी।

उनका निवास आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में है।

दिलीपजी अभी कुछ समय तक भारत में ही हैं। कुछ मास बाद वह पुनः विदेश यात्रा का विचार रखते हैं।

× × ×

भारत की गरिमा

पेशवा बाजीराव की सेनाओं ने हैदराबाद के निजाम की सेनाओं को चारों ओर से घेर लिया था। निजाम की सेनाओं के लिए रसद-पानी मिलना भी कठिन हो गया था। एक दिन पेशवा के पास निजाम का पत्र आया, जिस में लिखा था—"हमारे पास अब जरा भी अनाज नहीं रहा है। कल ईद है। क्या हमारे इस मौके पर आप हमारे सैनिकों को भूखा रखना चाहते है ?"

पेशवा ने अपने सेनापति को बुला कर विचार-विमर्श किया। सेनापति का मत था कि शत्रु शिकंजे में है, अतः हर हालत में उसकी पराजय होनी चाहिए।

पेशवा ने कहा—"यह ठीक है कि निजाम हमारा शत्रु है, परंतु हम मनुष्य हैं। भूखी सेना पर आक्रमण कर उस को पराजित करना शूरवीरता नहीं है। दुनिया को ज्ञात होना चाहिए कि महाराष्ट्र के वीर समान बल वालों से लड़ कर ही विजय पाना चाहते हैं। वे क्रूर और क्षुद्र हृदय नहीं हैं।"

शीघ्र ही अनाज से भरी बैलगाड़ियाँ पेशवा के सैनिकों द्वारा निजाम की सेना के लिए भिजवायी गयीं।

—शंकरदेव विद्यालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—ईश्वर का स्वरूप क्या है और वह कैसे अनुभव होता है ?

उत्तर—जीवात्मा का अस्तित्व तो अनुभव होता है और साथ ही उस पर कोई प्रबल शासन भी प्रतीत होता है, अर्थात् हम देखते हैं कि हमें अपने शरीर, इसकी बहुत-सी क्रियाओं तथा अपनी इच्छाओं और उनकी पूर्ति पर पूर्ण अधिकार नहीं, बहुधा हम अपनी कामना के विरुद्ध देखते हैं कि देह हलकी है वा भारी है, दुखी है वा सुखी है। अतः उस महती शक्ति के शासन और नियमों का ज्ञान ही उस नियामिका शक्ति का अनुभव है।

प्रश्न—उससे हमें क्या लाभ ?

उत्तर—इस ज्ञान से दुःख और सर्व कुचेष्टाएँ मिट जाती हैं। देह और मन का भटकना, चंचलता-चिन्ता मिट जाती है। जैसे जो यात्री रेलवे समय विभाग को पास रखता है तथा देखना जानता है वह नियत समय पर स्टेशन तथा गाड़ी के नियत प्लेटफार्म पर आकर अपनी यात्रा सुविधा से प्रारम्भ करके सुखपूर्वक समाप्त कर लेता है, उसके चित्त में किसी प्रकार का संशय, द्विविधा, चिन्ता-आकुलता तथा विक्षेप नहीं होता और ना ही उसे किसी से पूछने के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। अन्य गाड़ियों के आने-जाने से उसे कुछ भी विकलता नहीं होती। परन्तु एक अज्ञ, अबोध ग्रामीण जिसे गाड़ी और उसके समय आदि का कुछ भी पता नहीं —यदि उसने कहीं सायं की गाड़ी से जाना हो तो प्रातः उठते ही शीघ्र स्टेशन पर पहुँचने की चेष्टा करता है और घबराकर घर से तो चल ही पड़ता है और स्टेशन पर खड़े किसी एंजिन को सीटी देते सुनकर वा किसी गाड़ी के हिलने-जुलने पर उधर को भागने लगता है। किसी के समझाने पर भी चिन्तित रहता है और गाड़ी पर बैठ जाने पर भी चिन्तामुक्त नहीं होता। ऐसे ही जगन्नियन्ता के नियमों के ज्ञान से दुःखों की निवृत्ति होती है।

प्रश्न—रेलवे का समय विभाग तथा नियमावली छपी है, पर प्रभु दर्शन के नियम-साधन क्या हैं ?

उत्तर—उसके लिए तो प्रभु ने अत्यन्त सुन्दर और अमूल्य समय-विभाग दे रक्खा है जो प्रत्येक समय प्रत्येक जीव के साथ ही रहता है और उसी में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
समस्त विश्व का चित्र (नक्शा) भी दे दिया है। वह है यह मनुष्य देह जिसमें विश्व के सर्वसार भरे पड़े हैं जैसे कि समय विभाग में सूची- बनी रहती है उससे सब स्टेशनों के नाम तथा समय और अन्यान्य नियमों का पता मिल जाता है। देह का भी ऐसा ही विवरण है।

सब विश्व पंचभूतों से बना है, वे ही पांच भूत, उनके सब विषय, विषयों के ग्राहक साधनों—इन्द्रियाँ-प्राण आदि—का उल्लेख इसी देहरूपी समय-विभाग में है। इन्हीं भूतों के प्रतिनिधि चक्षु-श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रियां हैं, उनकी सूची इन भूतों के केन्द्र हैं जिनमें संयम-ध्यानादि करने से सब भूतों तथा उनके विषयों रूप-रसादिकों का यथावत् पूर्णरूप से ज्ञान हो जाता है।

प्रश्न—क्या पूर्वजन्म का पता लगता है कि हम क्या थे ?

उत्तर—पता तो लगता है। यदि मैं अपने विषय मैं आपको कुछ बता दूँ तो आपको क्या सन्तोष होगा और उसकी सत्यता का निश्चय भी क्या ? अतः उसे तो उसके ढंग से स्वयं साक्षात् करना चाहिए। तभी विश्वास भी होगा; जैसे किसी हंडिया की लाग को देखकर व सूंघकर उसमें पकाए हुए पदार्थ का पता लग जाता है ऐसे ही अन्तःकरण जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों से विषय-भोगों का उपभोग होता रहा है उसके संस्कारों के साक्षात्कार से पूर्वगत जन्मों का तथा अग्रिम जन्मों का आभास मिल जाता है—संस्कार साक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम्, योग-३-१८ सूत्र।

मन में संस्कारों का प्रवाह चलता तो आपने देखा ही होगा। इन संस्कारों का दर्शन भी सत्त्व-रजादि गुणों की न्यूनता वा अधिकता के कारण भिन्न-भिन्न रूप में होता है। तमोगुण से आलस्य और निद्रा होती है और ज्ञान आवृत—ढका रहता है। रजोगुण से क्रिया तथा स्वप्न होते हैं। इसमें विक्षेप अर्थात् चंचलता होने से भ्रान्तियुक्त ज्ञान होता है। साधारणतया बाह्य संस्कार साकार बनकर सम्मुख आ खड़े होते हैं जो स्वप्न में कभी सत्य कभी असत्य होते हैं। परन्तु सत्त्वगुण की प्रधानता में वे ही यथार्थ स्वरूप में प्रकट हो जाते हैं।

सत्त्वगुण की वृद्धि का उपाय है कि देह की श्रान्ति-थकावट से नहीं वरन् अपनी चेष्टा से ज्ञानपूर्वक सुषुप्ति वा स्वप्न की अवस्था उत्पन्न की जाय जिसमें अपना और उस अवस्था का पूर्ण ज्ञान हो। उस अवस्था का स्वप्न जैसा होना और स्वप्न में जाग्रत का भ्रम होना—तम और रजोगुण की अधिकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से होता है। सत्त्व प्रधान ध्यानावस्था में धारणा को दृढ़ करके बैठने पर अपने पूर्वजन्म इत्यादि का ठीक-ठीक और निश्चयात्मक ज्ञान होता है पर उसे सावधानी और तन्मयता से देखना होगा। प्रायः हम ध्यान और स्वप्न में दृश्य की सब क्रियाएँ अपने वर्तमान शरीर से ही देखते वा करते हैं, परन्तु कभी यह क्रिया किसी अन्य शरीर में से भी करते देखते हैं। वही पूर्व का शरीर होगा।

प्रश्न—इतना अभ्यास होना तो कठिन है—कटि में पीड़ा होने लगती है।

उत्तर—कटि पीड़ा और दुःख क्या संसारिक कार्य करते हुए व्यवहार में नहीं होते? बजाज थान उतारते हुए कई बार गिरकर चोट खाता है परन्तु कभी अपना कार्य नहीं छोड़ता, रेलवे के शंटिंग कुली गाड़ी जोड़ते समय कट-कर मर जाते हैं पर उन्हें देखकर क्या अन्यों ने नौकरी छोड़ दी है? यह केवल मानसिक दुर्बलता है तथा सांसारिक व्यवहार की प्रबलता है जिसके कारण अभ्यास में रुचि नहीं होती।

एक कामी पुरुष ज्वरादि रोग ग्रस्त होने पर भी जब स्त्री को आलिंगन करता है उस समय अपने रोग और पीड़ा को भूल जाता है तो क्या उसी दृढ़ता से आत्म-अभ्यास किया जाए तो पीड़ा और दुख का अभाव न होगा? अर्थात् रोग और पीड़ा के होते हुए भी अभ्यास न चल सकेगा? हाँ मन का प्रवाह बदलने और संयम दृढ़ करने की आवश्यकता है।

अलवर्ट आइंस्टीन एक बार अपने मित्र के यहाँ रात्रि-भोजन के लिए आमंत्रित थे। भोजन आदि से निवृत्त हो गये तब मित्र से बात-चीत होने लगी। दस बज गये। मेजबान भला कैसे कहे कि अब आप जाइये! पर इतना उन्होंने जरूर कहा, "मित्रों के साथ बात-चीत करने में समय कितनी जल्दी बीत जाता है?"

आइंस्टीन ने जेब से घड़ी निकाल कर हाथ में ले ली। एक घंटा और निकल गया। मेजबान को झपकी आने लगी और बातों में बारह बज गये तो उस ने कहा, "अब काफी रात हो गयी, आप को जाना भी दूर है।"

इस बार आइंस्टीन चौंके—"एं···मुझे जाना है!" फिर कमरे में इधर-उधर नजर दौड़ा कर बोले, "मैं अब तक यही सोच रहा था कि आप अपने घर जाय, तो मैं स ऊँ!"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

मंडराते संकटों की

छाया में

पाँच महा भय

पाँच का महत्व

भारतीय चिन्तन में पाँच का विशेष महत्व है। योगदर्शन में जहाँ पाँच यम और पाँच नियम हैं वहाँ सृष्टि के मूलतत्त्व भी पाँच माने गये हैं। शरीर में पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। बुद्ध ने भी इसी पाँच के आधार पर पंचशील सिद्धान्त को स्वीकार किया। बुद्ध के अनुकरण में पं० जवाहरलाल नेहरू ने १९६० में "हिन्दी-चीनी भाई-भाई" के नारे के साथ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने के लिए "पंचशील" का आविष्कार किया। पर १९६२ में भारत पर चीन के आक्रमण के समय शत्रु की तोपों के धुएँ के साथ नेहरूजी का यह पंचशील भी आकाश में सर्वदा के लिए लुप्त हो गया।

महाभय

पर भारत की स्वतंत्रता के दो दशक और तीन वर्ष के बाद आज हम अपने देशवासियों का ध्यान पाँच महाभयों की ओर दिलाना चाहते हैं। अगर हम तनिक भी गहराई के साथ अपने राष्ट्र की स्थिति पर विचार करें तो ये पाँच महाभय अजगर की तरह मुँह खोले पूर्ण रूप से राष्ट्र को निगलने के लिए द्रुतगति से बढ़ते हुए स्पष्ट दिखाई देंगे।

पहला भय—हिन्दू ह्रास की ओर

सबसे पहला और गम्भीर भय इस देश के नाम के मुख्य अंग को ही है। हमारे राष्ट्र का नाम "हिन्दुस्तान" अथवा "भारतवर्ष" (राजा भरत द्वारा स्थापित देश) है। इस समय स्थिति यह हो रही है कि हिन्दुओं की संख्या निरन्तर कम हो रही है। मुसलमान, ईसाई अब भी तेजी से बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर वर्त्तमान प्रशासन में "सेक्युलरिज्म" की आड़ में हिन्दुओं को मिटाने की भरपूर कोशिशें हो रही हैं और, तीसरी ओर, अत्यन्त खेदपूर्ण तथ्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह है कि हिन्दू अपने को हिन्दू कहने में हीन और अपमानित समझता है ? साथ ही परिवार नियोजन भी हिन्दुओं को खा रहा है। गैर-हिन्दू तो इस परिवार नियोजन को मानते नहीं। हिन्दू ही इसका शिकार हो अपनी संख्या कम कर रहे हैं। अगर यही स्थिति रही तो जैसा कि एक भारतीय इतिहासज्ञ ने कहा है कि एक सदी के बाद इस देश में हिन्दू और हिन्दुत्व लुप्तप्राय हो जायेगा। उस समय इस देश का नाम "हिन्दुस्तान" अथवा "भारतवर्ष" के बदले क्या होगा—यह सोचते ही दिल काँप जाता है।

१९६० के कुछ आंकड़े इस दशा में हमारे लिए कम चौंका देने वाले नहीं हैं। इस जनसंख्या के अनुसार हिन्दुओं की वृद्धि २० प्रतिशत हुई जबकि इसके मुकाबले में मुसलमानों की २५.६१ प्रतिशत और ईसाइयों की २७.३८ हुई। द्वि-राष्ट्र के सिद्धान्त पर भारत का विभाजन हो जाने के बाद भी भारत में मुसलमानों की हिन्दुओं से अधिक अनुपात में वृद्धि क्या भयंकर स्थिति की द्योतक नहीं है ?

दूसरा भय—मुसलमानों की सीमान्त क्षेत्रों में तीव्र वृद्धि

इस सम्बन्ध में एक अन्य तथ्य है जो कम भयावह नहीं है। वह है, मुसलमानों की वृद्धि उन प्रदेशों में अधिक हुई है जिनकी सीमाएं पाकिस्तान से मिलती हैं। देश का उत्तर-पूर्वी भाग—अर्थात् असम, नागालैण्ड, मणिपुर और त्रिपुरा सामरिक दृष्टि से कितना महत्त्वपूर्ण है—यह १९६२ में भारत-चीन युद्ध में भारत की हार से स्पष्ट हो चुका है। असम में मुसलमानों की संख्या ३० प्रतिशत के लगभग बढ़ गई है और उन्होंने वहां की भूमि पर इस प्रकार गैरकानूनी कब्जा कर लिया है कि भारत सरकार जानती हुई भी उन्हें वहाँ से बेदखल नहीं कर पा रही है। असम में हुए साम्प्रदायिक दंगों और पिछले वर्ष ठीक गणराज्य दिवस पर २६ जनवरी को कुछ घन्टों के भीतर ही गोहाटी में हुई भयंकर लूटपाट और अग्निकाण्ड की घटनाओं से इस तथ्य की पुष्टि होती है। असम में तो मुसलमानों की संख्या डेढ़ गुना से अधिक हो गई है। त्रिपुरा की आबादी का पाँचवा भाग मुसलमान है और वह तीन ओर से पूर्वी पाकिस्तान से घिरा हुआ है। मणिपुर और नागालैण्ड में यह वृद्धि क्रमशः ३०.६२ और ७१.३५ प्रतिशत है।

जहाँ दो मुसलमान थे वहाँ अब···

राजस्थान पाकिस्तान की सीमा पर है। इसके गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
और बाड़मेर—४ जिले तो एकदम सीमान्त क्षेत्र हैं। यहाँ मुसलमानों की वृद्धि क्रमश ७१.८३, २६·५, ६७. और ६८. ४५ प्रतिशत हुई। सीमान्त प्रदेशों में मुसलमानों का इतना अधिक जमाव क्या एक प्रबल संकट का सूचक नहीं है ? पंजाब में सबसे अधिक वृद्धि लाहौल-स्पीती में हुई। यह जिला भारत-चीन सीमा पर स्थित है। १९५१ में यहां केवल दो मुसलमान थे पर १९६१ की गणना के अनुसार इनकी संख्या १२०० हो गई।

दिल्ली में छिपे पाकिस्तानी

दिल्ली भारत की राजधानी है। क्या यहाँ की स्थिति कम भयंकर है ? हाल ही में दिल्ली प्रशासन के एक प्रवक्ता के अनुसार राजधानी में १० हजार ऐसे पाकिस्तानी हैं जो गैरकानूनी रूप से यहाँ छिपे रहते हैं। इन्हें कौन प्रश्रय दे रहा है ? निश्चय ही दिल्ली के मुसलमान जिनके हौसले बढ़ गये हैं। दिल्ली के पास ही रोहतक और करनाल में मुसलमानों की वृद्धि क्रमशः १८६.८५ और २८८.३४ प्रतिशत हुई। हिमाचल प्रदेश के चम्बा, महासू, बिलासपुर, मण्डी, सिरमौर में क्रमशः १०१.८४, ९६.१३, ४९.०७, ४७·३२ और ४६.८० प्रतिशत की वृद्धि हुई। उत्तर प्रदेश के पिथौरागढ़ में ७०.४८, नैनीताल में ७०.१९, गढ़वाल में ६२.८२ और उत्तर काशी में ४०.७० प्रतिशत वृद्धि हुई। सिक्किम हमारी उत्तर सीमा की सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्व का मर्मस्थल है। यहाँ मुसलमानों की संख्या गत वर्षों में ८७३.२९ प्रतिशत बढ़ी जो विशेष आश्चर्य का विषय है। पश्चिमी बंगाल के नदिया में ६३.१६, मालदामें ६२. ८०, पुरलिया में ५३.१३, दीनाजपुर में ५०. ६७, जलपाईगुड़ी में ४४.३२ और दार्जिलिंग में ४०.१९ में प्रतिशत मुसलमानों की वृद्धि हुई। देश के भीतरी भाग में भी इसी प्रकार मुसलमानों की वृद्धि हुई, विशेषतः गुजरात के डाँज में १५२.६० दादरा में हवेली १७८.६२ नासिका में ५५.८६ थाना में ५०,२६ (जिसके अन्तर्गत "भिवण्डी ' में हाल ही में हिन्दू-मुसलिम दंगा हुआ था), मध्यप्रदेश में रायगढ़ में २०७.७९ सरगुजा में ६२.७२ और शहडोल में ५९.५५ प्रतिशत वृद्धि हुई।

इन्दिरा गान्धी की मुसलिमपरस्त नीति

भारत की वर्त्तमान प्रधान मन्त्री देश के विभाजन की जिम्मेदार "मुसलिम-लीग" के साथ गठजोड़ कर और अपने भाषणों में मुसलमानों को अल्पसंख्यक के रूप में देश की प्रगति में विशेष प्रेरणा देने की पैरवी कर एक और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभाजन के बीज बो रही हैं। इसी के फलस्वरूप मृतप्राय मुसलिमलीग की शाखाएँ सारे देश में स्थापित हो रही हैं और "जमीयत-उल-उलेमा" और "जमाएते इस्लामी" जैसी कट्टर साम्प्रदायिक और पाकिस्तानपक्षीय मुसलिम संस्थाएँ अपना सिर उठा रही हैं। अपने को अल्पसंख्यक कहने वाले इन मुसलमानों की मनोवृत्ति कैसी है—इसका एक प्रबल प्रमाण उस सरकारी रिपोर्ट से मिलता है जो सरकार ने १९६७ में राँची दंगे के पश्चात् साम्प्रदायिक दंगों की जाँच के सम्बन्ध में प्रकाशित की थी। इसके अनुसार २३ साम्प्रदायिक दंगों में से २२ में पहल मुसलमानों की ओर से हुई थी। साम्प्रदायिकता निवारण की आड़ में इतिहास की घटनाओं को बदलने का प्रयास किया जा रहा है और सरकारी पाठ्य पुस्तकों में औरंगजेब को बड़ा दयालु, न्यायप्रिय तथा धर्मात्मा शासक बताते हुए शिवाजी को औरंगजेब से मित्रता करने के लिये उत्सुक बताया गया है।

देश में गुप्त "मुसलिम पाकेट"

नेहरू जी ने तो द्वि-राष्ट्र के सिद्धान्त को अस्वीकार करते हुए भी अधिकार प्राप्ति के लोभ से देश का विभाजन स्वीकार किया था, पर उनकी "प्रियदर्शिनी सुपुत्री इन्दिरा" तो अपने पिता को भी मात करके, केवलमात्र अपनी कुर्सी की रक्षा के लिये, देश में एक और पाकिस्तान बनाने की तैयारी कर रही हैं। परिणामतः अलीगढ़, लखनऊ, पटना, गोहाटी, भोपाल, कालीकट, मद्रास इत्यादि नगर "मुसलिम पाकेटों" का रूप धारण कर रहे हैं। केरल में मुसलमानों ने अपनी बहुसंख्या का एक जिला बना लिया। बिहार में मुसलिम लीग के अध्यक्ष हाईकोर्ट के अवकाश प्राप्त एक मुसलिम जज हैं। मद्रास नगर की एक आलीशान आबादी में हाल ही में नई बनी छोटी मस्जिद के सामने कई वर्ष के पुराने हिन्दू मन्दिर में घण्टा-घड़ियाल बजने पर आपत्ति हो रही है। क्या यह सब दूसरे पाकिस्तान के प्रादुर्भाव की भूमिकाएँ नहीं हैं? यह आज देश के सामने दूसरा महान् भय है।

तीसरा महाभय—ईसाइयत का मुँह खोले अजगर

भारत में ईसाइयत का जितनी तीव्रगति से प्रचार हो रहा है, वह तीसरा महाभय है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ईसाइयत की जिस तीव्रता से वृद्धि हो रही है, वह सचमुच ही अत्यन्त भयावह है। नागालैण्ड और नया बना प्रदेश "मेघालय" तो पूर्णतः ईसाई प्रदेश हैं ही पर बिहार, मध्यप्रदेश, उड़ीसा और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आन्ध्र भील तथा अन्य वन जातियाँ लगभग पूर्णरूप से न केवल ईसाई हो चुकी हैं अपितु वहाँ ईसाई पादरियों का इतना जोर और प्रभाव है कि सरकारी कानून—विशेषतः भूमि सम्बन्धी—बेकार हो जाते हैं। मध्यप्रदेश के १६ जिलों और राजस्थान के ११ जिलों में ईसाइयों की संख्या तिगुनी से भी अधिक हो गई है। असम में ५० प्रतिशत, मणिपुर व त्रिपुरा में क्रमशः ११२.३० और ८०.७८ प्रतिशत एवं पंजाब में १०६ से कुछ अधिक प्रतिशत वृद्धि हुई है। हिमाचल प्रदेश में ८६.७५, उत्तर प्रदेश के उत्तरी सीमान्त चमोली जिले में ५० प्रतिशत और बिहार में दुगनी से अधिक वृद्धि हुई।

समूचे भारत को ईसाई बनाने का विदेशी षड्यंत्र

ईसाइयत के प्रचार के पीछे गहरा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र काम कर रहा है। अंग्रेजों के शासन काल में जितने विदेशी पादरी थे, आज स्वाधीन भारत में उससे कहीं अधिक हैं। लोक सभा में इनकी संख्या एक प्रश्न के उत्तर में १९६८ में ५,७८३ (कामनवेल्थ के देशों को छोड़ कर) थी, जबकि १९५४ में यह संख्या ३,७८३ थी। हाल ही में संसद् में एक प्रश्न के उत्तर में सरकार की ओर से बताया गया कि ७ करोड़ रुपया ईसाइयत के प्रचार के लिये विदेशों से आता है। राजनैतिक रूप से विदेशी पादरी इस देश में कितनी शरारत कर रहे हैं, इसका प्रमाण नागालैण्ड वार्ता में स्काट पादरी की भारत-विरोधी हरकतें, महाराष्ट्र में फ़ेरर पादरी की गुप्त कार्यवाहियाँ जिसके कारण उसके निष्कासन पर ब्रिटेन और अमेरिका के ईसाईयों के हो हल्ले पर भारत सरकार की उसे पुनः भारत आने की स्वीकृति और अब आन्ध्र प्रदेश में उसकी नियुक्ति, केरल में कैथोलिक पादरियों द्वारा एक अन्तर्राष्ट्रीय गुप्त संगठन के अन्तर्गत एक हजार से अधिक भारतीय कन्याओं का विदेशी कैथोलिक संस्थाओं के लिये "नन्स" और "नर्सं" के रूप में निर्यात इत्यादि हाल ही में प्रकाश में आई घटनाएं हैं जिनसे विदेशी ईसाई राष्ट्रों के भारत पर लगातार बढ़ रहे प्रभाव का कुछ परिचय मिलता है। पश्चिमी देश, विशेषतः अमेरिका, ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी और कनाडा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस बात की प्रबल चेष्टा कर रहे हैं कि भारत ईसाई राष्ट्र बन जाये। इसी दृष्टि से वे करोड़ों रुपया पानी की तरह यहाँ बहा रहे हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि विश्व में जहाँ हिन्दुओं की संख्या ३५ करोड़ के लगभग है, वहाँ इसाई ९१ करोड़ से अधिक और मुसलमान लगभग ४४ करोड़

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। हिन्दुओं की संख्या तीसरे दर्जे पर है।

चौथा महाभय--'सेक्युलरिज्म' का जहर

हमारे देश को चौथा महाभय "सेक्युलरिज्म" (धर्मनिरपेक्षता) से है जिसके परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर इन २३ वर्षों में शिक्षाप्राप्त युवक अपने देश की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक परम्पराओं से एक दम विच्छिन्न हो गया है, वहाँ दूसरी ओर अपने जीवन में विदेशी सभ्यता, वेश-भूषा और शिष्टाचार का निरन्तर गुलाम बन रहा है। विदेशी सभ्यता के ये काले रंग के मानसपुत्र अपने देश को सब प्रकार से हेय, तुच्छ और गौरवहीन समझते हैं। इनकी दृष्टि सदा विदेशों की ओर रहती है। धन को ही ये सर्वस्व समझते हैं, चाहे न्याय से और अन्याय व भ्रष्टाचार से प्राप्त हो। इस तथाकथित "सेक्युलरिज्म" का एक भयंकर परिणाम यह निकला है कि देश और समाज में सदाचार, नीति और आचार-व्यवहार के मानदण्ड गिर गये हैं, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार की वृद्धि हो रही है। लूट-पाट, डकैती, चोरी, हत्याकाण्ड, छुरेबाजी, मारपीट, नारी जाति के प्रति उद्दण्डता और दुर्व्यवहार, शिक्षण संस्थाओं में हड़ताल, दलबन्दी, घेराव, अध्यापकों का अपमान व उन पर अत्याचार—इत्यादि सब लगातार व्यापक रूप से हो रहे हैं। पारिवारिक जीवन की पवित्रता और शिष्टता नष्ट हो रही है। नक्सलवाद इसी का एक हिंसात्मक रूप है।

देश के युवकों में राष्ट्रीय भावना कम करने में ईसाइयों द्वारा संचालित "कानवेन्ट" स्कूलों और पब्लिक स्कूलों का भी बड़ा हाथ है। इनसे पढ़ कर निकले छात्रों में एक प्रकार की मिथ्या अहम्मन्यता आ जाती है। इनका देश में एक अलग ही वर्ग बन रहा है जो अपने को सामान्य भारतीयों से अलग समझता है। इन संस्थाओं में अधिकतर छात्र हिन्दू परिवारों के ही होते हैं।

पाँचवां महाभय—'लोकतंत्र' से विघटन की वृद्धि

देश को पाँचवा महाभय तथाकथित "लोकतंत्र" (डेमोक्रेसी) से है जिस के फलस्वरूप पृथक्ता और अलगाव की प्रवृत्तियाँ लगातार बढ़ रही हैं। लोकतंत्र की हिमायत में यह कहना कि देश के प्रत्येक वयस्क को मताधिकार प्राप्त होने से, मौलिक अधिकार और कानून की दृष्टि से, सब नागरिक एक समान हैं —महज झूठ, धोखा और प्रवंचनामात्र है। भारत ने अपने शासन का ढांचा बहुत कुछ ब्रिटेन की नकल में बनाया है। पर वहाँ की दो सदियों से अधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation

समय से चली आ रही परम्पराओं को भला दो दशक के भीतर कैसे आत्मसात् किया जा सकता था ? इसके परिणाम आज हमारे देश के लिये अत्यन्त कटु और घृणित रूप में प्रकट हो रहे हैं। "लोकतंत्र" की मृगमरीचिका ने हमें केवल एक ही गुण सिखाया है—येन केन प्रकारेण वोट की भीख माँगना और प्रान्त, जाति, बिरादरी, कुटुम्बदारी को बढ़ावा देते हुए और सबसे बढ़ कर थैलियों का मुँह खोल कर विधान मंडल व संसद तक पहुंच जाना, फिर अपनी जेब भरना व कुनबापरस्ती करना। इस "लोकतंत्र" की आड़ में देश में विभिन्न स्तरों के मंत्रियों, संसद् सदस्यों, विधायकों और उनसे सम्बद्ध निकट व दूर के व्यक्तियों का एक ऐसा वर्ग पैदा हो गया है, जो देश के राजा-महाराजाओं से—जिन्हें अब पदच्युत किया जा रहा है—अधिक धन लोलुप, मान-प्रतिष्ठा का इच्छुक और समाज में विषमता पैदा करने वाला हो रहा है। इन संसद् और विधान मंडलों में अधिकांश समय दल-बदल, आरोप प्रत्यारोप, "आया राम गया राम", वितण्डा, कुतर्क, गाली-गलौज, कभी-कभी मारपीट, उछल-कूद में ही व्यर्थ गंवाया जाता है। राष्ट्र का कितना अमूल्य समय और धन इस तथाकथित "लोकतंत्र" के पीछे समुद्र के पानी की तरह नष्ट हो रहा है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रधान मन्त्री इन्दिरा गान्धी ने एक बार कहा था कि संसद् के अधिवेशनों में प्रति मिनट, कुल मिला कर, ६० रुपया खर्च होता है। देश में लगातार बढ़ रहे नये प्रदेशों की विधान सभाओं का व्यय अलग। वस्तुतः यह "लोक तंत्र" नहीं, "लोक भक्षक" व्यवस्था है।

देश के ये पाँचों महाभय हमारे लिए विनाश की चुनौती दे रहे हैं। क्या हम भी सावधान होंगे ? आने वाला हर एक क्षण इसका उत्तर प्रत्येक भारतीय से चाहता है। कोई देने को तैयार है ?

जो केवल आत्मा का बल अर्थात् विद्या ज्ञान बढ़ाये जाएँ और शरीर का बल न बढ़ावें तो एक ही बलवान् पुरुष सैकड़ों विद्वानों को जीत सकता है। और जो केवल शरीर का ही बल बढ़ाया जाए आत्मा का नहीं, तो भी राज्य पालन की उत्तम व्यवस्था बिना विद्या के कभी नहीं हो सकती। इसलिए सर्वदा शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिए। —महर्षि दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंगाइए, बांटिए
और
देश को बचाइए

१. ईसाई पादरी उत्तर दें।	—स्वामी श्रद्धानन्द	३) सैकड़ा
२. A challenge to the Christian Faith	,,	३) सैकड़ा
३. Bible in the Balance	—चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा
४. ज्ञान विज्ञान का शत्रु ईसाई मत	—ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
५. पोप की सेना का भारत पर हमला	—भारतेन्द्रनाथ	१०) सैकड़ा
६. ईसाइयों की प्रचार प्रणाली	जगत् कुमार	१०) सैकड़ा
७. पादरियों को चुनौती	स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	१०) सैकड़ा
८. बाइबल को चुनौती	—ओम्प्रकाश त्यागी	१५) सैकड़ा
९. और पादरी भाग गया	—ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
१०. ईसाइयत की वास्तविकता	—शांतिप्रकाश महोपदेशक	१०) सैकड़ा
११. बाइबल कसौटी पर	चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा

अधिक से अधिक मगांकर बांटें

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

ईसाइयत रोकने में उदारता पूर्वक सहयोग दें

कुछ क्षेत्रों में ईसाई विरोधी साहित्य तो चाहिए पर वे धन नहीं भेज सकते, अतः वहाँ साहित्य भेजने के लिए सहयोग चाहिए। आप अपनी ओर से ईसाई प्रभावित क्षेत्रों में वितरण के लिए अधिक से अधिक साहित्य भिजवायें। यह राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सेवा होगी। इसके लिए जितनी सहायता हमें प्राप्त होगी उतना ही साहित्य हम भेजते जायेंगे। उदारता पूर्वक सहयोग दीजिए।

—राकेश रानी
सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

इतिहास को निर्मल रहनेदो !

अंगरेजों के शासन काल में भारत के साथ जो-जो अत्याचार किए गए हैं, उनमें से एक अत्याचार भारतीय इतिहास की विकृति है। मेरी नम्र सम्मति में यह अत्याचार आर्थिक और राजनैतिक अत्याचारों से कम भयंकर नहीं हैं। अंग्रेज विद्वानों और ऐतिहासिकों ने सदा ही भारतीय सभ्यता, भारतीय धर्म और भारतीय साहित्य को नीचा दिखाने का प्रयत्न किया है। उनकी दृष्टि में भारतीय इतिहास बहुत अर्वाचीन है क्योंकि वे भारत की प्राचीन संस्कृति को युरोपियन संस्कृति से ऊँचा व प्राचीन नहीं दिखाना चाहते। इसलिए रामायण और महाभारत के काल को उन्होंने बहुत प्राचीन मानने से इन्कार कर दिया है। वैदिक संस्कृति की उच्चता और गम्भीरता को प्रकट करने की बजाय वे गड़रियों के गीत का नाम ले कर हमारे मस्तिष्क में उसके प्रति तिरस्कार की भावना ही पैदा करते रहते हैं। वैदिक काल या प्राचीन काल की बात छोड़ भी दें तो उन्होंने अपने स्वार्थ साधन के लिए मध्य कालीन इतिहास को भी विकृत करने में कुछ कसर नहीं उठा रखी। एक तरफ शिवाजी को पहाड़ी चूहा कहा गया और दूसरी ओर हिन्दू मुसलमानों के संघर्ष को अतिरंजित करके हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर विद्वेष को भड़काने का प्रयत्न किया गया।

इतिहास के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि वह तो ऐसा दीपक है जो मोह के के आवरण को नष्ट कर देता है और यथावत् समस्त लोक गर्भ को प्रकाशित कर देता है। किसी जाति या देश को अन्धकार में डालना हो तो उस के इतिहास को बिगाड़ कर उसे बहुत विकृत रूप में प्रस्तुत करो। अंग्रेजों ने इस सत्य को हृदयंगम कर लिया था। इस में सन्देह नहीं कि उन्होने बड़ी कुशलता के साथ हमारे इतिहास को बिगाड़ दिया। आज के अधिकतर शिक्षक युवक हृदय से यह विश्वास करते हैं कि भारत में आर्यों ने आक्रमण करके यहाँ के आदिवासियों को निकल दिया। आर्यों और दस्युओं के झगड़े उत्तर और दक्षिण भारत के झगड़े थे। वेद आदि धर्म शास्त्रों पर दक्षिण की द्रविड या राक्षस सभ्यता का प्रभाव पड़ा है। वे यह भी मानने लगे हैं कि प्राचीन काल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
में आर्य यज्ञों में गौ आदि की बलि देते और उन का मांस खाते थे। डार्विन के विकासवाद के झूठे सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए अंग्रेज इतिहासकारों ने हमें यह भी बताया कि हम बहुत असभ्य थे और शनैः-शनैः सभ्यता के पाठ हमने पढ़े। हमारे वेदान्त दर्शन व साहित्य पर सूफी सन्तों का और यूनानियों का असर दीखता है। इन असत्य मान्यताओं का प्रभाव हमारे देश की वर्तमान समस्याओं पर बहुत गहरा पड़ रहा है। इस के उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है। राम के उदात्ततम चरित्र को काल्पनिक अलंकार मात्र मानने वाले भी कम नहीं हैं। इस तरह भारत के स्वर्णिम इतिहास व सांस्कृतिक धरोहर को ही समाप्त करने का जाने या अनजाने पाप किया जा रहा है।

इतिहास का अर्थ है इति+ह+आस=यह हुआ था। किसी देश के जीवन में इतिहास उसकी संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित करता है, इसी लिए इतिहास के प्रदीप को स्वच्छ और विशुद्ध रहना चाहिए। उसे किसी धुंधले, मटमैले या रंगीन आवरण से मुक्त रखना चाहिए। भारत के अनेक विद्वान् शोधकों ने अंग्रेज इतिहासकारों के अनेक भ्रमों के निराकरण का प्रयत्न किया है। सच्चा ऐतिहासिक किसी पक्षपात के चश्मे से इतिहास को नहीं देखता। जब इतिहास नग्न सत्य का प्रकाश करता है तभी हमें अतीत की भूलों से लाभ उठाने का अवसर मिलता है। इसलिए इतिहासकार को बिना किसी लाग-लपेट के सत्य का ही दर्शन करना चहिए। अपने किसी अच्छे या बुरे उद्देश्य से इतिहास को विकृत नहीं करना चाहिए। ऋषि दयानंद ने प्राचीन गौरवमय इतिहास के दर्शन कराके हमें अपनी सभ्यता व संस्कृति के प्रति गर्व करना सिखाया।

कभी-कभी अच्छे उद्देश्य से भी अनेक इतिहासकार इतिहास को विकृत कर देते हैं, जिस से इतिहास अपने वास्तविक प्रयोजन में सफल नहीं होता। जिस तरह अंग्रेज इतिहासकारों ने अपने स्वार्थ के लिए हमारे इतिहास को विकृत करने का प्रयत्न किया उसी तरह मुझे भय है कि आज के हमारे राजनैतिक नेता भी इतिहास को विकृत करने का प्रयत्न कर रहे हैं, भले ही उनका उद्देश्य किसी तरह क्षन्तव्य हो। यदि पहले हिन्दू-मुसलमानों में विद्वेष-वृद्धि के लिए इतिहास को रंजित किया गया था, तो आज हिन्दू-मुस्लिम या साम्प्रदायिक एकता के नाम पर इतिहास को विकृत करने का प्रयत्न किया जा रहा है। भारत में अंग्रेजी राज के विद्वान् लेखक श्री सुन्दरलाल जी ने उन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अत्याचारी मुसलमान शासकों के कृत्यों पर भी कुछ परदा डालने का प्रयत्न किया है जो वस्तुतः निन्दा के पात्र थे। पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी अपनी भारत की कहानी में इसी तरह का प्रयत्न किया है। यदि इतिहास को एक रंगीन चश्मे से देखना अपराध है तो दूसरे रंगीन चश्मे के साथ देखना भी इतिहास के साथ अन्याय है।

आज साम्दप्रायिक एकता के नाम पर फिर इतिहास को बिगाड़ने के प्रस्ताव किए जाने लगे हैं। साम्प्रदायिक एकता के नाम पर ही हमारी पाठ्य पुस्तकों से राम और कृष्ण, शिवाजी और राणाप्रताप की कथाओं को निकालने या भारत की उन सांस्कृतिक लोक कथाओं को निकाल देने के प्रस्ताव किए जा रहे हैं, जिन का भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति के साथ गहरा सम्बन्ध है। सच्चे इतिहास में तो अपराधी को अपराधी कहना ही होगा। उसे किसी प्रयोजन वश ऊँचा और निर्दोष सिद्ध करना इतिहास और सत्य के साथ अन्याय करना होगा। ऐसा विकृत इतिहास हमें अतीत से शिक्षा लेने में बाधक ही सिद्ध होगा। यदि अनेक विदेशी आक्रामक जातियां, भारतीय धर्म, साहित्य और सभ्यता को अपना कर भारतीय बन गईं, तो इतिहासकार को उस संस्कृति का महत्त्व बताना ही होगा। उस संस्कृति का महत्त्व यह कह कर उपेक्षित नहीं किया जा सकता कि इससे किसी सम्प्रदाय के कुछ नेताओं को सन्तोष नहीं होगा। इतिहास के निष्पक्ष लेखक को हिन्दू या मुसलमान, बौद्ध या जैन अथवा शाक्त या वैष्णव किसी सम्प्रदाय के साथ रूरिआयत नहीं करनी होगी। असत्य की प्रशंसा भी वस्तुतः भ्रमकारक होती है। इसलिए मेरा भारत के विद्वान् इतिहासकारों से अपनी पूर्ण शक्ति के साथ यह अनुरोध है कि वे इतिहास को विकृत करने के प्रयत्नों की कठोर आलोचना करें। यदि समय रहते हम न चेत पाए तो मुझे भय है कि आज के अदूरदर्शी राजनैतिक नेता हमारे इतिहास को धुंधला और रंगीन प्रकाश देने वाला दीपक बना देंगे, जिस से सत्य तिरोहित हो जाएगा।

पाकिस्तान की तैयारी

पूर्व-पश्चिम दिशा में अपने ही देश के भूखण्ड पर मातृ-भूमि का अङ्ग-भंग करके एक शत्रु राज्य कर रहा है। यदि ५ वर्ष पूर्व उसने प्रत्यक्ष आक्रमण करके हमारा स्वराज्य नष्ट करने का असभ्य प्रयास किया था तो वह आज भी चुप नहीं बैठा है। वह पहले से अधिक शक्ति प्राप्त कर भारत पर आधिपत्य स्थापित करने का अपना सपना पूरा करने की योजना बना रहा है।

—श्री गोलवलकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" के नियम

१. "जन-ज्ञान" मासिक पत्रिका है। इसका उद्देश्य —(अ) महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूर्ण करना। (ब) संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद का पावन संदेश पहुंचाना। (स) अज्ञान, पाखण्ड की समाप्ति के लिए प्रत्येक सम्भव पग उठाना है।

२. "जन-ज्ञान" में व्यक्तिगत राग-द्वेष और पार्टीबाजी के लेख व सूचनायें किसी भी स्थिति में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

३. वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध विज्ञापनों का प्रकाशन भी किसी स्थिति में नहीं होगा।

४. "जन-ज्ञान" का वार्षिक शुल्क दस रुपया, एक प्रति एक रु० है। सदस्यों को विशेषांक वार्षिक मूल्य में ही दिये जायेंगे।

५. प्रत्येक माह की दो-तीन तारीख को 'जन-ज्ञान' भेज दिया जाता है। यदि दस तक भी न मिले तो समझिए आपका 'जन-ज्ञान' कोई और पढ़ रहा है। दस तारीख तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो अपने पोस्ट आफिस को पत्र लिखें और उसकी एक प्रति हमें भी भेजें। पत्र प्राप्त होने पर 'जन-ज्ञान' दुबारा बिना टिकट लगाये बैरंग भेजा जाएगा। **बीस तारीख के बाद या बिना पोस्ट मास्टर के पत्र की प्रतिलिप के किसी भी शिकायती पत्र पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।**

६. विशेषांक सुरक्षित मंगाने के लिए १ रुपये के टिकट पन्द्रह दिन पूर्व आने चाहिएं। विशेषांक किसी भी स्थिति में दुबारा न भेजे जायेंगे।

७. किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

८. समस्त चैक, मनीआर्डर आदि **'जन-ज्ञान प्रकाशन"** के नाम भेजें।

९. नए सदस्य धन भेजते समय **'नया सदस्य'** शब्द अवश्य लिखें और मनीआर्डर कूपन पर पूरा पता अवश्य लिखें।

१०. "जन-ज्ञान" के सदस्यों को 'जन-ज्ञान प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य पौने मूल्य में दिया जायेगा।

प्रबन्धक

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह रोड, करौल बाग,

नई दिल्ली-५

फोन : ५६६६३९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी पढ़े व्यक्तियों व विदेशों के लिए

प्रभावशाली अंग्रेजी साहित्य

1. LIGHT OF TRUTH

An English Trauslation of SATYARTH PRAKASH

महर्षि दयानन्द के महान् ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद १८×२२/८ साइज में, सजिल्द मूल्य १०)

स्टाक बहुत ही थोड़ा शेष है : शीघ्र मंगाएं

2. TEACHINGS OF SWAMI DAYANAND

महर्षि दयानन्द की विचार धारा और शिक्षाओं से सभी को परिचित कराने के लिए अनुपम पुस्तक। मूल्य ७५ पैसे

3. TEN COMMANDMENTS

आर्य समाज के १० नियमों की अभूतपूर्व व्याख्या : स्व० पं० चमूपति जी की लेखनी से। मूल्य १)

4. Message of the Arya Samaj to the Universe

भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार लिखित—आर्य समाज का संदेश फैलाने हेतु प्रभावशाली पुस्तिका—जिसका ८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। मूल्य ३० पैसे : २५) सैकड़ा

5. VEDIC PRAYER

संध्या, प्रार्थना मंत्र, हवन, स्वस्ति वाचन, शांति प्रकरण आदि सभी की पूर्ण व्याख्या हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ और चुने हुए भजन—भेंट के लिए अत्युत्तम मूल्य २)

[फीजी निवासी श्री स्व० हरिश्चन्द्र गाजी की पावन स्मृति में]

6. DAYANAND THE GREAT

पं० वेद मित्र ठाकुर लिखित प्रभावशाली ट्रैक्ट मूल्य १५ पैसे

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, (निकट ३१ नाई वाला)
करोल बाग, नई दिल्ली-५।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब अचानक अतिथि पधारें

तो आपको परेशान होने तथा घबराने की
जरूरत नहीं। तत्काल चन्दू की स्वादिष्ट
मिठाइयां मंगाइये और बड़ी उदारता
से अल्पाहार तथा खाने पर उनके
सामने पेश कीजिये। अपने
अतिथि को प्रसन्न करने का
यह सबसे मधुर और
सहज उपाय है।

विदाई भेंटों के लिए चमकते-दमकते डिब्बों में

चन्दू की मिठाइयां

शुद्ध घी की मिठाइयां

पंजाबी चन्दू हलवाई

कराची वाला

185, Walkeshwar Road, Teen Batti, Bombay-6. *Phone* : 363625

BRANCHES :		*Phone* :
(1) Jhaveri	...	313729
(2) Grant Road	...	351780
(3) Colaba	...	213813
(4) Dadar	...	442012
(5) Worli	...	372796
(6) Sion	...	473889
(7) Thakurdwar	...	355683
(8) Fort	...	2539212

Factory : Chandu Bhawan, Grant Road *Phone No.* 372628

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र की रक्षा कैसे हो ?

तप तपने से !

इसका उत्तर अथर्ववेद काण्ड १२ सूक्त पहले के ६३ मन्त्रों में लिखा है। इसके पहले ही मन्त्र में यह बतलाया है, कि सत्य, वृहद् भाव, सरलता अर्थात् ब्राह्मणत्व उग्रता अर्थात क्षत्रत्व, दीक्षा, तप, ब्रह्मज्ञान और यज्ञ इन से कार्य सिद्धि होती हैं। संक्षेप से कहना हो तो स्वार्थ त्याग, अभिमान त्याग करके तप तपना होना है, तब राष्ट्र रक्षा और एकता हो सकती है।

—आनन्द स्वामी सरस्वती

●

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व नेताओं ने जो आश्वासन दिये थे यदि उनको पूरा करने का यत्न ईमानदारी से किया जाता तो १००० वर्ष के पश्चात् आई हुई स्वन्तत्रता की रक्षा स्वयंमेव हो जाती और जन सामान्य में अपने मौलिक सिद्धान्तों पर आचरण करने की आस्था उत्पन्न हो जाती। परन्तु दुर्भाग्य, कि सत्ता जिन हाथों में आई उनके हृदय भारतीय परम्पराओं से भरे नहीं थे। विदेशियों की नकल करना ही उन्नति का मार्ग समझा गया। उसका जो परिणाम होना था, खुलकर सामने आ रहा है। देशवासियों में चरित्रोत्थान के स्थान पर चरित्र हीनता प्रबल वेग से आ रही है। देश भक्ति के स्थान पर देश-द्रोहिता को वरीयता मिल रही है। ऐसी स्थिति में

केवल मात्र प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द के
बताये हुए वेद-मार्ग पर चलने से ही राष्ट्र के
गौरव की रक्षा हो सकती है।

—रामगोपाल शालवाले

(मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम कुछ करें !

देश की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय एकता और गौरव को चुनौती देने वाली प्रमुख समस्याएंहैं—साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता, बेरोजगारी, महंगाई, बढ़ती हुई जनसंख्या और भ्रष्टाचार।

साम्प्रदायिकता की आग जब-जब हमारे देश में लगी है तब-तब इसने नैतिकता के मानदंडों को भस्मीभूत किया है, आत्माओं की आवाजों को झुलसाया है, मन-मस्तिष्क को विकृत किया है और मनस्ताप की घुटन में जीने को छोड़ दिया है। देश का बटवारा करके भी इस से हमारा पिंड अभी तक नहीं छूटा है। इस आग को हमेशा-हमेशा के लिए बुझा देना जरूरी है।

अस्पृश्यता हमारे समाज का वह घुन है जिसने सदैव समाज को खोखला किया है और अब भी कर रहा है। इसे निकालने की बातें ज्यादा होती हैं, प्रयत्न कम। इसका सबसे अधिक विषाक्त प्रभाव ग्रामीण जीवन में मौजूद है। राष्ट्रीय एकता कायम रखने के लिए अस्पृश्ता का निवारण अनिवार्य है। यह घुन हमारे सामाजिक ढांचे से तभी जा सकता है जब अपनत्व और समन्वय भाव की तेज किरणें इसके ऊपर सीधे बिखेरी जायें।

बेरोजगारी की गुणात्मक बढ़ोतरी एक चिन्त्य स्थिति है, जिस पर काबू पाने के लिए सामूहिक सधे कदम अपेक्षित हैं। बड़े पैमाने पर रोजगार के साधन मुहैया करने जरूरी हैं। हमारी प्रधानमंत्री इस ओर गंभीरता से सोच रही हैं। चीजों की बढती हुई कीमतों ने भी सबके सामने एक प्रश्न-चिह्न उपस्थित कर दिया है। इस समस्या से निपटने के लिए साहस, त्याग और सतत प्रयासों की आवश्यकता है।

नैतिकता का सम्बन्ध मानव के आन्तरिक पक्ष से है और भौतिकता का मस्तिष्क से। भौतिक दृष्टि से मानव बहुत आगे बढ़ गया है किन्तु नैतिकता की दृष्टि से जहाँ पर यह था वहां से भी बहुत पीछे हट गया है और निरन्तर हट रहा है। इस पतनोन्मुख स्थिति में ही भ्रष्टाचार पैदा होता, पलता और बढ़ता है। उपर्युक्त स्थितियों का मात्र आकलन हमारा लक्ष्य नहीं है। लक्ष्य है इन पर काबू पाना जिसके लिए हम प्रयत्नशील हैं और यह हमारे देश की स्वतंत्रता और राष्ट्र की एकता और गौरव अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए एक शुभ संकेत है।

३ हेस्टिंग्स मार्ग,
नई दिल्ली

शेरसिंह
राज्य मंत्री
सूचना और प्रसारण मंत्रालय तथा संचार विभाग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र को खतरा बाह्य शत्रुओं से नहीं, अपितु आन्तिरक शत्रुओं से है

—ओम्प्रकाश त्यागी

भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात राष्ट्र के सन्मुख दो ही प्रमुख कार्य रहे हैं अर्थात् राष्ट्र का निर्माण कार्य तथा राष्ट्रीय सुरक्षा। परन्तु दुर्भाग्यवश दोनों ही दिशाओं में कार्य लंगड़ा और अधूरा है और राष्ट्र प्रगति एवं उन्नति की दिशा में जाने की अपेक्षा आत्म हत्या की ओर अग्रसर है। राष्ट्र निर्माण वराष्ट्र सुरक्षा तभी सम्भव हो सकती है जबकि राष्ट्र के सही स्वरूप का ज्ञान हो। परन्तु दुर्भाग्य से सरकार को तथा देश के कर्णधारों को राष्ट्र के सही स्वरूप का ज्ञान नहीं है।

सरकार की दृष्टि में नदियों के बांध, कल कारखाने, सड़कें तथा औद्योगिक तथा भौतिक उन्नति ही राष्ट्र निर्माण है और पाकिस्तान, चीन आदि बाह्य शत्रुओं से उसकी रक्षा करना ही सुरक्षा मात्र है। यह धारणा सर्वथा निराधार तो नहीं अधूरी अवश्य है।

राष्ट्र नदी-नाले एवं कल-कारखाने का नाम नहीं है और न ही राष्ट्र की अतुल भौतिक सम्पत्ति तथा सबल तलवारें ही राष्ट्र के निर्माण एवं सुरक्षा करने में समर्थ होते हैं। संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिनके पास अतुल सम्पत्ति तथा सबल क्षात्र शक्ति थी वे भी पतन के गर्त में चले गये। उदाहरणार्थ भारत के पास कभी सम्पत्ति एवं सबल क्षात्र शक्ति का अभाव नहीं रहा परन्तु इन दोनों के होते हुए वह भी शताब्दियों तक मुट्ठी भर विदेशियों के द्वारा पददलित होता रहा।

जिस प्रकार मनुष्य शरीर और आत्मा के मिलन का नाम है उसी प्रकार एक राष्ट्र के भी दो अंग होते हैं। इन दोनों अंगों में भी आत्मा ही प्रमुख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होती है जिसके बिना राष्ट्र का बना रहन सर्वथा असम्भव होता है। नदी-नाले एवं पहाड़ ये राष्ट्र का शरीर होते हैं और उसका धर्म, संस्कृति, भाषा, सभ्यता, इतिहास एवं साहित्य आत्मा होती है। यदि राष्ट्र की आत्मा जीवित है तो भौतिक दृष्टि से वह निर्धन हो तो भी इसके अस्तित्व को कभी कोई खतरा नहीं होता। परन्तु यदि उसकी आत्मा मर जाये तो भौतिक दृष्टि-कोण से वह अपनी चरम सीमा पर पहुंचने पर भी उसे मृत्यु से कोई नहीं बचा सकता। इतिहास से परिचित सभी व्यक्ति जानते हैं कि एक समय था जब भारत का विस्तार बैबीलोनिया से इण्डोनेशिया तक था परन्तु आज भौतिक दृष्टिकोण से उन्नति करने के पश्चात् भी बेबीलोनिया, अफगानिस्तान, बर्मा, श्याम, इण्डोचीन तथा इण्डोनेशिया आदि में भारत मर चुका है और अभी सन १९४७ से पाकिस्तान के रूप में भी भारत की मृत्यु हो चुकी है। यह सब इसलिए है कि वहां हमारी आत्मा मर चुकी है।

उपरलिखित आधार पर यह बात सत्य है कि भारत भौतिक दृष्टिकोण से उन्नति कर रहा है परन्तु भारत की आत्मा अर्थात् उसकी भाषा, संस्कृति तथा धर्म दिन प्रति दिन ह्रास की ओर अग्रसर हैं और ऐसा भय लगता है कि यदि यही दशा रही तो भारत अपने अस्तित्व को खो बैठेगा।

अतः भारत को खतरा बाह्य नहीं, आन्तरिक है। खतरा सरकार एवं नेताओं से है जिन की दृष्टि में आत्मा की रक्षा का प्रश्न साम्प्रदायिक प्रश्न है और वे जान-बूझकर भारत की आत्मा को मारने पर तुले बैठे हैं। दूसरा खतरा भारत को उन लोगों से है जिनकी आस्था विदेशों में है। वे भारतीय संस्कृति की लाश पर विदेशी संस्कृतियों का झण्डा फहराना चाहते हैं। इसके लिए विदेशों से अतुल धन राशि पानी की तरह बहाई जा रही है।

१९ वीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र के सही स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए इसके निर्माण एवं रक्षा की सही कल्पना हमारे सामने उपस्थित की थी। परन्तु दुर्भाग्य वश इस देश के कर्णधारों ने उस महान् क्रान्तिकारी की उपेक्षा की और जब तक यह उपेक्षा रहेगी तबतक राष्ट्र का कल्याण होना एक स्वप्न जैसा ही प्रतीत होता है। ◈

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाड़ों में सेवन करें

बादाम पाक

शरीर को स्वस्थ बनाता है

मूल्य १०० ग्राम —५)८०

मूल्य २०० ग्राम —११)

केसर

असली केसर हमसे प्राप्त करें।

मूल्य २॥ ग्राम —६)८०

मूल्य १ ग्राम —२)९०

बादाम तेल

मस्तिष्क के लिए अनुपम है। आँतों की रुक्षता दूर करता है

मूल्य २५ मिली लीटर —६)५०

मूल्य ५० मिली लीटर —१२)५०

हरे आँवलों से निर्मित

च्यवनप्राश विशिष्ट

पुरानी खांसी, निर्बलता व दमा आदि में विशेष लाभदायक है। यह पाक पुरानी खाँसी को शीघ्र ही आराम पहुंचाता है।

मूल्य २०० ग्राम —४)९०

मूल्य ४०० ग्राम —८)७५

शीत ऋतु में सेवन कर शरीर पुष्ट करें

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्मना जायते आर्यः

— पृथ्वीचन्द एम० ए० —

शास्त्र में आया है : "जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।" परन्तु शूद्र भी तो आर्य होता है अतः 'जन्मना जायते आर्यः' सर्वथा उपयुक्त है। आज भी पूर्वकालवत् इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही आर्य पैदा होता है। अतः सारी मानव जाति आज भी आर्य जाति है।

यह विचार सर्वथा निर्मूल है कि आर्य जाति दूसरी जातियों से भिन्न थी। जब सब ही मानव आर्य थे, तो भिन्नता कैसी? इस विचार में भी कोई सार नहीं कि आर्य जाति अमुक विशेष प्रदेश या भू-भाग से उठकर अमुक-अमुक देशों में जाकर बस गई। जब सभी लोग आर्य थे तो कहाँ का आना, कहाँ का जाना? क्या अर्थ रखती हैं ये निर्मूल बातें जिनके द्वारा आज मानवता में भेद-भाव डाल रखा है? संसार भर की आर्य जाति में रंग, कद, डील-डौल, चेहरा-मुहरा या मुखाकृति भेद इत्यादि तो देश-प्रदेश अथवा वहाँ के जलवायु, वातावरण या प्रकृति भेद के अनुकूलन से पुराकाल में जो था सो आज भी है। जैसे शीत या हिमप्रधान देशों के लोग आज भी लम्बे गोरे हैं जैसे कि पुराकाल में थे। गरम देशों के काले नाटे तथा चीन आदि पीली मिट्टी वाले प्रदेश के लोग पीले—आज भी ऐसे ही पीले हैं, जैसे कि पुराकाल में थे। ये तुच्छ बातें हैं। इनसे मानव जाति के आर्यत्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मानव जाति आज भी वैसी ही आर्य जाति है, जैसी पुराकाल में थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूतल पर आज किसी भी जाति के, कहीं पर भी पैदा हुए किसी भी व्यक्ति से, चाहे पढ़ा-लिखा हो, चाहे अपढ़, बाल हो या वृद्ध, युवा हो अथवा प्रौढ़, धनी हो अथवा निर्धन, जरा पूछ कर देखिए तो वह अपने आप के बारे में यही धारणा रखता तथा प्रकट करता है कि "मैं अच्छा नेक, श्रेष्ठ उत्तम हूँ।" अपने आप को कोई भी व्यक्ति इसके विपरीत या उससे कुछ कम कुछ और मानने या समझने के लिए तैयार ही नहीं। आर्य शब्द का अर्थ भी तो अच्छा, श्रेष्ठ, नेक, उत्तम ही है और प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदय की गहराइयों से अपने आप को श्रेष्ठ, उत्तम और नेक ही मानता व समझता है। अतः स्पष्ट है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने को अन्तःकरण से आर्य स्वीकारता है और वास्तव में है भी आर्य ही। संस्कृत भाषा का प्रचलन न रहने के कारण आर्य शब्द तथा उसके अर्थों से अनभिज्ञ है, अतः अपने को आर्य कहता-कहलाता नहीं।

ईश्वर के नियम अटल हैं, सदा एक रस रहते हैं। जैसा दिन कल चढ़ा था वैसा ही आज है और जैसा दिन आज है वैसा ही दिन कल भी होगा। इतने से ही स्पष्ट हो जाता है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति हृदय से आज आर्य है तो पुरा काल में भी था और यदि पुरा-काल में मानव आर्य था तो आज भी है और आगे भी आर्य ही रहेगा। इसीलिए वेद को सारी मानव या आर्य जाति के लिए सदा के लिए धर्म-ग्रन्थ कहा गया। धर्म सदा एक ही होता है और सदा एक ही रहता है, जैसे आग का धर्म जलाना। आग का धर्म आदि काल से यही रहा है और रहेगा भी। इसमें बाद में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, न होगा ही। सृष्टि के आदि में सर्वज्ञ, त्रिकालज्ञ, सर्वशक्ति-मान् ईश्वर मानव या आर्य जाति को एक बारगी ही वेद द्वारा धर्म सदा के लिए दे देता है। फिर बाद में उसमें कोई परिवर्तन नहीं करता। परमात्मा के ज्ञान में कोई त्रुटि नहीं होती, जिसे पूरा करने के लिए वह धर्म के नए-नए पॉकिट एडीशन निकालता रहे। वेद से भिन्न और धर्म मानना या सोचना ईश्वर की सर्वज्ञता तथा सर्वशक्तिमत्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर शक करना है, जो उचित नहीं। एक बार ही सृष्टि के आदि में परमात्मा ने सारी मानवता या आर्य जाति को जो ज्ञान या धर्म, वेद द्वारा दे दिया, तो दोबारा कोई ज्ञान या धर्म उसने नहीं दिया। ये जो वेदेतर मज़हब, पन्थ, मत मतान्तर आदि मानव जाति में फैल रहे हैं, ये मानव जाति ने एक-दूसरे के विरुद्ध, एक-दूसरे को नीचा दिखाने या लूटने-पाटने या अधीन रखने, भय, ईर्ष्या, द्वेष, कायरता, लालच, महत्त्वाकांक्षा अथवा स्वार्थ सिद्धि के कारण बना रखे हैं। इसी कारण ये मानव जाति को सदा परस्पर लड़ाते रहे और लड़ाते रहेंगे। ईश्वर ऐसा तो है नहीं कि एक को धर्म कुछ बता दे और दूसरे को पहले से लड़ाने-भिड़ाने वाला धर्म बता दे। परमात्मा तो सदा मानव पर दया दृष्टि ही रखता है। परन्तु ये मज़हब, पन्थ आदि तो मानव को लड़ाते-भिड़ाते रहे हैं, अतः ये ईश्वर, उसके ज्ञान, वेद और मानवता के सर्वथा विरुद्ध हैं। ये मानव के लिए सर्वथा व्यर्थ हैं। मानव इन्हें तत्काल त्याग दे, इसी में उसका भला है। वेद द्वारा बताए गए सन्मार्ग से भटककर मानव जाति स्वयं ही मत-मतान्तरों, मज़हबों, पन्थ आदि के कुचक्रों में फँस कर सच्ची उन्नति से नितांत वंचित रही। अतः जैसे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का भी आशय था, मानव मज़हबों, पन्थों मतमतान्तरों के इस जगड्वाल को तत्काल त्याग दे और वेद की ओर मुड़े और सच्ची उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर हो। इन मज़हबों, पन्थों आदि के किसी न किसी चलाने वाले ने भी इनकी असारता को भाँपते हुए इन की अवधि निश्चित कर दी हुई है और किसी ने यह भी कह दिया कि अब से पीछे इस पंथ का और कोई प्रवर्त्तक न होगा। आर्य जाति को जो कि सारी ही मानव जाति है, इन अवैदिक मज़हबों, पन्थों, मतमतान्तरों से कुछ सम्बन्ध न रखना चाहिए। अन्यथा न ही मानव जाति में कभी एकता हो सकेगी, न ही वह सही उन्नति कर सकेगी। सदा ही परस्पर लड़ती रहेगी तथा युद्धों आदि से नष्ट होती रहेगी। लड़ाई-भिड़ाई पशुओं का काम है अतः मानव पशुता से ऊपर न उठ सकेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुराकाल में मनु महाराज के अनुसार भारत संसार भर के चरित्र का प्रहरी था जैसा कि मनुस्मृति में आया है :

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

जब संसार के सब लोग भारत से अपनी जीवन पद्धति की प्रेरणा लेते थे तब आर्यों अर्थात् संसारभर की मानव जाति का स्वर्ण युग था।

गत शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज भारतस्थ आर्यसमाज को संसारभर की मानव जाति का प्रहरी बना गए। आज की मानवता सर्वनाशरूपी ज्वालामुखी पहाड़ के मुहाने पर निस्सहाय खड़ी है, क्योंकि महाविध्वंसकारी, सर्वनाशकारी, ऐटमी अस्त्र-शस्त्र बनाए जा चुके हैं और संसार के बड़े-बड़े देश होड़ लगा कर भयंकर से भयंकरतर और भी ऐटमी अस्त्र-शस्त्र बनाते ही चले जा रहे हैं। संसार की निरीह मानवता को ऐसी कठिन परिस्थिति से निकालना आर्य समाज का सर्व प्रथम कर्तव्य है। भारतस्थ आर्य समाज संसार की मानवता को इस दिशा में नेतृत्व दे तथा मानव जाति का भी इस आड़े समय में यही सर्वप्रथम कर्तव्य है कि जो नेतृत्व भारतस्थ आर्य समाज उसे दे, उसका दृढ़ता से श्रद्धा पूर्वक पालन करे।

धर्म की रक्षा का समय आ गया। हम अब भी न जागे तो धर्म नहीं रहेगा। सभी अब पूरी शक्ति से लगें और धर्म को बचाएं। धर्म-निरपेक्षता मृत्यु का निमंत्रण है। हम अपनी मृत्यु यदि नहीं चाहते तो फिर अधर्म से दूर रहें। बढ़ते हुए पाप और हाहाकार को रोकने के लिए धर्म ही एक मात्र मार्ग है।

भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान के वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियाँ

श्री बलदेव महाराज	नैटाल	२७३ रु. ४२ पैं.
गुप्ता इन्डस्ट्रीज	मलेरकोटला	१००)
श्री रवीन्द्र कुमार	कोटा	५१)
श्रीमती चन्द्रकान्ता	नागपुर	१००)
श्री रमेशचन्द्र	बम्बई	२१)
श्री दीनानाथ आहूजा	दिल्ली	११)
श्रीमती सत्या हंस	हैदराबाद	११)
श्री काशीनाथ	शाहदरा	१)
श्री लक्ष्मीचन्द्र	दिल्ली	१)
श्री महेश आहूजा	दिल्ली	११)
श्री बनारसीदास एडवोकेट	गुरदासपुर	२०)
श्री लीना मेहता	दिल्ली	११)
श्री ला० मोतीराम	मुजफ्फरनगर	११)
श्री हरिमोहन	बम्बई	११)
श्री रामगोपाल	सरैयागंज	११)
श्री प्रीतमदेव	ग्वालियर	२५)
श्री ताराचन्द्र धीमान	दिल्ली	११)
श्रीमती सुशीला मेहता	दिल्ली	११)

१० रु० की आहुति भेजने वालों की सूची

१. श्री जगदीश प्रसाद भारद्वाज—रामनगर। २. श्री चूनीभाई आर्य—सावली। ३. श्री शिवकुमार—खड़खड़ी। ४. श्री केशवलाल—सैंदड़ा। ५. श्री हरिश्चन्द्र जी—जींद मंडी। ६. श्री कन्हैयालाल—गोरखपुर। ७. श्री लालमन आर्य—हिसार। ८. श्री कुंवाराम—पूना। ९. श्री बाघ जी भाई अमरसिंह—हडाड। १०. श्री धन सिंह—नन्दगढ़। ११. श्री बाबूराम वर्मा—मेरठ। १२. श्री भंवर सिंह—चांदपुर। १३. डा० रामपाल सिंह - इस्लामपुर १४. श्री कश्मीर सिंह परमार—स्वारघाट। १५. श्री भगवानदेव शर्मा—टंकारा। १६. ला० परमेश्वरीदास—मुजफ्फरपुर। १७. श्री त्रिभुवननाथ - दिल्ली। १८. श्री अमरनाथ पाहवा—उज्जैन। १९. श्री रामप्रसाद शर्मा—जबलपुर। २०. श्री चौबीसराम चन्द्रवंशी—जर्वे। २१. श्री रामनाथ पाहवा— उ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation

क्या आप इतना भी नहीं कर सकते ?

"जन-ज्ञान" का संचालन उस के सदस्य ही कर रहे हैं और उन्हीं के प्रयत्नों से ही संपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं ।

किन्तु कभी-कभी आलस्य प्रमाद से हमारे कतिपय सदस्य चन्दा समाप्ति की सूचना मिलने पर न धन भेजते हैं, न उत्तर देते हैं और वी० पी० भेजी जाती है तो लौटा देते हैं।

एक वी० पी० पी० लौटाने में १) ५० की हानि होती है ।

अतः अच्छा तो यही है कि धन समाप्ति की सूचना मिलते ही आप १० रू० मनीआर्डर से भेज दें और यदि किसी कारण से सदस्य न रहना चाहें तो दस पैसे खर्च कर एक कार्ड भेज कर हमें सूचित अवश्य कर दें।

वस्तुतः हम 'जन-ज्ञान' के ऐसे सदस्य चाहते हैं जो इसे अपना समझें। इस की उन्नति के लिए यत्नशील हों और इस के द्वारा महर्षि की लक्ष्य पूर्ति के लिए प्रयत्नशील हों । जो अपना कार्य समझ इस का प्रचार करें ।

'जन-ज्ञान' के सदस्यों पर ही इसकी प्रगति और उन्नति निर्भर है । अतः यह साधारण सा सहयोग तो प्रत्येक सदस्य अवश्य ही दे कि चन्दा समाप्ति की सूचना मिलते ही—

या तो धन भेज दें या एक कार्ड डाल कर मना कर दें ।

आप का यह साधारण सा सहयोग हमारे लिए बहुत बड़ा सहायक होगा । आशा है कि सभी इस ओर ध्यान देंगे ।

विनीता
राकेश रानी
संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रकाशवती शास्त्री

स्वतंत्रता : पाप और नारी

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान की लिखी इन प्रेरक कविताओं ने भारत में स्वतंत्रता की भावना को जाग्रत किया। महात्मा गांधी के प्रेरक उपदेशों से देश जागा। "स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार" है, जन-गण ने इसे अपना मूलमंत्र बनाया। इतना ही नहीं, स्वतन्त्रता की देवी को रिझाने के लिए बाल-वृद्ध, युवक-युवतियों ने अपने घरों को छोड़कर कारागार के कष्ट सहे, लाठियों और गोलियों के वार सहे।

इस प्रकार वर्षों-वर्षों की त्याग, तपस्या तथा बलिदान के फलस्वरूप स्वतन्त्रता की देवी के दर्शन हुए। पराधीनता की दुःख भरी रात कटी परन्तु उस पुण्य प्रभात में जहाँ एक ओर जीवन की लालिमा थी तो दूसरी ओर देश विभाजन के अभिशाप की कालिमा भी थी। जो हो स्वतन्त्रता की देवी रण-चण्डी के समान अनेकानेक निरीह प्राणियों का रक्तपान करके तृप्त तो हुई।

१५ अगस्त को भारत की जनता ने हार्दिक उल्लास से इस देवी का स्वागत किया। स्वाधीनता के दिए वरदानों से भारत का घर भरने लगा—भारत के खेत हरे-भरे हुए, उद्योगशालाएँ तैयार हुईं, विद्युतशक्ति की प्राप्ति के लिए अनेकों बाँध बने। भारत ने आत्मनिर्भरता की दौड़ में कई देशों को पीछे छोड़ दिया।

वर्षों-वर्षों की सोई नारी-जाति ने भी अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को पहचाना, वह कार्य-क्षेत्र में उतरी। ऊँची से ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त करके पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर कार्य करके अपना अर्धांगिनी का नाम सार्थक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
किया। और करती भी क्यों न ? नारी क्या नर से कम है ? आज भारत के कोने-कोने में जाइए, दफ्तरों में, स्कूलों में, कालिजों में, मंत्रालयों में, राज्य सभाओं में, अस्पतालों में-सर्वत्र नारी का बोलबाला है। बाहर के क्षेत्र को अपना कर नारी ने घर के क्षेत्र की उपेक्षा की हो, ऐसी बात भी नहीं। परन्तु प्रगति की इस दौड़ में नारी अपना मुख्य कर्त्तव्य भूल गई, अपना सच्चा दायित्व बिसार बैठी, और ऐसा बिसारा कि अब भूलती ही जा रही है। होड़ की तीव्रता में उसे वास्तविकता का ज्ञान ही नहीं रहा।

देश की संस्कृति और धर्म की रक्षा सदा ही नारियों ने की है। पुरुषार्थ के मद में अंधे पुरुष का उचित पथ-प्रदर्शन सदा नारी ने ही किया है।

पिता के आज्ञाकारी राम जब वन में प्रविष्ट हुए तो वन के रहने वाले मुनि लोग उनके पास आगे आए। उन्होंने बताया कि वे राक्षसों के अत्याचारों से पीड़ित हैं। क्षात्र धर्म के मूर्तरूप राम ने तुरन्त —

निशचिर हीन करौं मही, भुज उठाय प्रण कीन्हु

धर्म पत्नी सीता ने तुरन्त राम के इस प्रण पर प्रतिबन्ध लगाते हुए कहा —

आप कभी किसी निरपराध को नहीं मारेंगे ! राम ने एवमस्तु कह कर सीता की आज्ञा को शिरोधार्य किया। राम ने वन में रहने वाले केवल उन्हीं राक्षसों को मारा जिनका मारना अनिवार्य हो गया था, अन्यथा दूसरों को अपने अहिंसामय उपदेशों से मानव बना दिया।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त आज की नारी ने भी यही करना था। परन्तु खेद-महाखेद, वियोगी हरि के शब्दों में —

निजता से तो वैर है, है परता सो प्रीत
निज तो पर, पर निजभए, दई नई यह रीत।

आज की नारी, विशेषकर जो अपने को सुरक्षित कहती है, वह पूर्णरूपेण पाश्चात्य सभ्यता में रंग गई है। आज वह माँ नहीं मम्मी है, मासी, चाची, मामी न हो कर केवल आँटी रह गई है। आज वह अपने बच्चों को वेद-मंत्र न सिखा कर ईसाई मिशनरियों की शरण में भेज कर उसे बाईबल पढ़ने पर विवश करती है। स्कूल से आ कर बच्चा जब उसे नमस्ते के स्थान पर गुडईवनिंग करता है, तो उसका दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। उसके बच्चे दीवाली-होली के राष्ट्रीय पर्व मनाने के स्थान पर घर में क्रिसमिस का पेड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगाते हैं—बड़े दिन पर पार्टी करते हैं। बच्चों का जन्मदिन वह उन्हें तिलक लगाकर पूजा या यज्ञ से नहीं मनाती वरन् मोमबत्तियाँ बुझा कर तथा केक काट कर मनाती है।

ऋषि दयानन्द ने जिस वैदिक-शिक्षा के प्रचार के लिए नारी-शिक्षा की घोषणा की थी, वह भारत के दुर्भाग्य से दूर होती जा रही है, घरों में प्रातः वेद, रामायण-महाभारत के पाठ के स्थान पर चायपान तथा धूम्रपान की घूम है।

स्कूलों के पाठ्यक्रमों को देखकर तो और भी रोना आता है। आज हमारे अच्छे-अच्छे छात्र-छात्राओं को वेद मंत्र तो क्या, रामायण और महाभारत के पात्रों के नाम तक ज्ञात नहीं। आज भारत की नारी भौतिकवाद के चरम लक्ष्य को पाने की चेष्टा में सत्य धर्म को भी भूल बैठी है। उसका पति साधारण क्लर्क ही क्यों न हो उसे तो घर में फ्रिज, टेलीफोन, रेडियो, टेलीवीज़न, सभी कुछ चाहिए। बड़े-२ अंग्रेजी स्कूलों में बच्चों को भेजने के लिए बड़ी-बड़ी फीसें भी चाहिए। आर्यसमाज के सत्संगों में जाने के लिए न उसके पास अवकाश है न उसके बच्चों के पास। क्योंकि वे तो बड़ी ऊँची-ऊंची कक्षाओं में पढ़ते हैं। परन्तु सिनेमा के तीन-तीन घंटे के तीन शो तक देखने के लिए भी उनके पास समय तथा धन दोनों ही जाने कहाँ से आ जाते हैं?

कहाँ से आ जाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर तो और भी भयानक है। देश में फैला भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, स्मगलिंग, ब्लैकमार्किटिंग क्या इसी उत्तर के बेटे-पोते नहीं हैं?

एक ओर आज की नारी जहाँ स्वयं धन कमा कर महालक्ष्मी बन गई है, दूसरी ओर भोगलिप्सा की पराकाष्ठा को पाने के लिए पुरुष को पाप के गर्त में गिराने का काम भी नारी ही कर रही है। नारी जब घर में बार-बार पुरुष को ताड़ना देती है—"मेरी सहेली तो कार में आई थी। मेरे घर में तो सोफा भी नहीं, फ्रिज भी नहीं, कैसे करूँ अपनी सहेलियों का स्वागत? कैसे बुलाऊं मैं बड़े-बड़े लोगों को अपने घर और मैं स्वयं भी कैसे जाऊँ? न तो मेरे पास कोई अच्छी साड़ी है, न आभूषण" और सुनिए, वह कहती है—अगर "आप इसी प्रकार समाज से कट गए तो न तो हमारे लड़के-लड़कियों को अच्छी नौकरियाँ ही मिलेंगी और न ही बढ़िया घरों में ब्याह ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो सकें"। पुरुष का हृदय नारी के इन तर्कों से हार जाता है, पिघल जाता है, बस, फिर वही हो जाता है जो नहीं होना चाहिए था। पाप का घन आने लगता है। तो बताइए यदि ऐसी नारियें को धर्मपत्नी कहोगे तो पाप-पत्नी कौन होगी ?

देश की अनेकानेक कठिनाइयों से प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता की रक्षक धर्म-पत्नी नारी ही हो सकती है, पापपत्नी नहीं।

अब यदि नारी पुरुष को ललकार कर कहे—'मेरे घर में केवल धर्म की कमाई आएगी, मुझे अधर्म का एक पैसा भी नहीं चाहिए, मैं मोटा पहनूंगी सादा खाना खाऊँगी, कम से कम में निर्वाह करूँगी। मेरे बच्चे वेद पढ़ेंगे, भारतीय साहित्य और देश की संस्कृति के रंग में रंगेंगे, देश में रहें या विदेश रहें भारत के कहलाएंगे' तो फिर देखिए, देश की समस्त समस्याएँ आन की आन में सुलझती हैं या नहीं।

मेरी कामना

यही मन में केवल अरमान, राष्ट्रहित हो जाऊँ बलिदान।
मेरे तन की हर पोरी से बने देश की माला,
जलती रहे सदा अन्तर में देश-प्रेम की ज्वाला,
बोटी-बोटी कटने पर भी रहे देश की शान।
देश-द्रोहियों के जीवन-भर छक्के खूब छुड़ाऊँ,
भारत की सीमा-रक्षा हित शैल-शिखर बन जाऊँ,
मेरी गोली से छलनी हों शत्रु जनों के प्राण।
दीन-हीन सब भाव भगा कर आगे कदम बढ़ाऊँ,
आँच नहीं आये स्वदेश पर कुछ करके दिखलाऊँ,
ध्वजा तिरंगा फर-फर फहरे तब सौभाग्य महान्।

—केशवदेव मिश्र 'कमल'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा का

जीवन का आधार धर्म है, धर्म फैलता ज्ञान से,
ज्ञान हमें देता नवजीवन, गति प्राणों के गान से।
प्राणों को ज्योतित करना ही, शाँति सौख्य का सार है,
जीवन पथ पर फूल बिछाना, शिक्षा का आधार है।

शिक्षा है सरगम वह जिससे, मधुमय गीत बजा करते हैं,
जिसको पाकर मन-मन्दिर के, झंकृत तार सजा करते हैं।
मानस में ज्योतित करती जो, स्वर्ण दीप को है साकार,
गति देती वह, मति देती है, करती प्राणों का शृंगार।

फैशन-मस्ती उच्छृंखलता, शिक्षा के वरदान नहीं हैं,
झूठ बोलना, धोखा देना, शिक्षा के परिणाम नहीं हैं।
घृणा द्वेष को जन्म दे रही, शिक्षा यह तो विषधारा है,
सर्वनाश धरती का करने, फैल रही अद्‌भुत ज्वाला है।

आज देश का भाग्य विदेशी शिक्षा के हाथों कम्पित है,
खाओ-पीओ मौज उड़ाओ, पशु बन मानवता शंकित है।
किन्तु न मिलता मार्ग उसे कुछ,भटक-भटककर रह जाता है,
ज्ञान दीप बुझ गया अगर तो, ज्योति कहाँ से मन पाता है ?

मन मेरा भी डोल रहा है, मन उनका भी डोल रहा है,
भीगा-भीगा सबका ही मन, अवगुंठन कब खोल रहा है ?
जीवन का सारा नक्शा ही, बदल गया है आज धरा पर,
तुम भी बोलो ज्योतिर्मय का, बन्धन कोई खोल रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधार

भारत के सारे नर नारी, बता सकेंगे आज मुझे क्या,
अपने मन में सोच रहे हैं, शिक्षा का उद्देश्य कहो क्या ?
मिले नौकरी, ऊँची पदवी, इससे ज्यादा क्या सोचा है ?
जन्म मृत्यु का चक्र चला तो, क्या होगा क्या यह सोचा है ?

शिक्षा जीवन का प्रकाश है, राह बताती अन्तिम क्षण की,
शिक्षा मानस का विकास है, झंकृतियाँ हैं मृत्युंजय की।
सौख्य सुधा का अमृत मंथन, शिक्षा है मधु पुंज प्रेम का,
मधुर मिलन का ऐक्य भावका, प्राण-प्राण के नेह दान का।

इस गरिमा को आओ समझें, अपना जीवन सफल बनायें,
वेद-ज्योति से मन-मन्दिर में, आत्म शक्ति का दीप जलायें।
सत्य साधना स्नेह भाव का, बल मिलता सच्ची शिक्षा से,
धर्म शक्ति जागृत होती है, भाव पूर्ण वैदिक शिक्षा से।

शिक्षा का सौंदर्य हमें, सुन्दरता अद्भुत दे सकता है,
मन की सारी कलुष कालिमा. क्षणभर में ही हर सकता है।
नव-जीवन की चाह जिन्हें हो, जिन्हें चाहिए सुख-संसार,
वे आयें प्रभु की शिक्षा का, देखें दिव्य लोक आगार।

जन मानस में जब जागेगा, शिक्षा का सच्चा मधु रूप,
वह दिन होगा-विजय दिवस, या मानवता का सच्चा रूप।
वैदिक शिक्षा की गंगा में, आओ करलें हम सब स्नान,
पाप-ताप मिट जायें हृदय के, गूँजें मन में प्रभु के गान।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योतिषी जी

जब किसी ग्रहग्रस्त, ग्रहरूप, ज्योचिर्विदाभास के पास जाके वे कहते 'हे महाराज ! इसको क्या है ?" तब वे आकर कहते हैं कि 'इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़े हैं। जो तुम इनकी शान्ति पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाए, नहीं तो बहुत पीड़ित होकर मर जाए तो भी आश्चर्य नहीं।' (उत्तर) जैसे यह पृथिवी जड़ है, वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें ? (प्रश्न) क्या जो संसार में राजा-प्रजा सुखी-दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नहीं है ? (उत्तर) नहीं, ये सब पाप-पुण्यों के फल हैं। (प्रश्न) तो क्या ज्योतिःशास्त्र झूठा है ? (उत्तर) नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है वह सच्ची, जो फल की लीला है वह सब झूठी है। (प्रश्न) क्या जो यह जन्मपत्र है सो निष्फल है ? (उत्तर) हाँ, वह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोकपत्र' रखना चाहिए, क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है परन्तु वह आनन्द तब तक होता है कि जब तक जन्मपत्र बन के ग्रहों का फल न सुनें। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने के लिए कहता है तब उसके माता, पिता पुरोहित से कहते हैं। 'महाराज ! आप बहुत अच्छा जन्मपत्र बनाइए'। जो धनाढ्य हो तो बहुत सी लाल-पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्मपत्र बना के सुनाने को आता है। तब उसके मां-बाप ज्योतिषी जी को कहते हैं 'इसका जन्मपत्र अच्छा तो है ?' ज्योतिषी कहता है जो है सुना देता हूं। इसके जन्म-ग्रह, और मित्रग्रह भी बहुत अच्छे हैं, जिनका फल धनाढ्य और प्रतिष्ठावान् जिस सभा में जा बैठेगा तो सबके ऊपर इसका तेज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पड़ेगा' शरीर से आरोग्य और राज्यमानी होगा। इत्यादि सुनकर पिता आदि बोलते हैं। वाह-२ ज्योतिषी जी आप बहुत अच्छे हो।' ज्योतिषी जी समझते हैं इन बातों से कार्य सिद्ध नहीं होते। तब ज्योतिषी बोलता है कि 'यह ग्रह तो बहुत अच्छे हैं, परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं अर्थात् फलाने-फलाने ग्रह के योग से दवें वर्ष इसका मृत्युयोग है। इसको सुन के माता-पिता जी आदि पुत्र के जन्म के आनन्द को छोड़कर शोकसागर में डूबकर ज्योतिषी जी से कहते हैं कि महाराज जी! अब हम क्या करें? तब ज्योतिषी जी कहते हैं 'उपाय करो'। गृहस्थ पूछे क्या उपाय करें?' ज्योतिषी जी प्रस्ताव करने लगते हैं कि ऐसा-ऐसा दान करो। ग्रह के मन्त्र का जप कराओ और नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराओगे तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न हट जाएंगे। अनुमान शब्द इसलिए है, कि जो मर जाएगा तो कहेंगे, हम क्या करें, परमेश्वर के ऊपर कोई वस नहीं है, हमने तो बहुत यत्न किया और तुमने कराया उसके कर्म ऐसे ही थे। और जो बच जाए तो कहते हैं कि देखो, हमारे मन्त्र, देवता और ब्राह्मणों की कैसी शक्ति है। तुम्हारे लड़के को बचा दिया। यहाँ यह बात होनी चाहिए कि जो इनके जप-पाठ से कुछ न हो तो दूने-तिगुने रुपये उन धूर्तों से ले लेने चाहियें, क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा है कि 'इसके कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी को नहीं। वैसे ग्रहस्थ भी कहें कि "ये अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है, तुम्हारे करने का नहीं" और तीसरे गुरू आदि भी पुण्यदान करा के आप ले लेते हैं, तो उनको भी वही उत्तर देना चाहिए, जो जोतिषियों को दिया था।

नाक कटों की कहानी

कोई आदमी चोरी करता पकड़ा गया था। न्यायाधीश ने उसका नाक-कान काटने का दंड दिया। जब उसकी नाक काटी गई तब वह धूर्त्त नाचने गाने और हंसने लगा। लोगों ने पूछा कि तू क्यों हंसता है? उसने कहा कि कुछ कहने की बात नहीं है। लोगों ने पूछा ऐसी कौन-सी बात है? उसने कहा कि बड़ी भारी आश्चर्य की बात है हमने ऐसी कभी नहीं देखी। लोगों ने कहा, क्यों, क्या बात है? उसने कहा कि, मेरे सामने साक्षात् चतुर्भुज नारायण खड़े हैं। मैं देखकर बड़ा प्रसन्न होकर नाचता-गाता अपने भाग्य को धन्यवाद देता हूं, कि मैं नारायण का साक्षात् दर्शन कर रहा हूं। लोगों ने कहा, हमको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दर्शन क्यों नहीं होता ? वह बोला नाक की आड़ हो रही हैं जो नाक कटवा डालो तो नारायण दीखे, नहीं तो नहीं। उनमें से किसी मूर्ख ने चाहा कि नाक जाय तो जाय परन्तु नारायण का दर्शन अवश्य करना चाहिये। उसने कहा कि मेरी भी नाक काटो, नारायण को दिखलाओ। उसने उसकी नाक काटकर कान में कहा कि तू भी ऐसा ही कह नहीं मेरा और तेरा उपहास होगा। उसने भी समझा कि अब नाक तो आती नहीं इसलिए ऐसा ही कहना ठीक है। तब तो वह भी वहां उसी के समान नाचने, कूदने, गाने, बजाने, हँसने और कहने लगा कि मुझको भी नारायण दीखता है। वैसे होते-होते एक सहस्त्र मनुष्यों का झुण्ड हो गया और बड़ा कोलाहल मचा और अपने सम्प्रदाय का नाम "नारायणदर्शी" रक्खा। किसी मूर्ख राजा ने सुना, उनको बुलाया। जब राजा उनके पास गया तब तो वे बहुत कुछ नाचने, कूदने, हँसने लगे। तब राजा ने पूछा कि यह बात क्या है ? उन्होंने कहा कि साक्षात् नारायण हमको दीखता है। (राजा) हमको नहीं दीखता ? (नारायणदर्शी) जब तक नाक है, तब तक नहीं दिखेगा और जब नाक कटवा लोगे तब नारायण प्रत्यक्ष दीखें। उस राजा ने विचारा कि यह बात ठीक है। राजा ने कहा ज्योतिषी जी ! मुहूर्त देखिए। ज्योतिषी जी ने उत्तर दिया जो हुक्म, अन्नदाता, दशमी के दिन प्रातः काल आठ बजे नाक कटवाने और नारायण के दर्शन करने का बड़ा अच्छा मुहूर्त है। वाह रे पोप जी ! अपनी पोथी में नाक काटने कटवाने का भी मुहूर्त लिख दिया। जब राजा को इच्छा हुई और उन सहस्त्र नकटों के सीधे बांध दिया तब तो वे बड़े ही प्रसन्न होकर नाचने, कूदने और गाने लगे। यह बात राजा के दीवान आदि कुछ-कुछ बुद्धि वालों को अच्छी न लगी। राजा के एक चार पीढ़ी का बूढ़ा नब्बे वर्ष का दीवान था। उसको जाकर उसके परपोते ने, जो कि उस समय दीवान था, यह बात सुनाई। तब उस वृद्ध ने कहा कि वे धूर्त हैं। तू मुझको राजा के पास ले चल, वह ले गया। बैठते समय राजा ने बड़े हर्षित हो के उन नाक कटों की बातें सुनायीं। दीवान ने कहा कि सुनिये महाराज ! ऐसे शीघ्रता न करनी चाहिए। बिना परीक्षा किए पश्चात्ताप होता है। (राजा) क्या ये सब सहस्र पुरुष झूठ बोलते होंगे ? (दीवान) झूठ बोलो वा सच। बिना परीक्षा के सच झूठ कैसे कह सकते हैं ? (राजा) परीक्षा किस प्रकार करनी चाहिये ? (दीवान) विद्या सृष्टि क्रम प्रत्यक्षादि प्रमाणों से (राजा) जो पढ़ा न हो, वह परीक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कैसे करे ? (दीवान) विद्वानों के संग से ज्ञान की वृद्धि करके। (राजा) जो विद्वान न मिले तो ? (दीवान) पुरुषार्थी को कोई बात दुर्लभ नहीं है। (राजा) तो आप ही कहिये कैसा किया जाए ? (दीवान) मैं बुड्ढा और घर में बैठा रहता हूं और अब थोड़े दिन जीऊँगा भी। इसलिए प्रथम परीक्षा मैं कर लेऊँ। तत्पश्चात् जैसा उचित समझें वैसा कीजियेगा। (राजा) बहुत अच्छी बात है। ज्योतिषी जी ! दीवान जी के लिये मुहूर्त देखो। (ज्योतिषी) जो महाराज की आज्ञा। यही शुक्ल पंचमी दश बजे का मुहूर्त अच्छा है। जब पंचमी आई तब राजा जी के पास आठ बजे बूढ़े दीवान जी ने राजा जी से कहा कि सहस्त्र दो सहस्त्र सेना ले के चलना चाहिए। (राजा) वहां सेना का क्या काम है ? (दीवान) आपको राज्यव्यवस्था की खबर नहीं। जैसा मैं कहता हूँ वैसा कीजिये। (राजा) अच्छा जाओ भाई, सेना को तैयार करो। साढ़े नौ बजे सवारी करके राजा सबको लेकर गया। उनको देखकर वे नाचने और गाने लगे। जाकर बैठे। उनके महन्त जिसने यह सम्प्रदाय चलाया था, जिसकी प्रथम नाक कटी थी, उसको बुलाकर कहा कि आज हमारे दीवान जी को नारायण का दर्शन कराओ। उसने कहा, अच्छा। दश बजे का समय जब आया, तब एक थाली मनुष्य के नाक के नीचे पकड़ रक्खी। उसने पैना चाकू ले नाक काट थाली में डाल दी और दीवान जी के नाक से रुधिर की धार छूटने लगी। दीवान जी का मुख मलिन पड़ गया। फिर उस धूर्त ने दीवान जी के कान में मन्त्रोपदेश किया कि आप भी हँसकर सबसे कहिये कि मुझको नारायण दीखता है। अब नाक कटी हुई नहीं आवेगी। जो ऐसा न कहोगे तो तुम्हारा बड़ा ठट्ठा होगा, सब लोग हँसी करेंगे। वह इतना कह अलग हुआ और दीवान जी ने अंगोछा हाथ में ले नाक की आड़ में लगा लिया। जब दीवान जी से राजा ने पूछा कहिए, नारायण दीखता व नहीं ? दीवान जी ने राजा के कान में कहा कि कुछ भी नहीं दीखता। वृथा इस धूर्त ने सहस्त्रों मनुष्यों को भ्रष्ट किया। राजा ने दीवान से कहा कि अब क्या करना चाहिए ? दीवान ने कहा इनको पकड़ के कठिन दंड देना चाहिए। जब लों जीवें तब लों बन्दीघर में रखना चाहिए। और इस दुष्ट को कि जिसने इन सब को बिगाड़ा है गधे पर चढ़ा बड़ी दुर्दशा के साथ मारना चाहिये। जब राजा और दीवान कान में बातें करने लगे, तब उन्होंने डरके भागने की तयारी की। परन्तु चारों ओर फौज ने घेरा दे रखा था, न भाग सके। राजा ने आज्ञा दी कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबको पकड़ बेड़ियाँ डाल दो और इस दुष्ट का काला मुख कर गधे पर चढ़ा। इसके कन्ठ में फटे जूतों का हार पहिना सर्वत्र घुमा छोकरों से धूल राख इस पर डलवा चौक चौक में जूतों से पिटवा कुत्तों से नुचवा मरवा डाला जावे। जो ऐसा न होवे, तो पुनः दूसरे भी ऐसा काम करते न डरेंगे। जब ऐसा हुआ, तब नाक कटे का सम्प्रदाय बंद हुआ।

सादगी : उन्नति

कुंभकोणम कॉलिज के अँगरेज प्रिंसिपल श्री विल्डरबैक का आदेश था कि कॉलिज के प्रत्येक छात्र को धोती, कुरता या कोट पहन कर आना चाहिए। एक दिन श्रीनिवास नामक एक गरीब विद्यार्थी केवल धोती पहने हुए आया। वर्षा के दिन थे। अतः देह पर डालने वाला सूती दुपट्टा भीग गया था। अनुशासन प्रिय प्रिंसिपल ने छात्र पर आठ आने जुरमाना कर दिया। श्रीनिवास ने कहा, "श्रीमान, आठ आना भरना मेरे लिए अशक्य है। छह आने का तो दुपट्टा बाजार में मिलता है। मैं तो उसे भी खरीदने में असमर्थ हूँ। कल की ही बात है। पिताजी को एक मित्र ने अचार बनाने के लिए कुछ आम भेंट किये थे, किंतु माँ उन्हें स्वीकार न कर सकी, क्योंकि अचार के लिए आवश्यक नमक खरीदना हमारे लिए अशक्य था।"

उसी साँझ प्रिंसिपल महोदय अपने अध्ययन-कक्ष में घुटने टेक कर भगवान से क्षमा याचना कर रहे थे कि आज मैंने एक गरीब छात्र को दंडित किया है। भगवान, मुझे इस कठोरता और धृष्टता के लिए क्षमा करें। बाद में उन्होंने श्रीनिवास का आठ आने का जुरमाना माफ कर दिया।

१९३१ में वही प्रिंसिपल लंदन में अपने आवास गृह में, अपने उसी पुराने विद्यार्थी श्रीनिवास का अभिनंदन कर रहे थे, जो अब राइट ऑनरेबल डॉ० श्रीनिवास शास्त्री बन चुका था और जिसे लंदन के 'सामान्य नागरिक' का पद उसी संध्या अर्पित किया गया था। श्री विल्डरबैक के आनंद का ठिकाना न था कि उनका वह छात्र अपने वाणी दाक्षिण्य और विचारों की उदात्तता के कारण अँगरेज प्रजा द्वारा समादृत हो रहा है और प्रिवी कौंसिल का सदस्य भी बना है।

●●

हमारे देश के बच्चों को अपनी आदतें अच्छी बनानी चाहिए। झूठ बोलना, चोरी करना व फैशन करना छोड़कर सब की सेवा और अच्छे गुणों को धारण करना जाहिए—

●●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान-प्रकाशन सगर्व भेंट करता है—

१९७१ का आकर्षक कलैंडर

२२×३२ साइज में
महर्षि दयानन्द के अपूर्व चित्र में
मूल्य केवल ५० पैसे। डाक-रेल व्यय पृथक रेल
से कम-से-कम २५ प्रतियां मंगाएं : डाक से ५
चित्र देखकर आप मुग्ध हो जाएंगे
आज ही अपना आदेश भेजिए

★

कतिपय नये प्रकाशन

२. **आर्य समाज के दस नियम**—आर्य समाज के दस नियमों की प्रभावशाली व्याख्या प्रसिद्ध विचारक श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक ने तैयार की है। (पं० चमूपति जी के Ten Commandments के आधार पर)
—१०) सैकड़ा

३. **आर्य कौन ?** श्री रघुनाथ पाठक लिखित यह टैक्ट प्रचार के लिए उत्तम है। —१०) सैकड़ा

४. **माँ गायत्री**—१०१ गायत्री मंत्रों की व्याख्या मूल्य १)

५. **स्वास्थ्य शत्रु : अंडा**—आचार्य जगदीश विद्यार्थी लिखित
—१०) सैकड़ा

६. **मर्यादा पुरुषोत्तम राम** : पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार लिखित
—२०) सैकड़ा

अपना आदेश आज ही भेजिये

जन ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद विज्ञान का भंडार है

यह सत्य प्रमाणित हो गया

और

अब आप

इसका प्रचार कीजिए !

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

लिखित महान् ग्रन्थ

Sciences in The Vedas

आधुनिक युग का अनुपम प्रकाशन

अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक, छपाई काग़ज़ जिल्द और
वह सब कुछ जो आप चाहते हैं—

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (ज)
रामलीला मैदान नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक आर्य समाज, कॉलेज, स्कूल तथा वाचनालय
और आर्य परिवार में रहना ही चाहिए

वैदिक धर्म सम्बन्धी साहित्य

1. The Arya Samaj it's cult, and Creed.

आर्यसमाज के गौरव, प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री वैद्यानाथ शास्त्री द्वारा लिखित अनमोल ग्रन्थ, जो प्रत्येक विरोधी विचार वाले व्यक्ति को वैदिक विचारधारा का बनाने की सामर्थ्य रखता है। भेंट के लिए सर्वोत्तम।

सजिल्द, पृष्ठ २७०, मूल्य १०)

2. Gems of Aryan Wisdom

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री लिखित, अंग्रेजी में वैदिक विचार धारा वेद मन्त्रों के आधार पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की गयी है। शिक्षित वर्ग की आँखें खोलने के लिये अनुपम।

3. Vedic Caste System २५ पैसे

वैदिक वर्ण व्यवस्था पर आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री लिखित यह पुस्तिका अनुपम।

४. तत्वार्थदर्श। पृष्ठ २७० सजिल्द मूल्य ५.००

लेखक—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री। ईश्वर, जीव, प्रकृति आदि सभी दार्शनिक विषयों पर विद्वान लेखक ने अत्यन्त सुलझे और प्रभावशाली ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। ग्रन्थ स्वाध्याशील व्यक्तियों के लिए संग्रह योग्य है।

५. वैदिक इतिहास विमर्श। मूल्य ७.२५

वेद में इतिहास नहीं है इस विषय पर सबसे अधिक प्रामाणिक ग्रन्थ। विरोधी विद्वानों के मस्तिष्क बदलने में समर्थ आचार्य जी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ

६. वैदिकयुग और आदि मानव 'वैदिक एज' में प्रकाशित विचारों का मुंह तोड़ उत्तर : आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री की सशक्त लेखनी से। मूल्य ४.००

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित
आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा सम्पादित
अंग्रेजी में आर्यसमाज का एक मात्र मासिक

VEDIC-LIGHT

के सदस्य बनिए
नमूना पत्र लिखकर बिना मूल्य मंगाइये
वार्षिक मूल्य १० रु० विदेश में १ पौंड

प्रकाशन विभाग—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के भारतीय प्रधानमंत्री

लाल ! बहादुर !

काश ! कि वे कुछ दिन और रह जाते तो भारत "भारत" बन जाता। राम और कृष्ण के देश को सदियों के बाद मन चाहा नेता मिला था जो जीता था जनता के लिए और चलता था जन-जन के लिए।

धोती-कुरता पहने सीधे सादे भारत के किसान की प्रतिमूर्ति लाल बहादुर शास्त्री ने ताक़त से—भाषणों से नहीं, प्यार से जनता के हृदय पर राज्य किया था।

पाकिस्तानी बर्बर आक्रमण के समय उन्होंने जिस बहादुरी से राष्ट्र का नेतृत्व किया उस की मिसाल मिलनी क्या आसान है। उनका रामलीला मैदान का ऐतिहासिक भाषण कि "अयूब साहब दिल्ली पहुंचना चाहते थे तो हम भी यदि टहलते-टहलते लाहौर तक पहुँच गए" आज भी कानों में गूंज रहा है।

उनकी हत्या हुयी या नहीं, जो भी हो वे चले गए। एक बार लगा कि हमारा भाग्य चला गया। देश अनाथ हो गया। ललिता के भाग्य का सिन्दूर नहीं भारत मां के मस्तक का तिलक मिट गया।

और आज .....हम अनाथ, नेता विहीन, देश की दुर्दशा देख सोचते हैं कि क्या अंत होगा इस महान् देश का ?

गुंडा गर्दी, अराजकता, देशद्रोह, सांप्रदायिकता और नारेबाजी अपना कर मेरे देश के नेता घर को आग लगा रहे हैं —मैं सोच रहा हूँ .....काश कोई लाल बहादुर बनकर भारत मां के गौरव को बचा लेता तो हम कहते सबल स्वर में .....

लाल बहादुर की जय !

— भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

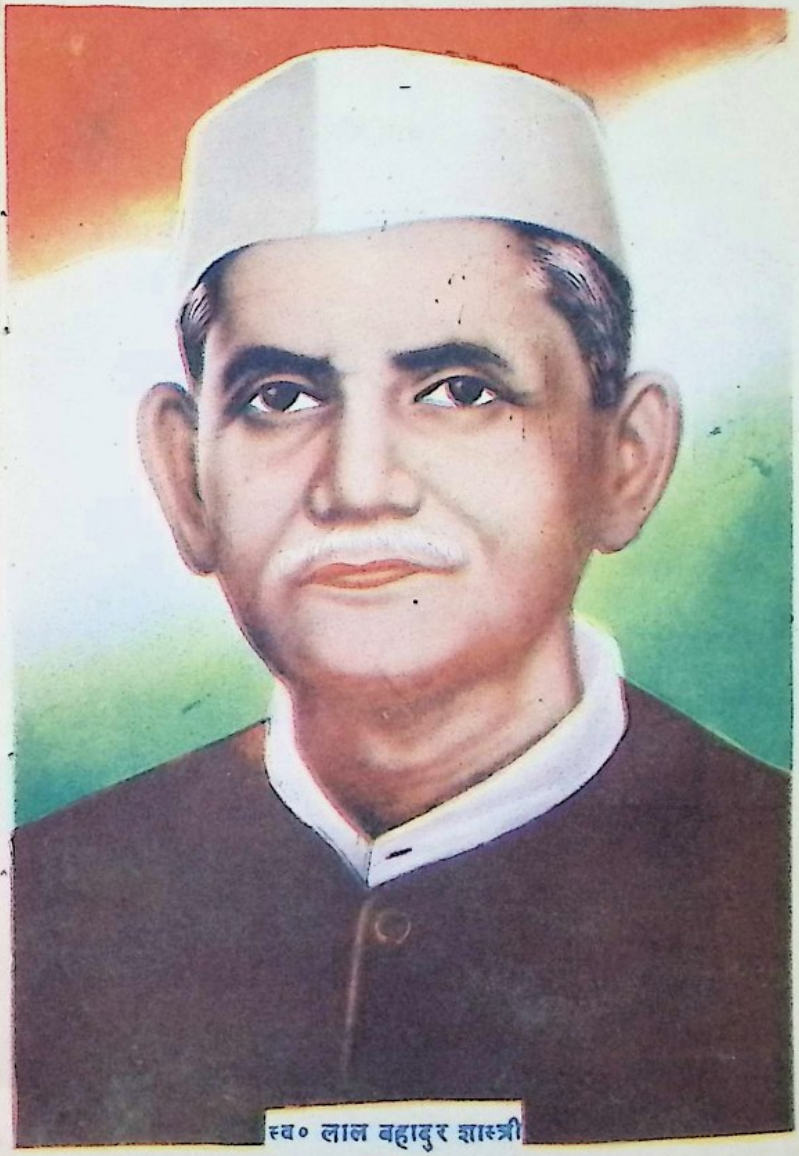

स्व० लाल बहादुर शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वतन्त्रता के अग्रदूत

वीर केसरी

चन्द्रशेखर आज़ाद

जिन का जीवन

हमारी प्रेरणा का स्रोत है

कौन भूल सकता है–

स्वतंत्रता दिवस पर

नेताजी

सुभाषचन्द्र बोस

को

काश कि हम उनकी

राह पर चलते.....?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से सम्बन्ध रखता है, जीवन-काल में कन्फ्यूशियस के सिद्धान्तों पर आचरण करता हो और मृत्यु होने पर उसका संस्कार बौद्ध रीति के अनुसार होता है।

शिन्तो मतानुयायियों का विश्वास है कि जब भूमि और आकाश अलग हुए और जब वृक्षों और लताओं में बोलने की शक्ति थी तभी देवता आकाश से उतरे और उन्होंने जापान देश को और वहाँ के निवासियों को जन्म दिया। तभी से लेकर वहाँ देवताओं की सन्तान मिकादोओं (मानवीय कामियों) का शासन है। ऐतिहासिक दृष्टि से जापान में एक ही वंश अत्यन्त प्राचीन-काल से शासन करता चला आ रहा है और राजा ही मुख्य धार्मिक नेता भी समझा जाता है।

कोजीकी और निहोंगी

शिन्तो मत की धार्मिक पुस्तकें दो हैं—कोजीकी और निहोंगी। परन्तु ये दोनों पुस्तकें बहुत प्राचीन न होकर आठवीं ईसवी शताब्दी की रचनाएं हैं। ईसा की पाँचवीं शताब्दी में जापान में चीनियों के द्वारा चीनी लिपि और शिक्षा का प्रचार किया गया। उससे पहले वहाँ के लोग धार्मिक, नैतिक और शासन सम्बन्धी बातों और नियमों को केवल ज़बानी याद रखते थे और श्रुति-परम्परा से चलाते थे। लिखित रिकार्ड कोई नहीं था। चीनी लिपि के प्रचार के बाद लिखित रिकार्ड आरम्भ हुआ। छठी-सातवीं शताब्दी में जापान में महायान बौद्ध धर्म का भी प्रचार आरम्भ हो गया और आठवीं शताब्दी में वह वहाँ का राज्यधर्म बन गया। सम्भवतः बौद्धधर्म के माध्यम से ब्राह्मी लिपि का वहाँ प्रवेश हुआ हो और चीनी और ब्राह्मी दोनों लिपियाँ एक दूसरी से प्रभावित हुई हों।

'कोजीकी' का संकलन ईसा की सातवीं शताब्दी के आरम्भ में किया गया और उसके शीघ्र ही पश्चात् 'निहोंगी' की रचना हुई। 'कोजीकी' में प्राचीन बातों का रिकार्ड है और निहोंगी में जापान का आरम्भ से लेकर इतिहास है। दोनों पुस्तकों के विषय बहुत कुछ समानता रखते हैं और जापान के प्राचीन देवी-देवताओं, दिव्य एवं मानवीय कामियों के अद्भुत जीवन-चरितों तथा आश्चर्यजनक कार्यों का वृत्तान्त प्रस्तुत करते हैं। इन कथाओं अथवा घटनाओं का आरम्भ लगभग आठवीं शताब्दी पू० ई० से आरम्भ होता है। जापानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिन्तोओं के अनुसार जापान की उत्पत्ति उसी समय हुई। जापान का पहला शासक निनिगी (Ninigi) था जो सूर्य देवी (Sun-goddess) का पोता था और उसकी आज्ञा से स्वर्ग से क्युशु नामक द्वीप में उतरा। उसके पश्चात् उसका बेटा जिम्मु तेनो (Jimmu Tenno) शासक बना और उसने यमातो (Yamato) को अपनी राजधानी बनाया। रिकार्ड के अनुसार उसका राज्यारोहन ६६० पू० ई० में हुआ। उसी की वंशपरम्परा अब तक शासन करती चली आती है।

कोजीकी और निहोंगी में प्रतिपादित पुराण-कथा के अनुसार आदिकालीन अव्यवस्था और विप्लव से, जबकि सब ओर अन्धकार था, स्वर्ग में एक-एक करके तीन देवता उत्पन्न हुए। उनमें सबसे पहले मध्याकाश का स्वामी (Mid-Sky-Master) आविर्भूत हुआ और उसने उच्चोत्पादक (High Producer) तथा दिव्योत्पादक (Divine Producer) को जन्म दिया। उन दोनों को ही कामी-रोगी (नर) और कामी-रोमी (स्त्री) कहा जाता है। ये तीनों अदृश्य हो गये और उनके पश्चात् वैसे ही और तीन उत्पन्न हुए। कुछ देर तक यही क्रम चलता रहा। इस परम्परा का अन्तिम जोड़ा था—इज़ानागी और इज़ानामी (Izanagi & Izanami)। इस युगल ने ओनागोरो-जिमा द्वीप को बनाया और वहाँ उतर पड़े। वे दोनों पति-पत्नी रूप में रहने लगे। उन्होंने पहले तो जापान के द्वीप-समूह को जन्म दिया और फिर जल, वायु, पर्वत, खेत, धुन्ध, अग्नि, तूफान को तथा अनेक देवी-देवताओं को जन्म दिया। अग्नि देवता को जन्म देते समय इज़ानामी की मृत्यु हो गई तथा वह योमी अर्थात् अन्धकार प्रदेश में चली गई। उसका पति भी उसके पीछे ही गया, परन्तु उसे वापिस लौटना पड़ा। योमी से लौटकर इज़ानागी ने सागर में स्नान किया। स्नान करते समय उसकी बायीं आँख से सूर्य देवी (Sun-goddess) का और दायीं आँख से चन्द्र देव (Moon-god) का जन्म हुआ। उसके नाक धोने से सूसा-नो-ओ नामक वर्षा-आन्धी के देवता का जन्म हुआ। इज़ानागी के अदृश्य हो जाने के बाद सूसा-नो-ओ ने अपनी बहन सूर्य देवी (Sun-goddess) के शासित प्रदेश में बड़ा उपद्रव किया। इस पर सूर्य देवी एक गुहा में छिप गई। परिणामस्वरूप सब ओर अन्धकार छा गया और व्यवस्था भंग हो गई। अन्य देवी-देवताओं के द्वारा बड़ा प्रयत्न करने के बाद वह बाहर निकली और फिर से संसार में प्रकाश हुआ और व्यवस्था स्थापित हुई। सूर्य देवी ने अपने पोते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निनिगी (Ninigi) को जापान के द्वीप-समूह पर शासन करने के लिए भेजा और उसे एक दर्पन दिया जिसमें वह जब चाहे, सूर्यदेवी को देख सकता था और परामर्श कर सकता था। निनिगी ने वह दर्पण अपने बेटे जिम्मू तेनो (Jimmu Tenno) को दिया। वह दर्पण अब शिन्तोमत के सबसे अधिक पवित्र एवं सम्मान आईस (Ise) के मन्दिर में स्थित है। उसके साथ ही दो अन्य पवित्र वस्तुएं—एक तलवार और एक हीरा—वहाँ रखी हैं। ये तीनों वस्तुएं शिन्तोओं द्वारा तीन पवित्र कोश समझे जाते हैं।

कोजीकी और निहोंगी में इन सब देवी-देवताओं को एवं दिव्य गुण सम्पन्न श्रेष्ठ मनुष्यों को भी 'कामी' शब्द से अभिहित किया गया है और शिन्तो देवताओं की पूजा-अर्चना अथवा कामी-नो-मिची की व्यवस्था तीन रूपों में की गई है। राजकीय शिन्तो (State Shinto), पारिवारिक शिन्तो (Domestic Shinto) और साम्प्रदायिक शिन्तो। राजकीय अथवा राष्ट्रीय शिन्तो के रूप में जापानी लोग एक परिवार हैं और सभी अपने आपको अमेतरासु (Amaterasu) अथवा सूर्यदेवी (Sun goddess) का तथा सूसा-नो-ओ का वंशज मानते हैं तथा शिन्तो मन्दिरों में अमेतरासु अथवा सूर्यदेवी की पूजा के लिए जाते हैं। सबसे अधिक सम्मान्य एवं पवित्र मन्दिर ईसा (Ise) का मन्दिर माना जाता है।

पारिवारिक शिन्तो (Domestic Shinto) का सम्बन्ध व्यक्तिगत पूजा से है। इसकी व्यवस्था घर में ही की जाती है। इसके लिए प्रत्येक घर में स्थान निश्चित रहता है जो पारिवारिक स्थिति के अनुसार होता है। धनवान परिवारों में इसके लिए पृथक् कमरा निश्चित होता है और सामान्य स्थिति के परिवारों में घर की कोई अलमारी अथवा कोना आदि। वहाँ सूर्यदेवी के प्रतीक रूप में एक दर्पण रखा रहता है। उसके साथ एक लकड़ी की टिकिया रखी रहती है जिस पर किसी आदरणीय पूर्वज का नाम लिखा रहता है। साथ ही एक काग़ज़ की टिकिया पर स्थानीय देवी-देवता का नाम लिखा रहता है। इसके अतिरिक्त किसी राष्ट्रीय वीर, देवी-देवता, कन्फ़्यूशियस अथवा बोधिसत्त्व की मूर्तियाँ रहती हैं। विशेष अवसरों पर वहाँ बत्तियाँ जलाई जाती हैं तथा चावल, फूल, फल आदि की भेंट चढ़ाई जाती है। किसी के मर जाने पर उसका मृतक संस्कार या तो घर के अन्दर बने हुए शिन्तो मन्दिर अथवा पूजा स्थान के सामने होता है और या भगवान् बुद्ध की मूर्ति के सामने। घरेलू पूजास्थान कामीदाना (Kamidana) कहा जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साम्प्रदायिक शिन्तो के रूप में मुख्य पाँच साम्प्रदायिक वर्ग हैं—(१) विशुद्ध शिन्तो सम्प्रदाय (Pure Shinto Sects), (२) कन्फ़्यूशियन सम्प्रदाय (Confucian Sects), (३) पार्वत्य सम्प्रदाय (Mountain Sects), (४) पवित्र सम्प्रदाय (Purification Sects) और (५) निष्ठा-आरोग्य सम्प्रदाय (Faith-Healing Sects)। इन साम्प्रदायिक वर्गों के अनेक अवान्तर भेद हैं। जैसे विशुद्ध शिन्तो सम्प्रदाय के तीन वर्ग हैं—शिन्तो क्यो (Shinto Kyo), शिनरी क्यो (Shinri Kyo) और तेशु क्यो (Taishu Kyo)। कन्फ़्यूशियन सम्प्रदाय दो हैं—शूसी हा (Shusei Ha) और तेसी क्यो (Taisei Kyo)। पार्वत्य सम्प्रदाय तीन हैं—जिक्को क्यो (Jikko Kyo), फ्यूसो क्यो (Fuso Kyo) और आनतेक अथवा मितेक क्यो (Ontake Kyo or Miteke Kyo)। पवित्र सम्प्रदाय दो हैं—शिन्शू क्यो (Shinshu Kyo) और मिसोगी क्यो (Misogi Kyo)। निष्ठा-आरोग्य सम्प्रदाय तीन हैं—कुरोज़ुमी क्यो (Kurozumi Kyo), मांको क्यो (Monko Kyo) और तेनरी क्यो (Tenri Kyo)। विस्तारभय से इन सबका विस्तृत विवरण नहीं दिया जा रहा।

सामान्य सिद्धान्त

शिन्तो सम्प्रदाय के साधारणतया निम्नलिखित दस आचरणीय सिद्धान्त हैं:—

(१) देवताओं की इच्छा का उल्लंघन मत करो।
(२) अपने पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्यों को मत भूलो।
(३) राज्य की आज्ञाओं का उल्लंघन मत करो।
(४) देवताओं की नेकी को मत भूलो जिसके द्वारा विपत्तियाँ दूर होती हैं और रोगों का परिहार होता है।
(५) यह मत भूलो कि यह संसार एक विशाल परिवार है।
(६) अपने व्यक्तित्व की सीमितता को मत भूलो।
(७) दूसरों के क्रुद्ध होने पर भी क्रुद्ध मत होवो।
(८) अपने काम में और अपना कर्तव्य पालन करने में आलस्य मत करो।
(९) धार्मिक शिक्षाओं में दोष मत निकालो।
(१०) विदेशी शिक्षाओं से प्रभावित मत होवो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१०

ईसाई मत (Christianity)

ईसाई मत को अंग्रेजी में क्रिश्चियनिटी अथवा क्रिस्ट्यनिटी (Christianity) कहा जाता है। इस मत को नसरानी मत भी कहते हैं। इसके प्रवर्तक जीसस क्राईस्ट (Jesus Christ) थे जिन्हें भारत में यसू मसीह अथवा ईसा मसीह के नाम से पुकारा जाता है। जीसस क्राईस्ट अथवा यसू मसीह का जन्म बनिस्राईल जाति में हज़रत मूसा से उन्तीसवीं और हज़रत दाऊद (Devid) से अठ्ठाईसवीं पीढ़ी में हुआ। उनके पिता का नाम जोसफ़ (Joseph) और माता का मेरी (Mary) था। जोसफ़ यहूदी था और बढ़ई का काम करता था। बाईबल में जीसस को भी यहूदियों का बादशाह कहा गया है और उन्होंने वस्तुतः यहूदियों के सुधार के लिए कार्य किया था और अपना बलिदान दिया था। बाईबल में वे स्वयं कहते हैं कि "मैं इस्राईल के परिवार की खोई हुई भेड़ों के अतिरिक्त और किसी के पास नहीं भेजा गया।"[१] उन्होंने अपने शिष्यों को भी यही आज्ञा दी थी कि "तुम इस्राईल घराने की खोई हुई भेड़ों के पास ही जाना"।[२]

ईसाइयों के मतानुसार मेरी जोसफ के साथ विवाह और समागम से पूर्व ही पवित्र शक्ति (Holy Ghost) की शक्ति से गर्भवती हो गई थी। इस प्रकार वे कँवारी के लड़के थे और मेरी को आदरपूर्वक होली वर्जिन (Holy Virjin) कहा जाता है। जिस समय जीसस क्राईस्ट का जन्म हुआ उस समय उनके देश की राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थिति ठीक नहीं थी। यहूदी लोग रूढ़िवादी और अन्धविश्वासी हो चुके थे। वे मन्दिरों में अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों की कुर्बानी देते थे। यहूदी पुजारी मनमाने अत्याचार करते थे। उनकी प्रत्येक बात ईश्वरीय आज्ञा समझी जाती थी। उनके सामने कोई भी व्यक्ति मुंह खोलने का साहस नहीं कर सकता था। उनके अतिरिक्त वहाँ पारसी,

१—मैथ्यू०, १५/२५
२—वही, १०/५-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोमन और मिश्री लोग भी थे। पारसी मोक्ष-प्राप्ति के लिए अग्नि और सूर्य की पूजा करते थे। रोमन और मिश्री मूर्तिपूजक थे। वे अनेक देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते थे। जीसस क्राईस्ट ने प्रचलित कुरीतियों को दूर करने के लिए तथा दया अहिंसा आदि की शिक्षा देने के लिए प्रचार किया। जीसस के सिद्धान्त मूल रूप में, वही थे जो यहूदी मत के थे, परन्तु उन पर बौद्धधर्म का प्रभाव था।

जीसस ने अपना प्रचार-कार्य तीस वर्ष की आयु में आरम्भ किया था। बारह वर्ष से लेकर तीस वर्ष तक के उनके जीवन के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। यह अठारह वर्ष का समय उनका विदेश-भ्रमण का समय माना जाता है। अनेक विद्वानों का अनुमान है कि इस समय का अधिकांश भाग उन्होंने भारतवर्ष में बिताया और बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए अथवा विभिन्न देशों में प्रचारार्थ घूमते हुए किसी बौद्ध धर्माचार्य या बौद्ध भिक्षुओं के सम्पर्क में रहे। श्री पाल ब्रंटन ने इस बात पर जोर दिया है कि जीसस लगभग तेरह वर्ष की आयु में सच्चे धर्म की खोज में घर से निकल पड़ा था। उन्होंने कुछ समय तक मिश्र में रहकर वहाँ प्रचलित धार्मिक मतों और विश्वासों का अध्ययन किया। सिकन्दरिया (Alexandria) में उनका योगियों, दार्शनिकों और विद्यार्थियों से साक्षात्कार हुआ। वहाँ ही उनका एक भारतीय व्यापारी से परिचय हुआ जिसके साथ वे दक्षिण भारत पहुँचे तथा अट्ठाईस वर्ष की आयु तक भारत में ही रहकर और विभिन्न प्रान्तों में घूम-घूमकर शिक्षा ग्रहण करते रहे। कुछ समय तक उन्होंने अपने शिक्षक तथा उनके अन्य शिष्यों के साथ हिमालय की एक गुहा में योग-साधना भी की। उन्तीस-तीस वर्ष की आयु में वे वापिस लौटे।[1] बत्तीस-तेंतीस वर्ष की आयु में उन्हें मृत्यु दण्ड देकर मार दिया गया। उनके उपदेश और विचार बाईबल (New Testament) में संग्रहीत हैं। परन्तु इनका संकलन बाद में उनके शिष्यों द्वारा किया गया। उन्होंने स्वयं कोई पुस्तक नहीं लिखी। उनका सारा उपदेश मौखिक था। कई विद्वानों का जिनमें अनेक यूरोपीय ईसाई विद्वान् भी सम्मिलित हैं, कहना है कि ईसाई मत का प्रवर्तन एवं प्रचार भी वास्तव में जीसस की मृत्यु के बाद ही हुआ और इस दिशा में सेंट पाल (St. Paul) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

१. Paul Brunton Ph. D.; The Inner Reality; The Mystery of Jesus, pages २७३-२७६।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाई मत का वास्तविक प्रचार ईसा की चौथी सदी के पूर्वार्ध में इटली के राजा कॉन्सटेन्टाईन (Constantine) के ईसाई बनने पर हुआ। उसने समस्त रोमन राज्य को ईसाई बना दिया।

बाईबल (न्यू टैस्टामैण्ट)

ईसाई मत की धार्मिक पुस्तकों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक वह भाग जो इल्हामी अथवा श्रुति कहलाता है और दूसरा वह जो अश्रुत कहलाता है। इल्हामी अथवा ईश्वरीय पुस्तक बाईबल (Bible) है। बाईबल दो मुख्य भागों में विभक्त है—ओल्ड टैस्टामैण्ट (Old Testament=पुराना अहदनामा) और न्यू टैस्टामैण्ट (New Testament=नया अहदनामा)। ओल्ड टैस्टामैण्ट को हिब्रू बाईबल (Hebrew Bible) भी कहा जाता है। यह यहूदियों की धर्म पुस्तक है और इसे ही, जैसा कि पीछे बताया जा चुका है, वे तौरेत (Torate) कह कर भी पुकारते हैं। इसका संक्षिप्त परिचय यहूदी मत में दिया जा चुका है। न्यू टैस्टामैण्ट ईसाई मत की ईश्वरीय अथवा इल्हामी पुस्तक है। परन्तु जैसा कि पीछे बताया गया है हजरत जीसस क्राईस्ट ने स्वयं कोई पुस्तक नहीं लिखी थी और न ही उन्होंने यह दावा किया था कि कोई पुस्तक उन पर अवतरित हुई है। उनका सारा उपदेश मौखिक था। ईसाई लोग सम्भवतः बाईबल को इसलिये ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं कि इसमें जीसस के उपदेश लिखे हैं और उन्होंने अपने शिष्यों को कहा था "मैं केवल उन्हीं बातों का प्रचार करता हूँ जो मेरे पिता ने मुझे सिखाई थीं।" बाईबल की रचना उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्यों द्वारा की गई। यह भी कहा जाता है कि बाईबल की विभिन्न प्रतियों की रचना दूसरी ईसवी शती में हुई थी। उससे पहले ईसाई लोग जीसस की शिक्षाओं को जबानी स्मरण रखते थे और जबानी ही उनका प्रचार करते थे। दूसरी शती में सर्वप्रथम लोगों से पूछ-पूछकर बाईबल को विभिन्न पुस्तकों का रूप दिया गया। सेंट ल्यूक़ अथवा लूक़ा (St. Luke) का कहना है—"मैंने उचित समझा कि सब बातों का क्रम आरम्भ से ठीक-ठीक पूछकर उनको तेरे लिये क्रम से लिखूं।"[1] शिष्यों द्वारा केवल मौखिक रूप में प्रचार किये जाने के कारण तथा लगभग सौ-सवा

१. लूका, १/१-३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सौ वर्ष बाद लिखे जाने के कारण सम्भवतः जीसस के मूल उपदेशों में भी कुछ न कुछ अन्तर अवश्य आ गया होगा। सेंटपाल के उपदेश तो स्पष्टतः जीसस के उपदेशों से भिन्नता रखते हैं।[1]

कहा जाता है कि आरम्भ में बाईबल (न्यू टैस्टामैण्ट) की चौदह विभिन्न प्रतियां थीं जिनमें बहुत पाठभेद था। उनमें सैद्धान्तिक बातों में भी भिन्नता थी। इसलिए उन्हें सन्दिग्ध दृष्टि से देखा जाता था। अतः उनके परीक्षण और पर्यन्वेक्षण के लिए भिन्न-भिन्न समयों में छः सभाएं की गईं और विभिन्न बाईबलों के पाठ की यथार्थता पर विचार किया गया। पहली सभा ३२५ ई० नाइस (Nicaea) नामक नगर में हुई। दूसरी सभा सन् ३६४ ई० में हुई। इसे टोडिसा सभा कहा जाता है। तीसरी सभा सन् ३९७ ई० में कार्थेज में हुई जिसे कार्थेज सभा (Carthage Council) का नाम दिया जाता है। इसके पश्चात् तिरलो, फ्लोरेंस, तिरन्थ और वेसिल नामक अन्य सभाएं भी भिन्न-भिन्न समयों पर हुईं। सन् १५३० ई० में प्रोटैस्टैण्ट सम्प्रदाय वालों ने सभा बुलाई। उसके बाद सन् १८७० ई० में वैटिकन सभा (Vatican Council) हुई। सन् १९२० और १९२५ ई० में स्टॉक होम में कान्फ्रेंसें हुईं। इन सभाओं के मुख्य उद्देश्य तीन थे—(१) बाईबल का स्वरूप निश्चित और उसे अन्तिम रूप देने का यत्न करना, (२) ईसाई मत के सिद्धान्तों का निर्णय करना और (३) विभिन्न ईसाई सम्प्रदायों में एकता स्थापित करते हुए उन्हें एक प्लेटफार्म पर लाने का यत्न करना। परन्तु इनमें से किसी भी उद्देश्य में अब तक सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है और कोई भी अन्तिम निर्णय नहीं हो सका है। जहां तक बाईबल के स्वरूप का सम्बन्ध है, इन सभाओं में बड़े वाद-विवाद के बाद चार प्रतियों को प्रामाणिक स्वीकार किया गया—(१) सेंट मैथ्यू (St. Methew) की बाईबल (मती की इञ्जील), (२) सेंट मार्क (St. Mark) की बाईबल (मरकस की इंजील), (३) सेंट लूका (St. Luke) की बाईबल (लूक़ा की इंजील) और (४) सेंट जॉह्न (St.John) की बाईबल (युहना की इंजील)। इनमें से पहली में २८ अध्याय हैं, दूसरी में २६, तीसरी में २४ और चौथी में २१। रचना काल की दृष्टि से इनमें से सेंट मार्क की बाईबल को सबसे पुरानी समझा जाता है। उसके पश्चात् सेंट लूक़ा की बाईबल लिखी गई। तदनन्तर सेंट मैथ्यू की बाईबल बनी और सबके पश्चात् सेंट जॉह्न की। परन्तु इनमें

१. St. Paul: I Corinthians, १५/१३-१४, ३०, ५१-५३; २/२।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से क्राईस्ट के समय में अथवा उनकी मृत्यु के तुरन्त पश्चात् लिखी हुई कोई भी नहीं है। इन सबकी सर्वमान्यता के सम्बन्ध में अब भी मतैक्य नहीं है। श्री पाल ब्रंटन का कहना है—"न्यू टैस्टामैण्ट को पढ़ते समय तुम्हें अनुभव करना चाहिये कि इसके सभी भाग समान प्रेरणा देने वाले और समान महत्त्व के नहीं हैं। चूंकि उनकी रचना के बाद बहुत-सा समय बीत चुका है इसलिए इन धर्मग्रन्थों में प्रक्षेप, वृद्धि, अशुद्ध अनुवाद और अन्यथा कथन (गलतबयानी) भी है। इन तथ्यों के आधार पर आप समझ सकते हैं कि इस धर्मग्रन्थ में लिखा हुआ प्रत्येक शब्द आवश्यक रूप से पवित्र नहीं है। और इसलिए तुम्हें यथार्थ अंश को छांटने के लिए अपनी अन्तः प्रेरणा और आलोचनात्मक शक्ति का उपयोग करना होगा।"[१]

श्री आर्ची जे० बाह्म (Archie J. Bahm) ने अपनी पुस्तक 'विश्व के जीवित धर्म' (The world's living Relisions) पृ० २६८ से २७६, में नाईस (Nicaea) सभा में तथा परवर्ती सभाओं में उठाये गये एवं निर्धारित किये गये प्रश्नों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। तदनुसार उस सभा में निम्न-लिखित प्रश्नों पर विचार किया गया। (क) ईश्वर (God), क्राईस्ट (Christ) और पवित्र आत्मा (Holy Spirit or Holy Ghost) नामक तीन तत्त्वों (Trinity) की प्रामाणिकता से सम्बन्धित मतभेद, क्योंकि अनेक ऐसे पादरी थे जो क्राईस्ट को ईश्वर का बेटा नहीं मानते थे और न ही पवित्र आत्मा (Holy Ghost) के सिद्धान्त को स्वीकार करते थे। वे क्राईस्ट को ईश्वर मानने को भी तैयार नहीं थे तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे। एरियस (Arius—C. २५६-३३६) का कहना था कि ईश्वर एक है और सूली (cross)

---

१. You should realize in reading a book Bible the New Testa-Ment that all parts are not equal in inspiration & value. Because of time which has elepsed since they were compiled we find in these scriptures interpolations, addition, mistranslations even misrepresentations. In view of these facts, you will understand that every word embodied in a scripture is not necessarily sacred, and you should, therefore, use your intuition & your critical faculty to sift what really matters from what does not. The Inner Reality, chapter X1V, page 265.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर नहीं मर सकता। जीसस क्राईस्ट की सूली पर मृत्यु हुई, इसलिए वह ईश्वर नहीं हो सकता, वरन् वह भी अन्य मनुष्यों के समान ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया हुआ पुरुष था जिसे असाधारण महापुरुष कहा जा सकता है, परन्तु ईश्वर या ईश्वर का बेटा नहीं। पैलाजियस (Pelagius) ने इस सिद्धान्त को मानने से भी इन्कार कर दिया कि ईश्वर ने मनुष्य पाप करने के लिए उत्पन्न किया और फिर उसे दण्ड दिया। फिर भी बहुमत से जिन सिद्धान्तों को स्वीकार किया गया वे इस समय उपलब्ध बाईबल की चारों प्रतियों में संकलित हैं।

बाईबल की उपलब्ध चारों प्रतियों का संक्षिप्त विषय तथा घटनाक्रम निम्नलिखित है।

जीसस क्राईस्ट की उत्पत्ति तथा उसकी बारह वर्ष की आयु तक की घटनाएं। तीस वर्ष की आयु में जीसस क्राईस्ट के अपने देश में लौटकर प्रचार करना; शिष्य बनाकर उन्हें इधर-उधर प्रचार के लिए भेजना; चमत्कार दिखाना; पशु-पक्षियों की हत्या न करने तथा खतना न कराने का उपदेश देना; जीसस को ईश्वर का इकलौता बेटा मनवाना तथा उसके साथ प्रेम रखना; सदाचार की बातों का वर्णन करना; जीसस का बन्दी बनना, फांसी पाना और कब्र में दबाया जाना ; मरने के पश्चात् जीवित हो जाना; शिष्यों से मिल कर बातचीत करना और फिर आकाश पर चढ़कर ईश्वर की दाहिनी ओर बैठना आदि।

बाईबल के अनुसार ईसाई मत के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं—

१ जीसस क्राईस्ट ईश्वर का इकलौता बेटा है जिसे उसने (ईश्वर ने) अपना अन्तिम पैग़म्बर बना कर संसार में भेजा था। उनके पश्चात् कोई नबी, रसूल या पैग़म्बर उत्पन्न नहीं हुआ।

२ बाईबल ईश्वरीय पुस्तक है और इसलिए अत्यन्त पवित्र है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरी पुस्तक ईश्वरीय नहीं है।

३ जीसस को ईश्वर का इकलौता बेटा और अन्तिम पैग़म्बर मान कर उस पर ईमान लाकर पापों से छूट कर स्वर्ग प्राप्त किया जा सकता है।

४ पिता (ईश्वर), पुत्र (जीसस) और पवित्रात्मा (Holy Ghost) नामक तीन तत्त्वों में आस्था रखनी चाहिये।

५ सब प्राणियों पर दया का भाव रखना चाहिये। पशु-पक्षियों का वध करना बुरा है। इससे ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६ खतना कराना ठीक नहीं। यह ईश्वरीय आज्ञा के विरुद्ध है। हृदय की पवित्रता ही वास्तविक खतना है।

७ सिब्त (Sabbath day) के दिन कार्य करना बुरा नहीं है। क्योंकि ईश्वर भी प्रतिदिन कार्य करता है।

८ ईश्वर की सत्ता और उसके गुण, कर्म तथा स्वभाव; संसार की उत्पत्ति और प्रलय; हिसाब का दिन, मुर्दों का जीवित होना; सब के कर्मों का हिसाब लेकर उन्हें स्वर्ग या नरक में भेजना; स्वर्ग और नरक की सत्ता आकाश पर मानना; स्वर्ग में सब प्रकार के सुख और नरक में कठिन दुःखों की प्राप्ति; छः दिन में सृष्टि का निर्माण; फरिश्तों, शैतान, भूत, प्रेत, भाग्य, मनुष्य की उत्पत्ति आदि के सम्बन्ध में ईसाइयों के भी वही सिद्धान्त हैं जो यहूदियों के हैं। वस्तुतः हज़रत ईसा (जीसस क्राईस्ट) ने गम्भीर दार्शनिक तत्त्वों की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। उन्होंने तत्कालीन समाज को जीवन को उच्च बनाने की ही शिक्षा दी थी। वे अहिंसा और दया के प्रचार द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। परन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि उन्हीं के अनुयायियों ने उनके तथा ईसाई मत के नाम पर अत्यधिक रक्तपात किया जिससे यूरोपीय इतिहास के पृष्ट रंगे हुए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११

इसलाम

'इसलाम' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ इसलाम धर्मानुयायियों के अनुसार "शान्ति में प्रवेश करना है"।[१] तदनुसार मुस्लिम अथवा मुसलमान उस व्यक्ति को कहा जाता है जो "परमात्मा और मनुष्य के साथ पूर्ण शान्ति रखता है"।[२] 'बृहत् हिन्दी कोश' में इसलाम शब्द का अर्थ लिखा गया है—"स्वीकार करना; ईश्वरेच्छा के सामने सिर झुका देना; मुहम्मद का चलाया हुआ धर्म; मुसलमानों की समष्टि आदि"। इससे ज्ञात होता है कि इसलाम वह मत है जिसके द्वारा मनुष्य अल्ला (ईश्वर) की शरण लेता है और मनुष्यों के प्रति शान्तिपूर्वक अहिंसा और प्रेम का व्यवहार करता है। इसलाम के सच्चे अनुयायियों को इस प्रवृत्ति को समझना और अपनाना चाहिए।

इसलाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद साहब थे जिनका जन्म ११ नवम्बर, सन् ५६९ ई० को तदनुसार १२ रबीउल अव्वल[३] सोमवार को अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का में हुआ। आपके पिता का नाम अब्दुल्ला था और दादा का अब्दुल मुत्तलिब। आपकी माता का नाम श्रीमती आमिना था। आपका वंश कुरैश था जो उस समय अरब के प्रमुख वंशों में माना आता था। जिन दिनों अरब में हज़रत मुहम्मद ने अपने नये मत का प्रचार किया उन दिनों भारतवर्ष में सम्राट् हर्षवर्धन तथा महाराज पुलकेशी का राज्य था।

हज़रत मुहम्मद का आरम्भिक जीवन कठिनाइयों में बीता। उनके पिता

१. मोहम्मद अली (रिलीजन ऑफ इस्लाम)

२. वही

३. पैंग्विन बुक्स लिमिटिड, इग्लैंड द्वारा प्रकाशित 'इसलाम' (पृ० २३) और 'दि कोरान' (पृ० ६) में हज़रत मुहम्मद का जन्म सन् लगभग ५७० दिया गया है। जैको पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई द्वारा प्रकाशित 'ग्लिम्पसिस ऑव वोर्ल्ड रिलीजन्स' (पृ० १९५) में हज़रत मुहम्मद की जन्मतिथि २० एप्रिल, ५७१ ई० लिखी हुई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का देहान्त उनके जन्म से पूर्व ही हो गया था। जब वे छः वर्ष के थे तब उनकी माता का भी देहान्त हो गया। इसलिए उनके पालन-पोषण का भार उनके दादा पर पड़ा और दादा की मृत्यु के पश्चात् उनके चाचा अबुतालिब पर। चाचा के पास रहकर बालक मुहम्मद ने वाणिज्य की शिक्षा प्राप्त की और कुशल व्यापारी बन गया। खदीजा नामक एक अमीर विधवा ने उसे अपना मुनीम बना लिया और बाद में उससे विवाह कर लिया। उस समय मुहम्मद की आयु २५ वर्ष की थी और खदीजा की ४० वर्ष थी। व्यापारिक जीवन के साथ-साथ ही मुहम्मद भक्ति-भाव में अनुरक्त थे। व्यापार के लिए विभिन्न देशों में घूमने से उन्हें तत्कालीन राजनैतिक और धार्मिक स्थितियों का भी पूर्ण परिचय प्राप्त हो गया। उन्होंने नये धर्म की स्थापना का निश्चय कर लिया। हिरा पर्वत की गुफा में उन्हें इसलाम होना आरम्भ हुआ। मक्का में जब उनकी बातों का विरोध हुआ, तब वे अपने साथियों समेत भाग कर मदीना चले गये। बाद में उन्होंने मक्का को जीत लिया। ६३२ ई० में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के समय मक्का और मदीना में उनके मत का प्रचार हो चुका था।

इस्लाम के मूल ग्रन्थ दो हैं—'कुरआन' और 'अल-हदीस'।

कुरआन शरीफ

'कुरआन शरीफ़' जिसे सम्मानार्थ 'कुरआन करीम' और 'कुरआन मजीद' भी कहा जाता है, इसलाम की सबसे अधिक मान्य और पवित्र पुस्तक समझी जाती है। मुसलमान इसे इलहामी ग्रन्थ मानते हैं जिसमें, मुसलिम परम्परा के अनुसार, मुहम्मद साहब के पास ईश्वर द्वारा भेजे गये सन्देश और उपदेश संकलित हैं। मुसलमानों का विश्वास है कि इस्लाम का प्रवर्तन हजरत मुहम्मद ने सोच-विचार कर नहीं किया था, बल्कि इसका उन्हें इलहाम हुआ था। वे उम्मी (अनपढ़ और अशिक्षित) थे। उन्होंने कुरआन में स्वयं अपने को उम्मी कहा है।[1] परन्तु यूरोपीय विद्वान् इस बात से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार

---

१. सूरत ७ (अल-आराफ़) आयत १५७-१५८; सूरत २९ (अल-अनकबूत), आयत ४८।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हज़रत मुहम्मद एक कुशल राजनीतिज्ञ और सुशिक्षित व्यापारी थे। उन्होंने केवल नम्रता दिखाने के लिए अपने आपको उम्मी अर्थात् अशिक्षित कहा है। उनका अपने आपको अशिक्षित कहना सम्भवतः वैसा ही है जैसा महाकवि तुलसीदास का अपने आपको "कवि न होउँ नहिं बचनप्रबीनू, सकल कला सब विद्याहीनू" तथा "कवि न होउँ नहिं चतुर कहाउँ" आदि कहना।

'कुरआन' में संकलित सूरतों, आयतों और अक्षरों की संख्या के विषय में मुस्लिम विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। 'तारीखुल कुरआन'[1] के अनुसार कुरआन में संकलित सूरतों की कुल संख्या एक सौ चौदह है। कुल आयतें छः हज़ार हैं, कल्यात ७७९३४ हैं और अक्षर ३२३०१५ हैं। इन सबको तीस पाटों में विभक्त किया गया है। 'सवातिउल कुरआन'[2] में हमाम सैयद हमीद ने आयतों की कुल संख्या ६६६६० (छः हज़ार छः सौ छयासठ) बताई है। उनके अनुसार कल्मात की संख्या ८६४३० है और अक्षरों (हरूफ) की संख्या ३९४०३३ है। 'तफ़सीर हक्कानी'[3] में मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल हक ने सम्पूर्ण कुरआन में सूरतें ११४ और आयतें जमहूर के अनुसार ६६६६, कूफ़ा के अनुसार ६२३६ और मदीना वालों के अनुसार ६२१४ कही हैं। अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने अपनी पुस्तक 'तफ़सीर इत्तिकान'[4] में कुरआन की सूरतों, रवायतों, वाक्यों और अक्षरों पर विस्तार से प्रकाश डाला है और पुरानी रवायतों से उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। तदनुसार अबू शैख की रवायत के अनुसार कुल सूरतें ११३ हैं, क्योंकि वह अल-अनफ़ाल और अल-बराअत दोनों को एक ही सूरत मानता था; इब्ने मंसऊद के कुरआन में ११२ सूरतें हैं, क्योंकि वह मऊज़तैन (वर्तमान कुरआन की अन्तिम दो सूरतों) को कुरआन में लिखना उचित नहीं समझता था; उबय्य के कुरआन में ११५ सूरतें हैं, क्योंकि उसने अन्त में अलहकर और अल-खला नामक दो सूरतें और बढ़ाई हैं और अल-फ़ील तथा अल-लईलाफे नामक दो सूरतों को एक ही गिना है; ज़फ़र सादिक ने वज्जुहा और अलम नशरह को एक ही सूरत गिना है। इस सम्बन्ध में अल-बराअत का जिसे अत्-तौबा भी कहा जाता है, विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। सम्पूर्ण

१. तारीखुल कुरआन, पृ० ४७
२. सवातिउल कुरआन, पृ० ३५-३६
३. तफ़सीर हक्कानी, प्रकरण, १९, पृ० १५१
४. तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १९, पृ० १७४-१७७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुरआन में अकेली यह एक ऐसी सूरत है जिसके आरम्भ में 'बिस्मिल्लाह' इत्यादि नहीं लिखा गया, अन्य सभी सूरतों का आरम्भ 'बिस्मिल्लाह' से होता है। विवेचकों के मन में सन्देह होता है कि कहीं यह सूरत प्रक्षिप्त तो नहीं है। स्वयं मुस्लिम विवेचकों में भी आरम्भ से ही इसकी चर्चा रही है। अबू शैख की रवायत के अनुसार अल-अनफ़ाल और अल-बराअत दोनों एक ही सूरत है, इस लिए अल-बराअत के आरम्भ में 'बिस्मिल्लाह' को अलग से फिर लिखने की आवश्यकता नहीं थी। इब्ने अब्बास के पूछने पर हज़रत अली ने उत्तर दिया था कि वह अमान और बराअत है जो तलवार के साथ उतरी थी। अल्लामा सियूती ने मालिक की रवायत के आधार पर लिखा है कि इस सूरत (बरआत) का आरम्भिक भाग नष्ट हो गया जिससे उसके साथ ही 'बिस्मिल्लाह' भी जाता रहा।

अल्लामा सियूती ने अपनी पुस्तक 'तफ़सीर इत्तिकान,[1] में बकर, आले इमरान, अन्निसा, अलमारादा, अनआम, अनफ़ाल आदि सूरतों में आयतों की संख्या के सम्बन्ध में पाये जाने वाले मतभेद का विस्तार से वर्णन किया है। जैसे—सूरत बकर में कुछ लेखकों ने २८५ आयतें मानी हैं, कुछ ने २८६ और कुछ ने २८७; आले इमरान में कुछ ने २०० आयतें कहीं हैं और कुछ ने १९९; अन्निसा में कुछ ने १७५ आयतें कही हैं, कुछ ने १७६ और कुछ ने १७७; अलमाएदा में कुछ ने १२० आयतें कही हैं, कुछ ने १२२ और कुछ ने १२३; अनफ़ाल में कुछ ने ७० आयतें कही हैं, किसी ने ७५, किसी ने ७६ और किसी ने ७७ आदि। श्री देवप्रकाश का अपनी पुस्तक 'कुरआन परिचय' में कहना है कि आयतों का संख्या सम्बन्धी यह मतभेद प्रत्येक सूरत में है। मुहम्मद अजमल खां ने अपनी पुस्तक 'तरतीब नजूल कुरआन करीम' में विभिन्न सम्पादकों द्वारा सम्पादित तथा अनुवादित कुरआन की तालिका दी है और उसमें विभिन्न सम्पादकों द्वारा दी गई आयतों की संख्या में अन्तर दिखाया गया है। पं० सत्यदेव जी ने भी अपनी पुस्तक 'कुरआन में परिवर्तन' के पृष्ठ ३८-३९ तथा पृष्ठ ३४ पर आयतों और अक्षरों की विभिन्न संख्याएं दी हैं जो निम्नलिखित हैं :—

---

१. तफ़सीर इत्तिकान, प्रकरण १९, पृ० १८२-१८४.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयत-संख्या

(१)	दुआए मुतबर्रक, कसीद, तुलकिराअत, उम्द, तुलब्यान, फ़ी तफ़सीरिल्कुरान और रमूजुल्कुरान आदि के मतानुसार आयत संख्या	६६६६
(२)	इत्तेकान की उलुमिल्कुरान ,, ,, ,,	६२१४
(३)	मदनियों ,, ,, ,,	६२१४
(४)	मक्कीयों ,, ,, ,,	६२१२
(५)	शामियों ,, ,, ,,	६२५०
(६)	बसरियों ,, ,, ,,	६२१६
(७)	ईराकियों ,, ,, ,,	६२१४
(८)	कूफ़ियों ,, ,, ,,	६२३६
(९)	अब्दुल्ला इब्ने मसऊद ,, ,, ,,	६२१८
(१०)	इब्ने अब्बास ,, ,, ,,	६६१६
(११)	अबूमन्सूर दब्बान ,, ,, ,,	६०००
(१२)	मुहम्मद याकूब कुलेनी ,, ,, ,,	१७०००

इसी प्रकार कुछ अन्य सम्पादकों ने कुरआन की आयतों की संख्या ६२०४, ६२१९ और ६२२५ भी बताई है।

अक्षर संख्या

(१)	इब्ने अब्बास के मतानुसार अक्षर-संख्या	३२३६७१	(सियूती)
(२)	उमर इब्ने खत्ताब के मतानुसार अक्षर-संख्या	१०२७०००	(सियूती)
(३)	अब्दुल्ला इब्ने मसऊद के मतानुसार ,,	३२२६७१	(सियूती)
(४)	मुजाहिद ,, ,, ,,	३२११२१	सिराजुल-कारी
(५)	अब्दुल्ला इब्ने मसऊद ,, ,, ,,	३२२६७०	उम्द : तुलबयान
(६)	कसीद : तुलकिराअत ,, ,, ,,	३०२६७०	

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

MEHARAULI IRON PILLAR INSCRIPTION OF CHANDRA

By Prof. Sadhu Ram, M.A.

INTRODUCTION

This tapering pillar with the inscription stands within the ancient fort of Pṛthivī Rāja near the village Meharaulī about nine miles south of Delhi. The inscription is composed in Sanskrit verse and the script belongs to the northern class of Brāhmī. It eulogizes the military achievements of a powerful king named Chandra, who was a devotee of Viṣṇu and erected a *dhvaja* of Viṣṇu in the form of this iron pillar on a hill called Viṣṇupada. There is no information about the lineage of the king, nor is the date of the erection of the pillar recorded. The column is not in its original position, and was perhaps brought at the present site by King Anaṅgapāla.

१. यस्योद्वर्त्तयतः प्रतीपमुरसा शत्रून्त्समेत्यागता-
न्वङ्गेष्वाहव-वर्त्तिनो [ऽ] भिलिखिता खड्गेन कीर्त्तिर्भुजे।

२. तीर्त्वा सप्त मुखानि येन समरे सिन्धोर्ज्जिता वाह्लिका
यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधिर्व्वीर्य्यानिलैर्द्दक्षिणः ॥ [१]

३. खिन्नस्येव विसृज्य गां नरपतेर्ग्गामाश्रितस्येतरां
मूर्त्या कर्म्म-जितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ।

४. शान्तस्येव महावने हुतभुजो यस्य प्रतापो महा-
न्नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशित-रिपोर्य्यत्नस्य शेषः क्षितिम् ॥ [२]

५. प्राप्तेन स्व-भुजार्ज्जितञ्च सुचिरञ्चैकाधिराज्यं क्षितौ
चन्द्राह्वेन समग्र-चन्द्र-सदृशीं वक्त्र-श्रियं बिभ्रता।

६. तेनायं प्रणिधाय भूमि-पतिना भावेन विष्णो(ष्णौ) मतिं
प्रान्शुर्व्विष्णुपदे गिरौ भगवतो विष्णोर्ध्वजः स्थापितः ॥ [३]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

TRANSLATION

V. 1. He, on whose arm glory was inscribed by the sword when, while engaged in battle in the Vaṅga country, he pushed back and put to rout with his chest (*i.e.*, manfully) the foes who had come against him in a league;—he, by whom, after crossing the seven mouths (*i.e.*, tributaries) of the Sindhu, the Vāhlikas were conquered in a battle;—he, by the breezes of whose valour even now the southern ocean is being made fragrant;—

V. 2. He, whose great prowess, reminiscent of that energy which destroyed the enemies, does not leave the earth even now, like the great glory of a monarch who, as if wearied, having quitted the earth, has bodily gone to the other world, the land won by his (good) actions, but stays on this earth by his fame; or like the great heat of a burnt-out fire in a great forest which does not leave the earth.

V. 3. By him, the lord of the earth,—who attained sole paramountcy in the world, won by his own arm, and (enjoyed) for a very long time; and who, having the name of Chandra, wears the beauty of countenance like that of the full moon,—having in faith fixed his mind on Viṣṇu, this lofty standard of the divine Viṣṇu was set up on the Viṣṇupada hill.

NOTES

1. उद्वर्त्तयतः प्रतीपमुरसा (line 1)—*Pratīpam udvartayataḥ*, 'driving away backwards' *i.e.*, putting to rout. *Urasā*, 'with his chest' *i.e.*, manfully or gallantly.

2. शत्रून्त्समेत्यागतान् (line 1)—It seems that when Chandra was engaged in wars in the west and north-west, the frontier kings in the east rebelled and having formed an alliance, they marched against Chandra with their combined forces. Chandra had to fight hard to quell that rebellion.

3 तीर्त्वा सप्त मुखानि (line 2)—*Mukha* here does not mean the 'outfall of a river', but signifies 'source or tributary'. This would suggest that Chandra had to fight his way through all the seven rivers which he crossed in order to destroy the foreigners root and branch in their own home in Bactria.

4. खिन्नस्येव...क्षितौ (line 3)—A wrong translation of this line had led Fleet to consider the inscription as posthumous. Instead of taking it as a simile, Fleet thought that king Chandra

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

MEHARAULI IRON PILLAR INSCRIPTION OF CHANDRA

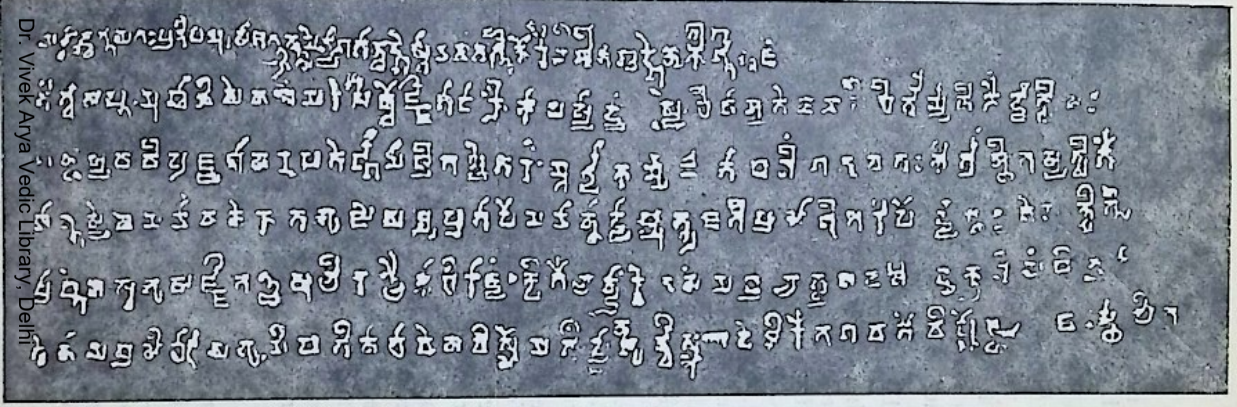

By Courtesy of Archaeological Survey of India

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

himself, as if wearied, had quitted the earth and gone to the other world.

5. चन्द्राह्वेन (line 5)—This abbreviated form of the name has given rise to a keen controversy over the identification of Chandra.

6. भावेन (line 6)—Earlier, the word was read as *dhāvena*, and Dhāva was considered to be the name of the king. Some defect in the incision of the letter *bha* has made it look like *dha*.

IDENTIFICATION OF KING CHANDRA

Chandra, not being the full name of the monarch, has given rise to a great controversy, and different scholars have identified him with different monarchs. "It seems better to acknowledge the impossibility of identifying the ruler named Chandra," says Otto Stein[1], "on account of the lack of sources... than to force it into Procruste's bed of an identity with a brother of Mihirakula, Chandragupta I, Chandragupta II, Chandravarman, apart from Chandragupta Maurya—attempts which show already the uncertainty." But there is no need for despair. Any king who satisfies the following conditions mentioned in the inscription satisfactorily, may reasonably be considered to be identical with the Chandra of the inscription. Those conditions are :

1. He should have manifested his valour by defeating the combined forces of the enemies in Vaṅga country (S.E. Bengal).
2. He should have defeated the Vāhlikas after crossing the seven tributaries of Sindhu (Indus).
3. The memory of his prowess should be fresh in the minds of the people up to the southern ocean.
4. He should have enjoyed for a long time the sole sovereignty of the earth, earned by his own arm.
5. He should have been a devotee of Viṣṇu and erected this standard on the Viṣṇupada hill.

DIFFERENT VIEWS

1. **Chandragupta I** : It was first suggested by Fleet that the inscription may belong to him (*i.e.*, Chandragupta I)[2]. This

1. *New Indian Antiquary*, I, 1938, p. 188.
2. *Corpus Inscriptionum Indicarum*, III, Intro. 12; *Indian Antiquany*, XLVIII, 101,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

theory was fully supported by R.G. Basak and S.K. Aiyengar[3]. There is no doubt that Chandragupta I founded the Gupta empire and thus may be said to have acquired sovereign power by the prowess of his own arm, but according to the testimony of the Purāṇas, his dominion was restricted to Prayāga, Sāketa and Magadha as inferred by Allan from the following verse :

अनुगङ्गं प्रयागं च साकेतं मगधांस्तथा ।
एतान् जनपदान् सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्त-वंशजाः ।।

This is also supported by the paucity of his coins and the absence of his inscriptions. Moreover, he did not enjoy a long reign, while Chandra enjoyed the undisputed sovereignty of the earth for a long time. He did not conquer Bengal which, otherwise, would not have figured into the Allahabad *praśasti* of Samudragupta. He could not have come into clash with the Vāhlikas; for, had he attempted to lead an expedition towards the Indus, he would have met with great resistance from the formidable Nāgas of Mathurā and Padmāvatī, Achyutanandī, and Matila as well as from the warlike tribes of Yaudheyas, Mālavas, Ārjunāyanas, Madrakas, etc. He could neither have marched successfully across the seven tributaries of the Indus, nor had the resources and time at his disposal for such an ambitious campaign of conquest. According to the Allahabad *praśasti*, the credit of bringing the south under the sway of a northern king goes to Samudragupta for the first time after the Mauryas. Had Chandragupta subjugated the south, and had the kings of the south rebelled against Samudragupta, the latter would not have pardoned and reinstated them, but like the kings of Āryāvarta, he would have completely annihilated them and annexed their dominions. About the faith of Chandragupta I in Vaiṣṇavism, there is no evidence to corroborate it. He can, therefore, hardly be identified with the Chandra of the Mehraulī inscription.

2. **Chandravarman of Susunia Inscription :** Haraprasād Śāstrī took him as Chandravarman, ruler of Puṣkaraṇa, son of Siṁhavarman, known from the Susūniā rock inscription in Bengal. He took Puṣkaraṇa as a place of the same name in Jodhpur State, and identified Siṁhavarman with Siṁhavarman, father of Naravarman, mentioned in the Mandasor inscription of Naravarman dated in A.D. 404. According to Śāstrī, this Chandra

3. *Hist. of N.-E. India,* 1934, 13-18, and *Studies in Gupta History.*

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

with the family title of *varman* had dedicated a wheel (*Chakra*) to Viṣṇu at Susūniā in Bengal.[4] The plausibility of the identity was based on the similarity of names and the fact that both the Meharaulī and Susūniā records are Vaiṣṇava. But this identity has been set at naught firstly because the identification of the Susūniā Siṁhavarman with the Siṁhavarman of Mandasor inscription is conjectural. Secondly, Puṣkaraṇa of Susūniā hill has been identified by Dikshit with Pokharaṇa on the Dāmodarā, 25 miles north-east of Susūniā. Moreover, how could the ruler of a small kingdom in Rājpūtānā dare go and conquer Bengal hundreds of miles away without successfully overcoming the opposition of such powerful kingdoms as those of the Yaudheyas, Nāgas and the Guptas which lay on his way ? And the absence of the mention of his name and heroic exploits in the family records of the Varmans is surprising and throws doubt on the identification,[5] Hence, the theory of H.P. Śāstrī is untenable.

3. **Chandragupta Maurya :** Some scholars identify Chandra with Chandragupta Maurya. According to them, the Mauryan emperor satisfies all the conditions of the Meharaulī pillar inscription. His empire included the land of five rivers and definitely extended to Afghānistān in the north. He defeated Seleukos and won from him Archosia (Kandahār), Paropanisadae (Kābul) and portions of Aria (Herāt). He also conquered Gedrosia (Baluchistān). He, therefore, can be said to have crossed the seven mouths (*i.e.*, tributaries) of Indus and defeated the Vāhlikas (people of Bactria). Chandragupta also extended his empire to the south beyond the Vindhyas as is evidenced by the edicts of Aśoka in that region. In the Girnār inscription of Rudradāman, Surāṣṭra is described as a province of Chandragupta's empire, which thus extended from the western to the eastern ocean.

The overthrow of the Nandas must have given rise to trouble in the east and Chandragupta might have had to repulse the combined forces of the rebellious princes in Vaṅga country. His son Bindusāra is mentioned in the Tibetan accounts as ruling over Gauḍa for 37 years. Chandragupta is addressed as mere Chandra in *Mudrārākṣasa* of Viśākhadatta.

---

4. *Ep. Ind.*, XIV. 367. See also XII, 315; XIII, 133;
5. *Indian Historical Quarterly*, XXI, 1945, pp. 202 ff.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

In spite of all this, the identification cannot stand. In the first place, epigraphical evidence is against it. The characters of Meharaulī pillar belong to the 4th or 5th century A.D. Secondly, Chandragupta Maurya was not a Vaiṣṇava. He believed in the Jaina faith, and, according to a Jaina tradition, in old age he abdicated and followed a Jaina saint Bhadrabāhu as his teacher, and travelled with him towards the south and settled down at Śravaṇa Belgola. There is a small hill Chandragiri, going by his name, because he lived and performed his penance there.[6]

4. **Kaniṣka** : According to Dr. R.C. Majumdar[7], the *Meharaulī* Chandra was Kaniṣka I. A Khotanese manuscript mentions a legend of Chaṇḍa Kaniṣka Nauma in which the incidents and the descriptions point to Kaniṣka I. Majumdar argues that the Kuṣāṇas were the only ruling family in India in whose empire the Vāhlika or Bactria was included, and Chaṇḍa Kaniṣka ruled over it. Although there is no definite information about Kaniṣka's conquest of Vaṅga, but it is not ruled out, says Majumdar, since Sārnāth Buddhist image inscription of his third regnal year gives evidence of his rule at Banāras.[8] Moreover, tradition says that he defeated the king of Magadha and carried away Aśvaghoṣa. Again, Kuṣāṇa coins have been found from Bengal, Orissa, and gold coins of Kaniṣka from Tāmluk and Mahāsthānagarh (ancient sites of Tāmralipti and Puṇḍravardhana respectively).

This view also does not appear to be correct; for, there is much difference between mere conquest and established rule. The Meharaulī inscription does not speak of Chandra's rule over the Vāhlika country. It merely states that he conquered the people of Vāhlika. Kaniṣka, on the other hand, started as a ruler of Bactria and set out to conquer India. The earliest inscription of his first regnal year is on the Peshāwar Relic Casket and of the third year on a Sārnāth image. This shows that Kaniṣka entered India *via* Peshāwar and presumably from Central Asia. Nine out of his twelve inscriptions come from the north-west, and most of them are in the Kharoṣṭhī script. According to the Buddhist tradition, Gandhāra or North-Western Frontier remained the principal scene of Kaniṣka's

---

6. R.K. Mookerji, *Chandragupta Maurya and His Times*, pp. 39. 40.
7. *Journal of Royal Asiatic Society of Bengal*, 1943, pp. 179 ff.
8. Against this see *Ep. Ind.* VIII. 171-179.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

activities, while Chandra ruled over the country between the Indus and Bengal, and his wars were frontier wars. Chandra crossed the tributaries of Indus only to conquer Vāhlikas, while Kaniṣka came from outside into India.[9] Another important fact that deserves notice is that Chandra was a Vaiṣṇava, whereas Kaniṣka was converted to Buddhism and remained a staunch Buddhist throughout his life. All his inscriptions are Buddhist and none Hindu or Vaiṣṇava. Palaeographically also, there is a wide gulf between the Kuṣāṇa and Meharaulī pillar characters. The latter belong to the first half of the 5th century. Further, there is nothing to show that Kaniṣka had any connection with the south.[10] This view therefore is not tenable.

5. **Naga Kings Sadachandra and Chandramsa** : Raychoudhuri believes that Chandra was one of the two Nāga kings, Sadāchandra and Chandrāṁśa, presumably the latter who was obviously a ruler of note. The Bāhlikas, according to him, were the Baktrioi occupying the country near Archosia in the times of the Geographer Ptolemy.[11] This identification, too, is not possible. Sadāchandra must have been ruling in East Mālava in times of Samudragupta or his father Chandragupta I. He could not reach Bengal without crossing Magadha. The Purāṇas are silent about the heroic exploits of Sadāchandra. How could the Nāgas have acquired sole sovereignty (*aikādhirājya*), when Samudragupta had overthrown them in his northern campaign ? The same arguments refute the theory of Chandra's identification with Chandrāṁśa.

6. **Chandragupta II of the Imperial Guptas** : Formerly, it was believed that Chandragupta had a peaceful succession to an already consolidated empire and that except for an expedition against the Śakas in Central and Western India, his reign was also peaceful and free from wars. But the discovery of a fragmentary drama *Devī-chandragupta* by Viśākhadatta, the author of *Mudrārākṣasa*, has revealed the existence of Chandragupta's elder brother Rāmagupta who was the immediate successor of Samudragupta.[12] Rāmagupta's defeat and his abject and unmanly behaviour in purchasing peace by agreeing to

9. *IHQ*, XXI, 202 ff.

10. *Ibid.*

11. *Pol. Hist. of Anc. India*, 6th ed., p. 555, fn. 1; *IA*, 1884, p. 408.

12. *Journal of Bihar and Orissa Research Society*, XIV, pp. 223-53; *Mālavīya Com. Vol.*, 189-211; *IA*, 1933, pp. 201 ff.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

surrender his queen to a Śaka invader, called for the display of Chandragupta's valour, who, throwing all thoughts of personal safety to the winds, came to the fore and attacked and killed the *Śaka-pati* (or *Khasa-pati*) with a handful of his followers. Could the title of *Sāhasāṅka* be more deserved or more dearly earned ? Then it required a palace revolution also to acquire the throne which he could rightly claim to have gained by the prowess of his own arms. His undated Udayagiri inscription clearly states that he had gone there on a campaign of 'the conquest of the whole earth' (*kṛtsna-pṛthvī-jayārtthena*) like his illustrious father Samudragupta who had himself acquired glory by subduing the whole earth (*sarvva-pṛthivī-vijaya-janitodaya*). Numismatic evidence corroborates this scanty statement of the inscription by indisputably showing that Chandragupta II conquered the territories of Mālava, and the Śaka Satraps of Saurāṣṭra and Gujarāta during this expedition.[13] Large hoards of Gupta coins found in the Satārā district are indicative of not merely commercial intercourse. The association of Kuntala with the Guptas does not begin with Kumāragupta I, it goes back to Chandragupta II. Gupta rulers of Banavāsī trace their origin to Chandragupta Vikramāditya. The mention of *Gupta-pārtthiva-kāla* in the Tālaguṇḍa inscription, the Satārā hoard of coins and "the records of the Rāṣṭrakūṭas and the Gupta rulers of Banavāsī leave no room for doubt about Chandragupta's association with the south, so much so that the kings of the south make it a point to compare their own achievements with those of the great Gupta monarch.[14]"

When Chandragupta was engaged in wars with the Western Kṣatrapas as revealed by his Udayagiri inscription, the neighbouring kings of Samataṭa, Ḍavāka, etc., on the east must have rebelled and tried to fish in troubled waters. That would have forced him to wage a war against the combined forces in Bengal. He succeeded in repulsing them and annexing their territories up to Puṇḍravardhana which we find completely integrated in the Gupta kingdom in the time of Kumāragupta I, as known from the Dāmodarapura plates.

Chandragupta's Mathurā inscription shows that he was the first Gupta king who wrested Mathurā from the Kuṣāṇas, which

13. *IHQ*, XXI pp. 202 ff.
14. *ibid.*, 211.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

was the last outpost and stronghold of the Kuṣāṇas, In order to finish the Kuṣāṇa rule in India, it would have been necessary for him to cross the seven tributaries (*mukhas*) of the Indus and lead an expedition to Vāhlika (Bactria) and destroy the enemy in his breeding ground.

According to S.V. Sohoni, Chandragupta's conquest of Vāhlika is corroborated by his *chakra-vikrama* coin found in the Bayānā Hoard. On the obverse of this coin, Chandragupta is represented as receiving three balls from the God Viṣṇu, symbolising the three powers (*mantra, utsāha*, and *daṇḍa śaktis*) essential for universal sovereignty. On its reverse is the figure of Jaya-Lakṣmī standing on a lotus, pointing with the forefinger of her right hand to some object above. It has also been suggested that this coin-type was a medal for commemorating an event which must have been of supreme importance in the life of the emperor. Shri Sohoni ventures to think that the conquest of Saurāṣṭra, important in itself, was not the occasion for the issue of this type, as supposed by Dr. V.S. Agrawāla.[15] He thinks that the coin is confirmation of the conclusion recorded in the iron pillar inscription concerning the very king, in which it is clearly stated that after crossing seven mouths of the Sindhu, he had conquered the Vāhlikas. This again, according to Sohni, is confirmed by the dress of the king which is a type of foreign or Sassanian costume, particularly the pair of trousers. The palmette crowns worn by Viṣṇu and the king are similar to the distinguishing palmette crowns of Pheroz I or Hormaz Kushān Shāh II. Even the stance of Chandragupta is akin to the standard posture seen on early Kuṣāṇa coins, where a king is shown offering oblations on a fire-altar.[16]

Another account of the conquest of Vāhlika is given in the *Kaliyuga-rāja-vṛttānta* section of the *Bhaviṣyottara Purāṇa* which identifies the Imperial Guptas with the Āndhra-bhṛtyas and calls them Śrīpārvatīyas :

तेषां (=आन्ध्राणां) तु संस्थिते राज्ये भूमिर्गुप्तान् गमिष्यति ।
श्रीपार्वतीयान्ध्रभृत्या इत्याख्यां यान्ति ये नृपाः ॥[17]

And about Chandragupta II, the Purāṇa says ;

15. *Jour. of Numismatic Soc. of India*, XVI, pp. 97-101.
16. *Jour. Bihar Res. Soc.*, XLII pp. 400-401.
17. *Ibid.*, XXXI, pp. 222-223.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विक्रमादित्य इत्येव भुवनेषु प्रथां गतः ।
सप्त-सिन्धून् समुत्तीर्य वाह्लिकादीन् विजित्य च ॥
सुराष्ट्रदेश-पर्यन्तं कीर्त्ति-स्तम्भं समुच्छ्रयन् ।
षट्-त्रिंशद् भोक्ष्यति समास्त्वेकच्छत्रां वसुन्धराम् ॥

As D.R. Mankad has shown it to be a forged document,[18] it is of no value as historical evidence.

Chandragupta's epithet, *Parama-bhāgavata* occurs in some of his own records, but later on it is mentioned in all family epigraphs. He was so staunch a follower of Viṣṇu that under his influence not only the later members of his family but even his son-in-law, Rudrasena II, forsook his ancestral faith of Śaivism and became a Vaiṣṇava.

As regards the name Chandra, it actually occurs on some of his coins as an abbreviated form of his full name. This practice was also followed by other Gupta monarchs like Samudragupta, Skandagupta, Purugupta and Viṣṇugupta whose coin-legends bear their names without the termination *-gupta*. Want of space is no reason for this kind of abbreviation; for, in several cases, the die-cutters have inserted complete verses on his coins. Some of the metrical legends on the Gupta coins even express a similar idea as expressed in the third line of the Meharaulī inscription,[19] which runs as :

खिन्नस्येव विसृज्य गां नरपतेर्गामाश्रितस्येतरां ।
मूर्त्या कर्मजितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ ॥

Compare with it :

(a) काचो गामवजित्य दिवं कर्मभिरुत्तमैर्जयति ।
(b) क्षितिमवजित्य सुचरितैर्दिवं जयति विक्रमादित्यः ।
(c) गामवजित्य सुचरितैः कुमारगुप्तो दिवं जयति ।

Lastly, the script, too, belongs to the same period as that of Chandragupta II. Though in many respects the palaeography of the Meharaulī inscription is similar to that of the Allahabad *praśasti* of Samudragupta, yet with marked *mātrās* and vertical top-strokes, the letters resemble more closely to the Bilsaḍ inscription of Kumāragupta I. Hence-Chandra is *Surely* CG. II.

---

18. *Ibid.*, XXXII, pts. 3-4, pp. 319 ff.
19. *Journal of Punjab Historical Society*, IX, p. 83.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

IDENTIFICATION OF VIṢṆUPADA-GIRI

Dr. Fleet was not sure whether the column was in its original position or was removed from its original site, nor could he say whether the site "should be identified with that part of the Delhi ridge on which the column stands".[20] Smith supposed that Viṣṇupada must be located somewhere in Mathurā without quoting any authority for his supposition. His is nothing but a conjecture.

References to Viṣṇupada, however, are found in the Purāṇas and the epics. From a verse in the *Mahābhārata*, occurring in the description of the *tīrthas*, Viṣṇupada appears to be located somewhere in the north.[21] But so far its location has not been definitely decided. From the following verse of the *Rāmāyaṇa*, different scholars have drawn different conclusions :

ययुर् मध्येन वाह्लीकान् सुदामानं च पर्वतम् ।
विष्णोः पदं प्रेक्षमाणा विपाशं चापि शाल्मलीम् ।। (२.६८.१८)

Messengers from Ayodhyā were sent to Kekaya country to fetch Bharata. They had to take a north-westerly route. Now, "Vāhlīka or rather Vāhīka with which it is often confounded," says Chintaharan Chakravarty, "was between the Beās and Sutlej".[22] According to him, it is not impossible that the Sudāman hill refers to the Sewālik range, and that Vāhlīka country was not always confined within the narrow limits, but spread as far east as to include the Sewālik range. He finds support from the commentator Tilaka who locates Vāhlīka on the river Ikṣumatī which passes through Kumāon. Tilaka further says that Viṣṇupada was on the Sudāman hill, *i.e.*, somewhere on the Sewālik hill. From another verse of the *Mahābhārata*,[23] Chakravarty concludes that Viṣṇupada was situated on the north of the confluence of the Kauśikī (*mod.*, Kosī) and Dṛṣadvatī (*mod.*, Chitāng), somewhere near the Kailāsa range and not far from Gaṅgādvāra

---

20. *Corpus Inscriptionum Indicarum*, III. p. 140.

21. अत्र विष्णुपदं नाम क्रमता विष्णुना कृतम् ।
त्रि-लोक-विक्रमे ब्रह्मन् उत्तरं दिशम् आश्रितम् ।। (५.३.२१)

22. *Annals of Bhandarkar Oriental Research Institute*, 1926-27, pp. 172-76; quoted from Nandoo Lal Dey's Dictionary, p. 15.

23. ततो वामनकं गच्छेत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
तत्र विष्णुपदे स्नात्वा अर्चयित्वा च वामनम् ।
सर्व-पाप-विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ।। (३.८३.१०३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

or Haradvāra, which again is at the base of the Sewālik range. Thus, in the opinion of Chakravarty, Haradvāra is the probable location of Viṣṇupada, according both to the *Rāmāyaṇa* and *Mahābhārata*. There the footmark of Viṣṇu imprinted on a stone is let into the upper wall of the *Ghāṭ* and forms an object of special reverence. Whether this particular spot be the celebrated Viṣṇupada or not, it cannot be doubted that Viṣṇupada must have been at least somewhere in the vicinity.[24]

Jayaswal also held that, "It was probably in the Himālayas near or above Hardwār which is reputed as Viṣṇupadī".[25] This general view of the scholars is based on the argument that because Gaṅgā is said to flow from Viṣṇu's feet, Viṣṇupada may be somewhere near about. The verse of the *Rāmāyaṇa* quoted above also points to the same direction. It places Viṣṇupada in Vāhīka along with the mountain Sudāman, which latter also occurs in Arjuna's northern conquests, being mentioned as one of the three places midway between the southern and northern Ulūka (Kulūta). Jayaswal further opines that the battle between the Yuechi king and Chandragupta II was fought somewhere in the hills of the Jullundur Doāb. Jayachandra Vidyālaṅkāra endorses this view and suggests that the pillar of victory was raised on or above the site of the battle. According to him, there was no reason to erect it at Haradvāra. "The circumstances of the political geography of the period would point to a hill-fort commanding the ferry or ford of the Beās as the most likely scene of the battle."[26]

In the *Indian Culture*,[27] Jogendra Chandra Ghosh has criticised the views of Chintāharan Chakravarty, Jayaswal and Jaya Chandra Vidyālaṅkāra. He says that Mr. Chakravarty has missed the following important passage of the *Mahābhārata*:[28]

एतद् विष्णुपदं नाम दृश्यते तीर्थम् उत्तमम् ।
एषा रम्या विपाशा च नदी परम-पावनी ।।
अत्र वै पुत्र-शोकेन वसिष्ठो भगवान् ऋषिः ।
बद्ध्वात्मानं निपतितो विपाशः पुनर् उत्थितः ।।

---

24. *ABORI*, 1926-27, p. 174.
25. *JBORS*, XVIII, p. 31.
26. *JB&ORS*, XX, 1934, p. 98.
27. *Indian Culture*, 1, pp. 515-19.
28. *Vanaparvan*, Ch. 130, *vs.* 8-10.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काश्मीर-मण्डलं चैतत् सर्व-पुण्यम् अरिन्दम ।
महर्षिभिश् चाध्युषितं पश्येदं भ्रातृभिः सह ।।

which shows that not only Vipāśā, but also the Kāśmīra-maṇḍala was visible from Viṣṇupada, a fact which cannot be said about Gaṅgādvāra or Kumāūn About Jaya Chandra, Mr. Ghosh says that he has located Viṣṇupada in the Śiwālik or the Solāsiṅgī range near the river Beās on the basis of the passage of the *Rāmāyaṇa* quoted above, but has not acknowledged his debt to Mr. Chakravarty who was the first to point out that passsage. Moreover, Ghosh has also found fault in Jaya Chandra's reference to *Ṛgveda* about the Vipāśā.

According to Mr. Ghosh, "Viṣṇupada was on a hill on the Vipāśā, not far from Kāśmīra-maṇḍala...It appears that the Vipāśā had her source in the mountains of the Kāśmīra region in the time of the Aryans."[29] On emerging out of Kāśmīra into the country of the Sapta-sindhavaḥ (Panjab), it has formed a sharp bend on the border of Gurdāspur and Kāṅgrā districts. Viṣṇupada may be somewhere there.

Dasharatha Sharma, too, referring to the aforesaid verse of the *Rāmāyaṇa*, says, "The route followed by messengers travelling post-haste from Ayodhyā to Girivraja (*mod.* Jalālpur in Gujrānwālā district, Panjāb,) *via* Hastināpur, and Viṣṇupada is mentioned as having been reached before Vipāśā, it is clear that it lay to the south-east of the lowermost course, somewhere near Gurdāspur, as suggested by Dr. D. R. Bhandarkar and Mr. J. C. Ghosh.[30]" We see "that both the *Rāmāyaṇa* and the *Mahābhārata* put Viṣṇupada to the south-east of the Vipāśā. The *Rāmāyaṇa* puts it on the north-westerly route crossing the lowermost course of this river. The *Mahābhārata* puts it on the northerly route between Kurukṣetra and mountain Gandhamādana.[31] Viṣṇupada must therefore surely be at a point where these two routes intersect somewhere to the south-east of the river Beās. It is mentioned in the 66th chapter of the *Vanaparvan* also.[32] "Here it is a sacred place in the territory between the Sarasvatī and Dṛṣadvatī. If we combine this reference with the conclusion to its location reached

29. *Jopson's Historical Atlas of India,* No. 2.
30. *Indian Culture,* I, p. 515 ff.
31. Route from Kurukshetra to Gandhamādana as in *Mahābhārata.*
32. P. P. S. Sāstrī's Madras edition.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

just now, we must without the least possibility of doubt place it somewhere in the hills near Sāḍhaurā, a small town in the Ambala district.

"The territory adjoining Sāḍhaurā, *i.e.*, Kurukṣetra is known to have been once ruled by the Tomaras. So it was most probably from this very place that the iron pillar was removed to its present site, the original temple being perhaps destroyed by a raid of the Ghazanavites."[33]

But, a popular belief attributes the setting up of the pillar to Anaṅgapāla who founded Delhi in the first half of the 8th century, which was deserted before that time. Smith attaches no historical value to this tradition.[34] From a Hindī inscription on the same pillar, Smith concludes that it was Anaṅgapāla II, who founded Delhi in A. D. 1052-53, who erected the pillar.[35] But he ignores another inscription on the same pillar saying that Delhi was founded by Anaṅgapāla I in the Gupta era 419 (A. D. 738). But these later inscriptions merely record the tradition that Anaṅgapāla I and II established themselves in Delhi in the 8th and 11th centuries respectively.

"Under these circumstances," says Chintaharan Chakravarty," it would not be wrong to suppose that Sultān Fīrozshāh probably removed the pillar" from its original site as he did the Aśoka pillars.[36]

It will thus be seen that neither the original site of the pillar nor its remover therefrom has been definitely identified.

THE INSCRIPTION IS NOT POSTHUMOUS

Fleet's translation of the 2nd verse of the record would doubtless make it posthumous,

Fleet has missed the force and import of *iva* in the *khinnasyeva...narapateḥ*. Chandra's great prowess is compared to the glory of a monarch who has gone to the other worl dwon by his virtues, but stays on this earth by his fame, inasmuch as the prestige of both of them does not leave the earth even after the former had finished his *dig-vijaya*, and the latter had departed.

---

33. *Journal of Indian History*, XVI, pp. 13-18.
34. *Journal of Roy. Asia. Soc.*, London, 1897, 13 ff.
35. *See also Archl. Sur. Ind. Rep.*, I, p. 151.
36. *ABORI*, 1926-27, p. 176.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

The word *pratāpa* is syntactically connected with all the three things mentioned in the verse, *viz.*, *khinnasyeva narapateḥ*, *śāntasyeva huta-bhujaḥ* and *yasya*.

Moreover, the 3rd verse attributes the erection of the *dhvaja* to Chandra himself who must have been alive. Hence the inscription is not posthumous.

Note : The recent attempt of Dr. S.R. Goyal[37] to identify Chandra with Samudragupta on flimsy grounds has been ably refuted by Shri S.S. Rana.[38] The identity of Chandra with Chandragupta II of the Imperial Gupta Dynasty, however, has been finally settled and universally accepted. Our arguments above are conclusive in this respect.

37. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, 69, *Samvat* 2021, 261-81; *History of the Imperial Guptas*, pp. 201-209.

38. *Vishveshvaranand Indological Journal*, VI, 106-111.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" के आजीवन सदस्य श्री रामचन्द्र गुप्त का पिछले दिनों १४ दिसम्बर को देहान्त हो गया ! आप पंजाब नेशनल बैंक चावड़ी बाजार दिल्ली में कार्य करते थे।

आप राजधानी के कर्मठ आर्य व्यक्ति थे। रचनात्मक कार्यों में आप की विशेष रुचि थी। आप की मृत्यु से एक उदार व्यक्ति उठ गया। प्रभु आप के परिवार को कष्ट सहने की सामर्थ्य और दिवंगत को शांति प्रदान करें। 'जन-ज्ञान' स्वर्गीय को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग
करौल बाग नई दिल्ली-५

जनवरी १९७१
माघ संवत् २०२७

Regd. No D
1631

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi